

MAHARISHI TESHNANANAN G.K.V.

Digitized by Anja Samaj Foundation, Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

10742

1909
57

1852

KT 985

निज भाषा उन्नति अहै, मय उन्नति को भूल

सम्पादक

बाबू ब्रजनन्दन सहाय

वकील.



110742

उन्नतिमाहभाषायाः कृता दिनसहायना

नागरी हितैषिणी पत्रिका त्रैमासिक ।

१०२ मू.
१५-३-१९६६

१९०८ ई०

वर्ष ५--संख्या १, २, ३ और ४

विषय ।

- १ सम्पादकीय टिप्पणी ।
- २ विद्यापति ।
- ३ समालोचना ।
- ४ हिन्दो को वर्तमान दया ।

सदृशय समुच्चर्य सपत्तासि महाजनः ।

आरा नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सुल ॥—हरिचन्द्र ॥

सहजाह सुन्दर
कनकलता में अति

११२०४
३३५३ २-४१

पटना—“खड्गविलास” प्रेस बांकीपुर ।

बाबू चण्डीप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित ।

१८०८ ।

सम्पादकीय टिप्पणी ।

जगदाधार प्रमातमा की मैं असंख्य धन्यवाद देता हूँ, जिस की असीम कृपा से यह पत्रिका आज पाँचवें वर्ष में पदार्पण करती है। जिस समय यह पत्रिका प्रथम बार प्रकाशित हुई थी अपनी मातृभाषा की और देशवासियों को अरुचि देख कर मुझे यह आशा नहीं थी कि यह इतने दिनों तक जीवित रह कर सर्वदा उन्नति के शिखर पर चढ़ती जायगी। यह पत्रिका हिन्दीभाषा की कैसी सेवा कर रही है यह मुझे कहने की आवश्यकता नहीं। हिन्दीप्रेमी इस की शांति आप ही देंगे। पत्रिका उत्तमोत्तम और उपयोगी पुस्तकों को प्रकाशित कर हिन्दीभण्डार को भर रही है और यदि हिन्दोरसिकों की इस पर कृपादृष्टि ऐसी ही बनी रहो तो यथासाध्य आगे भी करती जायगी।

इधर कई कारणों से पत्रिका समय पर प्रकाशित नहीं हुई। इस का खेद सभा के कर्मचारियों को बहुत है। पर यदि ईश्वर को दिया हुई तो अब ठीक समय पर पत्रिका अपने सुन्दर पाठकों की सेवा में पहुँचा करेगी। यह देख पाठक अवश्य सन्तुष्ट होंगे कि हमलोगों ने पत्रिका का आकार भी बढ़ा दिया है।

इस समय उन पत्रसम्पादकों को जो इस पत्रिका के परिवर्तन में अपने पक्षों को विना मूल्य भेजते हैं मैं हार्दिक धन्यवाद प्रदान करता हूँ।

“आरा नागरो प्रचारिणो सभा” जहाँ से यह पत्रिका प्रकाशित होती है दिनों दिन उन्नति कर रही है। और हिन्दोरसिकों का उस की ओर स्नेह बढ़ता जाता है। इस को देख हम लोगों का भी उत्साह बढ रहा है। आज कल हमलोग हिन्दीव्याकरण की सामग्री एकट्ठी करने में लगे हुए हैं और कहते हैं कि जिन महानुभावों को इस कार्य का भार मिला है वे इसे सहजिए उ

कनकलता में अति

हिन्दी सम्पादकों के ध्यान देने योग्य बात ।

एक बात हिन्दी सम्पादकों के ध्यान देने और आन्दोलन करने की है। किन्तु उस ओर किसी का ध्यान नहीं जाता है। वह बात यह है, कि बंगाल की डिस्ट्रीक्ट बोर्ड देशीभाषा के प्रचार और शिक्षा के लिये बहुत रुपया व्यय करती है, किन्तु उन के यहां सार्वजनिक शिक्षा प्रचारक समाज और पुस्तकालयों को सहायता देने का कोई नियम नहीं है। पुस्तकालय गांव २ होना चाहिये। गांव २ न हो तो नगर २ पुस्तकालय का स्थापित होना उचित है। पुस्तकालय विद्यालय से बढ़कर है, क्योंकि विद्यालय से केवल विद्यार्थी लाभ उठाते हैं और पुस्तकालय से विद्वान अपनी विद्या बढ़ाते हैं। सच्ची शान यही है कि विद्वानों के शिक्षालय का नाम पुस्तकालय है।

आशा है कि सम्पादकगण ऐसा उद्योग करेंगे जिस से दयामयी प्रजा-बत्सल बंगाल गवर्नमेन्ट देशीभाषा के पुस्तकालयों की सहायता के लिये नियम बनावें।

हम लोगों को गवर्नमेन्ट की शिक्षाप्रतिष्ठिति पर विश्वास है। वह प्रार्थना करने पर अवश्य ध्यान देगी। बिहार प्रान्त के किसी २ जिले २ के कलक्टर पुस्तकालयों को सहायता देना चाहते हैं किन्तु नियम के बिना चुपचाप रह जाते हैं और हिन्दी की उन्नति रुक जाती है।

गिम सों लावल मुकुता हार । कुच जुग चकव चरइ गंगधार ॥
भन विद्यापति कवि कंठहार । रस बुझ सिवसिंह नृप महोदार ॥

सुकन्द = सुन्दर । मधुरी = वान्धुली, पृथ्वी विशेष । अधर ॐ = सुन्दर मुख पर अधर शोभा देता है मानों वान्धुलीपुष्प कमल की पूजा करता है । तहुं = तहां । समरा = श्यामल । तहुं दुहुं & = सुखमण्डल में दो श्याम वर्ण नेत्र ऐसे दीख पड़ते हैं मानों विमल कमल के दल पर भ्रमर बैठे हों । विशेष निरमल = अधिक सुन्दर । चकव = चकवा, चक्रवाक । “मुकुताहार” की गंगधार से उपमा दी गयी है । कवि कंठहार = विद्यापति का विशेषण है । महोदार = परम उदार ।

धनि मुख मण्डल चान्द विराजित लोचन खअन भौंति ।

मदनचाँप जिनि भौंहे लग युग दसनाहि मोतिम पौंति ॥

सखि हेरु रमन-मोहिनी-राइ ।

कतो कतो विदगध हेरताहि सुरक्षित मदन प्राभव पाइ ॥

कनक विरचि मनिहार बिलम्बित अधरहि बिम्ब अकार ।

नवऊरज पर मोति विरोचित मेरु सुरसरिधार ॥२४॥

भांति = ऐसा । लग = लागे, अनुमान होता है । हेरु = देख । रमन मोहिनी राइ = वल्लभ मोहिनी । विदगध = बुद्धिमान । प्राभव प्राइ = प्राप्त होता है । विरचि = विरचित । विरोचित = शोभित । मेरु = सुमेरु गिरि ।

चिकुरनिकर तम सम पुन आनन पूनिम ससी ।

नयन पंकज के पतिआयव यक ठामे रहु बसी ॥

आज मों देखलि वारा ।

लूबुध मानस चालक मयन करव की परकारा ॥

सहजहि सुन्दर गोरकलेवर पीन पयोधर सिरी ।

कनकलता मों अति विपरिती फल जूगल गिरी ॥

भन विद्यापति विहिक घटन के नहि अदबुद जाने ।

राजा सिव सिंह रूपनरायन लछिमा देवि रमाने ॥ २५ ॥

चिकुरनिकर = केशदाम । पतिआयन = प्रतीत करी । रह वसो = वास करता है । तम, शशो और पंकज विरोधो-विस्तु होने पर भी एक साथ वास करते हैं । बारा = बाना । लूवध = लुब्ध । मयन = मदन । करव को & = क्या उपाय करूँ । सहजहि = स्वभावतः । सिरो = श्रेष्ठ, सुन्दर । अति विपरीतो = अति विपरीत घटना है कि कनकलता में युगल गिरि फला । अदबुद = अद्भुत ।

ननुय बदनी धनी बचन कहसि हंसि ।

अमिय बरखे जिनि सरद पुनिम ससि ॥

अपरूप रूप रमनी मनी ।

जाइत देखली गज गति गामिनी ॥

सिंह जिनिय मांभारे खीनी तनु अति कोमलिनी ।

कुच-सिरी-फल भारे भाङ्गिय पड़य जनी ।

काजररञ्जित अति धवल नयन वर ।

अमर भुलल जिनि विमल कमल पर ॥

भन विद्यापति सो रस नागर ।

राइ रूप हेरि गर गर अन्तर ॥ २६ ॥

ननुय बदनी = नयनीत-बदनौ । कहसि = कहती है । पुनिम = पूर्णिमा । जिनिया = सदृश्य । मांभारि = कटि । खीनी = क्षीण । सिरी-फल = श्रीफल । भारे = बोझा से । भाङ्गिय पड़य = टूटी जाती है अर्थात् कोमलांगो होने के कारण कुच-भार को सहाल नहीं सकता है अतएव झुको-रहती है । उत्प्रेक्षा द्वारा कवि दिखलाते हैं कि युवती ने लज्जा से नम्र भाव धारण किया है । गरगर = व्याकुल । अन्तर = अन्तस्करण, हृदय ।

खूजलि कवरी अवनत आनन कुच परसय परचारी ।

काम कमल लय कनकसम्भु जिनि पूजल ढारी ।

पलटि हेरि लउ पेयसि वयना मदन मरथ तोहि रे ।

सामर लोम-लता कालिन्दी हारा पुग्गरि घारा ।

मज्जन कय माधव वर सांगल पुनु दासन यक वारा ॥२७॥

परचारि = प्रचारी, प्रकाशित । खूललि &c. = चोटी खुल गई और मुख नीचा है अतएव उन्मा हुआ वाल कुच को छू रहा है और मुख जो कुच की ओर झुका है वही काम मानो मुखरूपी कमलको कनकगंधु पर गिरा रहा है । हेरि लउ = देखलो । पेयसि = प्रेयसी । वयना = वदन । रे = हे माधव । सामर लोम तना = नाभि-रोमावली । हारा - हार । सामर &c. = रोमावली तक माना पहुंचने से मानो यमुना और गङ्गा का संगम हो रहा है ।

अमिअक लहरी वम अरविन्द । विद्रुम पल्लव फूलल कुन्द ॥

निरवि निरवि मो पुनु पुनु हेरु । दमन लता पर देखल सुमेरु ॥

सांच कहीं मोर साखि अनंग चान्दकमण्डल यमुनतरंग ॥

कोमल कनककेआ मुतिपात । मसि लय मदन लिखन निज वात ॥

पढाहि सकत ना आखर पाँति । हेरइत पुलकित हो तनु काँति ॥

भन विद्यापति कहीं बुझाय । अरथ असम्भव के पतिआय ॥

वम = वमन करता है, गिराता है । विद्रुम = मृगा । अमिअक &c. = कमल मुख अमृत लहरी निःसारण करता है । विद्रुम-पल्लव = अधर । कुन्द = दन्त । निरवि &c. = (यथार्थ तत्व) निर्णय करने के लिये मैं ने बार बार देखा । दमन = द्रोणलता (सुन्दरो के वदन) पर सुमेरु (पयोधर) देखा । चान्दक-मण्डल = उदर । यमुन-तरङ्ग = तिल्ली । कनककेआ = कनकोया, कनक-निर्मित । मुति = मूर्ति । कोमल &c. = कोमल स्वर्णनिर्मित मूर्तिरूपी पत्र पर । मसि लय = रोमावली रूपा सियाही से । वात = भेद । काँति = कान्ति । पतिआय (भोजपुरी) = प्रतीति करे, विश्वास करे ।

जेहि खन निअर गमन होय मोर ।

तेहि खन कान्ह कुसल पुछे तोर ॥

मन दय बुझल तोहर अनुराग ।
 पुन फल गुनमाति पिय मन जाग ॥
 पुनु पुछ पुनु पुछ मोर मुख हेरि ।
 कहिलिओ कहिनी कहवि कत बेरि ॥
 आन बेरि अवसर चल आन ।
 अपने रभस कर कहिनी कान ॥
 लुबुधल भमर कि देव उपास ।
 बांधल हरिन न छाड़य ठाम ॥
 भन विद्यापति दूती भोरी ।
 चेतन गोपय गुपुती चोरि ॥२६॥

पुन पुछ: &c = बारम्बार पूछते रहे । लुबुधल भमर (नायक) का किस से उपमा दी जाय, उस को दशा तो बांधे हुये हरिण को सो हो गई थी ।

गगन मंडल दुहुक भूषन एक सर उग चन्द्र ।
 गय चकोरी अमिय पीवय कुमुदिनी सानन्द ॥
 मालति मन बुझ करिये रोस ।
 एकल भमरा बहुत कूसुम कमल न हेरे दोस ॥
 जातकि केताकि नविनपटुमिनी सब संगम अनुराग ।
 ताहि अवसर तोहि न विसारय तोहर यह बड़ भाग ॥
 रभस अभिनव सुरस पावल कमन रहय विवेक ।
 भन विद्यापति परहित कर तैसन हरि पय एक ॥३०॥

गगन &c = एक चन्द्रमा उग कर गगनमण्डल तथा सरोवर दोनों की शोभा बढ़ाता है । गय &c = गगनमण्डल में उठ कर चकोरी चन्द्र का पियुष पान करती है और उसी चन्द्र की किरण जब सरोवर में पड़ती है तब

कुमोदिनी आनन्द पाती है । मालति = नायिका । न हेरे दोष = दोष नहीं देखता । एकल ही &c — अकेले ही भ्रमर बहुत कुसुमों को बास लेता है किन्तु इस से कमल भ्रमर पर दोषारोपन नहीं करता । सम = बराबर । बिसाराय = भूलता है । कमन = कैसे ।

श्री राधिका जी का पूर्वराग ।

नन्दक नन्दन कदमक तरुतरे धिरे धिरे मुगलि वजाय ।
समय सँकेत निकेतनि बइसल बेरि बेरि बोलि पठाय ॥

सामरी तोरा लागि अनुछन विकल मुगारि ।
जमुनक तीर उपवन उदवेगल फिरि फिरि ततहि निहारि ।
गोरस बेचन अवइत जाइत जनि जनि पुछे बनमारि ॥
तौह मतिमान सुमति मधुमूदन बचन सुनहु कछु मोर ।
भन विद्यापति सुन बर जुवती बन्दहु नन्दकिसोर ॥ १ ॥

सामरी = सुन्दरी । तोरा लागि = तेरे लिये । अनुछन = सर्वदा । उदवेगल = उद्दिग्ध (व्याकुल) होकर । ततहि = उसी ओर । जनि जनि = प्रत्येक रमणी से । बनमारि = बनमाली । मतिमान = अनुरक्त । तौह = तुझ पर ।

कि कहब हे सखि कानक रूप । के पतियायब सपन सरूप ॥
अभिनव जलधर सुन्दर देह । पीतबसन जनि दामिनि रेह ॥
सामर भामर कुटिलहि केस । काजर साजल मदन सुबेस ॥
जातकि केतकि कुसुम सुबास । फुलसर मनमथ तेजल त्रास ॥
विद्यापति कह कि कहब आर । सून कइल बिहि मदन भँडार ॥ २ ॥

कानक = कृष्ण का । अभिनव = नया । सामर भामर = घोर कृष्णवर्ण । बेस =

भेष । जातकि &c. = जातकि तथा केतकी कुसुम को सुगन्धि जो साधव के अङ्ग पर थी उस से भयभीत होकर सदन ने अपने पुष्प सर् को त्याग किया ।
 सून = शून्य । सून &c. = विधाता ने सदन को वाञ्छित वस्तुओं को श्री कृष्ण जी के लिये छीन कर उस के भण्डार को शून्य कर दिया ।

जवहिं दुहुँक दिठि बिलुरलि, दुहु मन दुख लागु ।
 दुहुक आसदिय बूझल, मनमथ आँकुर भांगु ॥
 बिरह दहन दुहु तावय, दुहु समीहय मेलि ।
 एकक हृदय एक न पाउल, तें नहिं पाउलि केलि ॥
 बाम नयन जनि दुत भेल, दाहिन रहल लजइ ।
 चेतन चेतन गोपति प्रीती, पर के कहल न जाइ ॥
 जो नवचन्द पुरन्दर अन्तर, चन्द न तासु समान ।
 दसमी दसा पथ्य अंगिरो, न करों तीसर कान ॥
 मोहन सर मनोभव साजल, तनु पसाहल आगी ।
 बिनु अवसर की सखि बोलति, पुनि दरसन लागी ॥
 सीतल उकति जेहो जुगुती, समदल छीलो आन ।
 अब सआनाँ जानि कन्हाइ, मानीहल धनि धान ॥
 दर्पन मुख प्रतिबिम्ब न्याइ, बेकत भेल बिकार ।
 पुनिक आसा काम पुरावय, विद्यापति कैठहार ॥
 हरी सरीस जगत जानिय, रूपनरायन रन्ता ।
 राय सीव सिंह सुचिर जीवय, लछिमा देवि सुकन्ता ॥२॥

आङ्कुर = अङ्कुर । मांगु = टूट गया । दहन = जलन । समीहय = अभिलाष करते हैं । मेलि = मिलन । एक &c. = एक का मन दूसरे को न मिला अतएव केलि अर्थात् पानन्द प्राप्त न हुआ । चेतन - चतुर । गोपति = गुप्त । प्रीती = प्रेम । जो नव चन्द &c. = जो (नव चन्द) नवोढ़ा चन्द्र-मुखी अपसरा पुरन्दर

अन्तर (इन्द्र के हृदय में) है अर्थात् जिस ने इन्द्र का हृदय वश कर खिया है उस के तुल्य आकाशचन्द्र कभी नहीं है क्योंकि व्यक्त पदार्थ गुप्त पदार्थ ऐसा मनोहर नहीं ज्ञात होता । दसमी दसा = प्रेम को दशमी दशा अर्थात् मृत्यु । अङ्गिरी = अंगीकार करूँगी । दसमी &c. = मृत्यु को अपव्य होने पर भी इस दारुण रोग का पथ स्वरूप अंगीकार करूँगी पर प्रीतिभेद को किसी तीसरे पर प्रकट न करूँगी । मोहन &c. = श्रीकृष्ण ने मदन का सर सम्भान किया । पसाहल = पसारा । तनु &c. = मनों श्री राधिका राणी को देह में आग लगा दो अर्थात् श्री प्रिया जी कामताप से व्याकुल होने लगीं । विनु अवसर &c. = सुयोग पाये बिना पुनः साक्षात् करने के लिये सखियां क्या कहें । जेहो = जो । समहल &c. = सम्वाद दिया था, कहा था । सभानां = सेयानां ; चतुर । मानोहल = समझ कर ; मान कर । धान = अनुसन्धान । शीतल ... धान = यह देख कर कि सखियां अवसर नहीं पाने के कारण पुनः मिलने को कोई चरचा नहीं कर रही हैं “शीतल की उक्ति” से राधिका जी ने सखियों से कुछ कहा । अब कवि कहते हैं कि “शीतल उक्ति” की युक्ति से नायका ने जो दूसरे से कुछ सम्वाद कहा था उस का अर्थ समझ कर यदि तुम उस की खोज में जा कर उस के निकट पहुंचो तो हे श्री कृष्ण हम तुम को चतुर कहें दर्पण &c. = जिस प्रकार दर्पण में मुख का प्रतिबिम्ब पड़ता है उसी प्रकार विकार व्यक्त हुआ । पुनिक आसा = पुनः दर्शन की आशा । हरी = हरि, श्रीकृष्ण । सरीस = दृश्य । रत्ता = राजा । सुचिरजीवय = दीर्घजीवी हों ।

ए सखि पेखली एक अपरूप । सुनइत मानवि सपन सरूप ॥
 कमल युगल परचांदक माला । तापर उपजल तरुन तमाला ॥
 तापर बेढलि धिञ्जुरि लता । कालिन्दि तट धीरे जाता ॥
 साखा सिखर सुधाकर पांति । ताहि नव पल्लव अरुनक भांति ।
 विमल विम्बफल युगल विकास । तापर कीर थीर करु बास ॥
 तापर चंचल खड्गन जोर । तापर सापिनि भांपल मोर ॥
 ये सखि रङ्गिनि कहल निसान हेरइत पुनि मोर हरल गियान ॥

भन विद्यापति यह रस भान । सुपुरुष मरम तुहु भन जान ॥३॥

मानवि = मानोगी । कमल युगल = पग है । चांदक-माला = चन्द्र हार, नख
श्रेणी । ता पर = तिस के ऊपर । तरुन-तमाला = अ कृष्ण का तमाल वर्ण कले-
वर । बेदलि = वेष्टित हुई । विज्जुरिलता = पीताम्बर । कालिन्दि &c. = जिसे हम ने
देखा वह ओ यमुना जो के तार पर धीरे धीरे जा रहा था, साखा सिखर =
शेषाग्र भाग । सुधाकर पांति = नखावली । ताहि = तिस में । नव पल्लव = नवोन
पल्लव, करतल । अरुनक भांति = अरुण ऐसा अर्थात् रक्तवर्ण । बिम्बफल =
उष्टाधर । कोर = नासिका । खञ्जन = भांख । जोर = जाड़ा । सांपनि = जूड़ा ।
मोर = मोरपक्ष । तापर &c = जूड़ा के ऊपर मोरपक्ष है । कहल निसान - यही
चिन्ह कहती हूँ । पुनि हेरइत = पुनर्वार देखने से । हरल गियान = मेरा ज्ञान
जाता रहा । मरम = मर्म, भेद ।

हमे हांसी हेरलन थोरा रे । सफल भेल सखि कौतुक मोरा रे ॥
हेरतहि हरि भेल अन रे । जनु मनमथ मन बेधल बान रे ॥
लखाली ललित तसु गात रे । मन भेला परसिय सरसिज पातरे ।
तनु परसल विन्दु रे । नेउछि नहाउल सुनखत इन्दु रे ॥
कांपल परम रसाल रे । जनु गरइ मनसिज जपत तमाल रे ॥
विद्यापति कवि भन रे । करत कमल मुखि सावधान रे ॥४॥

कौतुक = कौतूहल । हमे &c = मुझ पर हरि अनुरक्त हैं वा नहीं यह जानने
का । मेरा कौतूहल था । हरि ने हंस कर तनिक मेरी ओर देखा, मेरा कौतूहल
दूर हुआ । आनभेल = दशा बदल गयी । परसिय = मोनो कूरही हों । लखलि
&c = हरि की ओर देखतेही ऐसा अनुभव हुआ मानों कमल पत्र कूरहीं हो;
चन्दु हारां स्पर्शसुख अनुभव हुआ । तनु &c. = बदनमें स्वेद कण छिटक आया । तारा
और चन्द्र की उस पर निष्कावर किया । नेउछि = ओइक कर फेंक दिया अर्थात्
अमकणयुत सुखमण्डल ऐसा दोसता था मानो तारागण वेष्टित चन्द्र हो ।
रसल = रसिक । कांपल = अति अनुराग के कारण कांपा । जनु &c. = मानो ।
तमाल मनसिज का जप करते करते पसौने पसौने हो गया हो सावधान =
सचेतन ।



सचेतन ।

एक दिन हेरि हेरि हंसि हंसि काय ।
 अरु दिन नाम धरि मुरलि बजाय ॥
 आजु अति नियरे करल परिहास ।
 न जानिय गोकुल के कर बिलास ॥
 सजनी हे नागर सामराज ।
 मुल बिनु परधन मांगे व्याज ॥
 परिचय नहि देखी आन काज ।
 ना करे सम्भ्रम ना करे लाज ॥
 अपने निहारि निहारि तनु मोर ।
 देइ आलिङ्गन भय बिभोर ॥
 छन छन वेदगधी कला अनुपाम ।
 अधिक उदार देखिय परिनाम ॥
 विद्यापति कह आरति ओर ।
 बुझइ न बुझई इह रस भोर ॥ ५ ॥

अरु = दूसरे । केकर बिलास = किस का अधिकार । वेदगधी = वैदग्ध्यकला,
 रसिकता सूचक हाव भावादि । बुझइ &c. = यह रस की अव्यक्त ध्वनि बुझ कर
 भी नहीं बुझता है ।

अइलि निकट बाटे लुआलि मदन साटे दृढ बान्ध दर-
 सिल केस । रमन भवन बेरि पञ्जटि पालुय हेरि आलि दीठि
 दे गेलि संदेस ॥ आउर कि करति सखी, परिनतससि-
 मुखि कान्ह यदि न बुझै बिसेस । आँचर धरइत कर नवखी
 लाजे भर नवइत मुखेरि उपास । न जानो कवन जन कमल

नाल सन कमल समोरल काम ॥ भन विद्यापति अभिनव
रतिपति सकल कलारस जान । राजबलभ जिवे सिरी महे-
सर रेनुक देवि रमान ॥ ६ ॥

अइलि (भोजपुरी) = श्री राधिका जो आयीं । बाटे = रास्ते में । साटे
= चाबुक से । दृढ़ &c. = कस कर बंधी हुई चोटो जो मदन के चाबुक से
नज़र आती थी बदन में कू गयी । रमन = वल्लभ, माधव । वेरि = निकट । पाकुय
= पीछे । भालि = वक्र । दे गेलि = दे गयी । दे गेलि संदेस = संकेत कर गयी ।
आउर = और । परिनत = पूर्ण । विसेस = विशेष कर के, उत्तम रूप से । लाजे
भर = लजा कर । उपाम = उशमा । कवन जन = किस यत्न से, कैसे । सन = से ।
राज बलभ = राजा का सुहृद, मन्त्री । सिरी &c. = श्री महेश्वर राजा के मन्त्री
और रेणुका देवी के बल्लभ दीर्घ जीवी हैं ।

कि कहब हे सखि इह दुख ओर ।
बंसि निसास गरल तनु मोर ॥
हठ सों पैसल श्रवनक माभ ।
तेहि छन बिगलित तनु मन लाज ॥
बिपुल पुलक परिपूरल देह ।
नयन न हेरि हेरय जनु केह ॥
गुरुजन समुखाहिं भावतरङ्ग ।
यतनहिं बसने भाँपलि सब अङ्ग ॥
लहु लहु चरन चललि गृह माभ ।
आजु दइव विहि राखल लाज ॥
तन मन बिबस खसे निवि बन्ध ।
कि कहब विद्यापति रहु धन्ध ॥ ७ ॥

[५३]

दूर हुई, जाती रहो । पुलक = रोमाञ्च । नयन &c. = इस भय से फिर कर नहीं देखतो हूँ कि कहीं कोई देख न ले । समुत्तुहिं = सामने हो । भावतरङ्ग = जाना भाव का विकार तरङ्गित होने लगा । यतनहिं = यत्न के साथ । लहु लहु = धीरे धीरे । देव = देवात । धम्य = संशयपूर्ण ।

बिके गेलिहुं मथुरा मधुरिपु भेंटलि साधे ।

तेहि छिन पंचसर लागल विधिवस के करु बाधे ॥

हार भार भेल तेहि छिन चार चँदन भेल आगी ।

दाच्छिनपवन दुसह भेल मोहि पापिनि वध लागी ॥

कतन यतन घर अयलहुं केकर दधि दुध काज ।

मनहु न मधुरिपु विसरय तेजली गुरु जन लाज ॥

भन विद्यापति सुवदनि दुइ दिठि होयत समाज ।

मनक मनोरथ पूरत मधुरिपु आयव आज ॥८॥

बिके = बेचने । गेलिहुं = गयी थी । मधुरिपु = माधव । साधे = साध से । करु बाधे = कौन रोके । विधिवस = भवतव्यता वश । अयलहुं = आयी । केकर काज = किस को प्रयोजन था । मनहु = मन करने पर अर्थात् इच्छा करने पर भी । न विसरिय = वह नहीं भूलते हैं । तेजली = त्याग किया । सुवदनि = सुवदनी, सुन्दरी । दुइ &c. = दो दृष्टि से मिलन होगा । मनक = मन को । आयव = आवेगे ।

अवनत आनन कय हम रहली, वारलि लोचन चोर ।

पीया मुख रुचि पीवय धावल, जानि से चाँद चकोर ॥

ततहुं सो हठ हठि मो आनलि, धयली चरनन राखि ।

मधुक मातल उड़य न पारय, तैओ पसारय पांखि ॥

माधव बोलल मधुरी बानी, से सुनि मुँहु मो कान ।

ता अवसर ठाम वाम भेल, धरी धनुष पंचबान ॥

तनु पसेव पसाहनि भासलि, तइसन पूलक जाग ।
 चुनि चुनि भय कांचुअ फाटलि, बाहु बलाआ भाग ॥
 भन विद्यापति कंपित कर हो, बोलल बोल न जाय ।
 राजा सिवसिंह रूपनारायन साम सुंदर वर काय ॥६॥

अवनत &c. = हम नीचा मुख किये रहें । वारल = निवारण किया । वारल
 &c. = मना किया हुआ नेत्र चोर की तरह दाव पेंच लगा कर प्रीतम का मुख
 पानिप चाव से पीने को दीड़ा अर्थात् रोकते २ भी दृष्टि प्रीतम को मुखड़े पर
 जा पड़ी । पिवय = पान करने को । जनि से = जैसे । ततहुं = तहां से भी । हठ
 हठि &c. = हठौ (आंख) को हठ से हम फेर लाईं । धयल &c. = वल्लभ के आनन
 से हटा कर लोचन को अपने चरणों पर हम ने गड़ाया । मृदु = मृदु लिया ।
 ठाम = स्थान, स्तन । पसेव = प्रखेद, पसीना । पसाहनि = अङ्गराग । पूलक जाग
 = पुलकाशित हुआ । कांचुअ = कांचुकी । चुनि &c. = भय से कांचुकी चुनो चुनो
 (टुकड़ा २) फट गयी । हो = हो कर । काय = काया, बदन ।

की लागि कौतुक देखलों सखि निमिष लोचन आध ।
 मोर मनमृग मरम बेधल विषम वान वेआध ॥
 गोरस विरस बासी विशेषल बिकेहु छाडलि गेह ।
 मुरलि धुनि सुनि मनहुं मोहल बिकेहु भेल सँदेह ॥
 तट तरङ्गिनि कदम कानन निकट जमुना घाट ।
 उलटि हेरइत उलटि परली चरन चीरल कांट ॥
 सुकृति सूपल सुनह सुन्दरि विद्यापति भन सार ।
 कंस दलन गुपाल सुन्दर मिलल नन्दकुमार ॥१०॥

की लागि = किस लिये । निमिष = क्षण मात्र के लिये । लोचन आध =
 कठाक्ष । वेआध = व्याधा, मदन । विशेषल = विशेष कर के । गोरस &c. = निरस
 तथा बासी दूध यात्रा के समय निषेध है । बिकेहु = कींक पर । छाडलि गेह
 = घर से चली । बिकेहु = बिकेहु में भी । उलटि परली = गिर गयी । चीरल =

गड़ गया । सुकृति सफल = अच्छे कर्मों के फल से । मौलल = दर्शन हुआ ।

कर किसलय सयन रचइत गगन मंडल पेख ।
जनिं सरोरुह अरुन सूतल विनु विरोध उपेख ॥
नव जलद जनु नीर वरिसय नयन उज्जल तोर ।
जानि सुधाकर करें कवलित अमिय बमन चकोर ॥

कहु कमलवदनी ।

कमन पुरुसे हर आराधिअ जसु कारन तोहँ छिनी ॥
उतँग पीन पथोधर ऊपर लाखिअ अधर छाया ।
कनक गिरि पवार उपजल वापु मनोभव माया ॥
तो पुनु से नारी विरहे भामरी पलटि परलि बेनी ।
साँस समीरन पिवय धाउलि जनि से कारी नागिनी ॥
भन विद्यापति सुनह जूवति सरुप मोर सुवचना ।
आपन मन थिर पय चाहिअ परे विवचने कोना ॥११॥

सयन = शय्या । कर &c. = करप्रसन्न को शय्या बना कर अर्थात् करतल पर कपोल दिये लिट्टी हुई । जनि &c. = ज्ञात होता है मानो अरुण (बाल रवि) पर कमल सोया हुआ है । विनु &c. = विरोध को उपेक्षा नहीं कर के ; विरोध यह कि अरुण कि देख कमल जाग उठता (खिल जाता) है और यहाँ अरुण ही पर पन्न सोया हुआ है । उपेख = उपेक्षा = । तोरा = तुम्हारा । करें कवलित = किरण से आस किया गया, खाया गया । कमन = कौन, किस । पुरुसे = पुरुष के लिये । आराधिअ = आराधना करती है । जसु = जिस । तोहँ छिनी = तू दुबली हो रही है । पवार = प्रवल, दृढ़ । वापु = अष्ट । माया = इन्द्रजाल । तो = तिस पर । भामरि = मल्लिन । साँस &c. = निश्वास रूपी समीरण । सरुप = सरल पर = अपर । कोना = कौन ।

जमन के तिरे तिरे सांकड़ि वाटी ।

[५६]

उवाटि न भेलिहु सँग परिपाटी ॥
 तरुतर भेंटल तरुन कन्हार्ई ।
 नयन तँग जानि गेलि सनाई ॥
 के पतियायत नगर भरला ।
 देखइत सुनइत मोर मन हरला ॥
 पलाटि न हेरलि गुरु जन लाजे ।
 वचन मों चुकिलिहु सखिन समाजे ॥
 यत दिन अछलिहु अपन गेयान ।
 अब मोर मरम लगल पँचवान ॥
 निठुर सखी विसवास न देइ ।
 परक बेदन पर बाटि न लेइ ॥
 भन विद्यापति यह रस भान ।
 सिव सिंह लछिमा देइ रमान ॥ १२ ॥

सांकाडि = सङ्कीर्ण, पतली । बाटी = बाट, गली । उवाटि = फिर । भेलिहु =
 हुई । सँग &c. = साथ अर्थात् साक्षात्कार का अनुक्रम नहीं हुआ । किसी परम
 सुन्दर को अकस्मात् राह में देखने से स्वभावतः उसे फिर देखते हैं, यदि मन आ
 गया तो आँखें लड़ाते हैं, फिर सङ्केतादि करते हैं—इसी को सँग परिपाटी कहा ।
 सनाई = सना गयी, मिल गयी । नगर भरला = सारे नगर में । अछलिहु =
 अच्छा रहा । विसवास &c. = विश्वास नहीं देतो अर्थात् विश्वास नहीं करतो ।

हेरव कान्ह छिलो मन साध । कान्ह के हेरइत भेलो परमाद ॥
 तब धरि अबोधि मुगध हम नारि । कि कहि कि वलि बूझव पारि ॥
 सावन घन सम भरु दुइ नयान । अविरत धस धस करय परान ॥
 कां लागि सजनी दरसन भेल । रभसे अपन जिय पर हाथे देल ॥
 न जानिय किय कर मोहन चोर । हेरइत प्रान हरिलेइ गेला मोर ॥

जत सब आदर गेला दरसाइ । जत विसरिय तत विसर न जाइ ॥
विद्यापति कह सुन बर नारि । धीरज धर चित मिलब मुरारि ॥१३॥

छोलो = था। परमाद = प्रमाद, पागलपना । तबधरि = उस समय से ।
अबोध = निर्वोध । धस = धक् । काँ लागि = क्यों । रभसे = कौतुक में । जौय =
जीव, प्राण । पर = पराया । किय करु = क्या किया । जत = जितना । विसरिय
= भूलाने की चेष्टा करती हूँ ।

माधव अब न जीवति राही ।

जतवा जानिकर लोखि छलि सुन्दरि से सभ सोंपलक ताही ॥
चानक ससिमुखि ससि के सोपलन्हि, हरिन के लोचन लीला ।
केसकपास चमर काँ सोपलन्हि, पाय मनोभव पीड़ा ॥
दसन बीजदाडिम काँ सोपलन्हि, पिक काँ सोपलन्हि बानी ।
देहदसा दामिनि काँ सोपलन्हि, इ सभ एलहुँ जानी ॥
हरि हरि कय पुनि उठति धरनि धरि, रैन गमावय जागी ।
तोहर सनेह जीव दय जापथि, रहलिहि धनि यत लागी ॥
भन विद्यापति सुनु मथुरापति गमन न करिए विलंबे ।
जाइ पिआविए अधर सुधारस, तो पय जीवथि जीवे ॥१४॥

जतवा = जितना । जानिकर = जिस से । जतवा &c. = अपनी सुन्दरता वृद्धि
के लिये कामिनि ने जिन लोगों से जिन २ पदार्थों को लिया था उन्हें वह फेर
दिया । केसकपास = लट । इ सभ &c. = इन बातों का पता पा कर मैं (दूती)
आई हूँ । जापथि = जपती है ।

सखी शिक्षा ।

ये धनि कमलिनि सुन हित बानी ।
 प्रेम करवि अब सुपुरुष जानी ॥
 सुजनक प्रेम हेम समतूल ।
 दहइत कनक दिगुन होय मूल ॥
 टुटइत नहिं टुटे प्रेम अदभूत ।
 जैसन बढ़त मृनालक सूत ॥
 सबहु मतङ्गज मोति नहिं मानी ।
 सकल कंठ नहिं कोकिल बानी ॥
 सकल समय नहिं ऋतू बसन्त ।
 सकल पुरुष नारि नहै गुनवन्त ॥
 भन बिद्यापाति सुन वर नारी ।
 प्रेमक रीति अब बुझह बिचारी ॥ १ ॥

दहइत = आग में तपाने से । टुटइत = तोड़ने से । जैसन &c. = प्रेम मृणाल के सूत्र जैसा मन खींचने से अधिक बढ़ता है । सबहु &c. = सब हाथों में मुक्ता नहीं होती यथा “शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजि गजि ” । बुझह बिचारी = विचार कर के समझी ।

धनि धनि रमनि जनम धनि तोर ।

सब जन कान्ह कान्ह करि भूरय, सो तुय भाव बिभोर ॥
 घातक चाहि तियासल अम्बुद, चकोर चाहि चहु चन्दा ।
 तरु लतिका अवलम्बनकारी, मो मन लागल धन्दा ॥
 केस पसारि जय तुहु मजली, डर पर अम्बर आधा ।

[५६]

से सब सुमरि कान्ह भेल आकुल कह धनि इथे कि समाधा ॥
 हसइत कब तुहु दसन देखायलि करे कर जोरहि मोर ।
 अलखित दिठि कब हृदय पसारलि पुनु हेरि सखि कर कोर ॥
 यतहु निदेस कहल तोहे सुन्दरि जानि तौहे करइ विधान ।
 हृदय पुतलि तुहु से सुन कलेवर कवि विद्यापति भान ॥२॥

धनि = धन्य । भूरय = भुराती है, अश्रुपात करती है । भावे विभोर &c. = प्रेम में विद्वल है । तियासल = प्यासा । चाहिरहु = देखता रहा । अम्बुद = मेघ । तरु &c. = लतिका तरुवर को कवलम्बन देर हो है । धन्दा = विस्मयजनित सन्देह । मो मन &c. = उपर्युक्त घटनाओं को देख कर मेरे मन में शंका हो रहा है अर्थात् श्री कृष्ण के लिये तुम्हें व्याकुल होना चाहिये, किन्तु यहां तुम्हारे ही लिये श्री माधव उद्दिग्ग हो रहे हैं, मेरी समझ में यह नितान्त विस्मय का विषय है । अकली = थो । इथे = इस का । समाधा = परिणाम, निष्पत्ति । देखा-यलि = तुम ने दिखाया । करेकर जोरहि = दोनों हाथ जोड़ कर । मोर = फिर कर । अलखित = अलक्ष भाव से । पसारलि = पसारा अर्थात् दृष्टिपात किया जिस का प्रभाव हृदय पर पड़ा । सखि कर कोर = सखी को आलिङ्गन किया । यतहु = इतना । निदेस = निर्देश, इशारा । जानि &c. = सोच समझ कर अब तुम विधान करो । हृदयपुतलि = हृदय की पुतली अर्थात् प्राण । से = वह माधव । सुन कलेवर = शून्य कलेवर अर्थात् प्राणविहीन ।

लख तरुवर कोटीहिं लता , जुवती कतो न लेख ।
 सब फुल मधू मधुर नहीं , फूलहुं फूल विसेख ॥
 जा फुल भमर नीदहु सुभर , बासी विसर न पार ।
 जित मधुकर उड़ि उड़ि परे , से सँसारक सार ॥

सुन्दरि अबहुं वचन सून ।

सब परिहरि इछ तोहि हरि , आपु सराहहिं पून ॥
 तोरिय चिन्ता तोरिय कथा , सेचहुं तोरिय जम ।

सपनहु पुनु कय सिरिहरी , लय उठ तोरिय नाम ॥
 आलिङ्गन दय पाछु निहारय , तोही बिनु सुन कोर ।
 अकथ कथा पाछिल कथा , लाज न तेजय लोर ॥
 राइ राइ जाहि मुह सुने , ततह अपय कान ।
 राजा सिवसिंह इ रस जानय , कबि विद्यापति भान ॥३॥

कतो = कितनो । लेख = लेखा, संख्या । नौदडु = स्वप्न में भी । सुमर = स्मरण करता है । वासो = वास, गन्ध । विसर = नहीं भूलता । जित = जिधर, जिस पर । संसारक = संसार का । सुन = श्रवण कर, सुन । इच्छ = इच्छा करते हैं, चाहते हैं । पुन = पुनः । पुनु कय = फिर फिर कर, बार बार । लय = तेरा नाम ले उठते हैं । दय = देने को । सुन कोर = क्रीड़ शून्य बोध होता है । जाहि = जिस के । अपय = रोपते हैं ।

आसा मन्दिर निसा गमावय सुख नहिं सूत सयान ।
 जखन जतय जाहि निहारय ताहि ताहि तोहि भान ॥

मालति सफल जीवन अब तोर ।

तोरे बीरह भूअन भरमय भेला मधुकर भोर ॥
 जातकि केतकि कतनो अछय सबहीं रस समान ।
 सपनेहुं नहिं ताहि निहारय मधु की करत पान ॥
 बन उपवन कुञ्ज कुटीरहिं सबहीं तोर निरूप ।
 तोहरे बिनु पुन पुन मुरुछे अइसन प्रेम सरूप ॥
 साहर नवह सउरभ नसह गुजरी गीत न गाय ।
 चेतन पाप चिन्ता आकुल हरखे सबे सोहाय ॥
 जेकर हृदय जतही रतल से धसि ततही जाय ।
 जइअत जतने बांधि निरोधिअ निमने नीर थिराय ॥
 यह रस राय सिव सिंह जासय कवि विद्यापति भान ।

रानी लखिमा देवीवल्लभ सुभगुन सकल निधान ॥४॥

आसा &c = तुम्हारे मिलने को आशा में रात को घर नहीं छोड़ता ।
 सुख &c = सयान (कन्हाई) सुख से सोता भी नहीं । जखन जतय जाहि = जब
 जहाँ जिस को । तोहि भान = तेरो ही बात पक़ता है, अथवा तूही भान होता
 है अर्थात् तेरा ही प्रत्यक्ष अनुमान होता है । मालति = राधा जो । भोर =
 विह्वल । जातकि केतकि = अपर रमणो । कतनो = कितनीही । अक्य = हैं । मधु
 &c = मधुपान करना तो दूर रहे । नवह = नया । साहर = सहकार, सुगन्धित
 आम । गुजरो = गूँझरी । चेतन = चतुर व्यक्ति । पाप चिन्ता = दुश्चिन्ता । रतल =
 अनुरक्त हुआ । जइअत = यद्यपि । निमने = निम्न, नीचे स्थान में । धिराय = स्थिर
 होता है ।

ये धनि कर अवधान । तो विनु उनमत कान ॥
 कारन विनु छने हास । कि कहे गद गद भास ॥
 आकुल अति उतरोल । हा धिक हा धिक वोल् ॥
 कांपय दुरवल देह । धरइ न पारइ केह ॥
 विद्यापति कह भाखि । रूपनरायन साखि ॥५॥

उनमत = उन्मत्त । छने = कभी । भास = भाषण, बात । धरइ न पारइ =
 सम्हाल नहीं सकता । साखि = शास्त्री ।

ये सखि ये सखि न बोलहु आन ।
 तुअ गुन लुबुधल नित आव कान ॥
 नित नित निअर आव विनु काज ।
 बेकतउ हृदय लुकावय लाज ॥
 अनतहु जाइत इतहि निहार ।
 लुबुधल नयन हटाय के पार ॥
 से अति नागर तों तसु तूज ।

यक नल गांथ दुई जनि फूल ॥

भन विद्यापति कवि कंठहार ।

यक सर मनमथ दुइ जिव मार ॥६॥

आन = अन्य बात अर्थात् जो मैं कहती हूँ वही करो । लुबधन = लुब्ध हो कर । आव = आते हैं । कान = कन्हाई । वेकतउ &c = हृदय का भाव व्यक्त होने पर भो । हटाय &c = कौन हटा सकता है । अति = अति उत्तम, श्रेष्ठ । ती = तुम । तूल = तुल्य, योग्य । यकनल &c = एक वृत्त में मानो दो फूल लगे हों ।

आजु हम पेखलि कालिंदि कूल ।

तो विनु माधव लोटय धूल ॥

कत सत रमनि मनहि नहि आने ।

किय विषदाह समय जल दाने ॥

मदन-भुजङ्गम दंसल कान ।

बिनहि अमिय रस कि करब आन ॥

कुलवति धरम कांच समतूल ।

मदन दलाल भेल अनुकूल ॥

आनल बैचि नीलमनि हार ।

से तुहु पहिरबि करि अभिसार ॥

नील नीचोल भापबि निज देह ।

जनि घन भीतर दामिनि रेह ॥

चौदिग चतुर सखी चल सङ्ग ।

आजु निकुञ्ज करह रस रङ्ग ॥

विद्यापति हरि निकष समान ।

निज तनु परिख हेम दसवान ॥७॥

अनुराग उस के मन में नहीं है। विषदाह = विष की ज्वाला। निचोस = चीढ़नी।
निकष = कसौटी। दसवान = परिमाण।

सुन सुन सुन्दरि हित उपदेस ।
हम त सिखायव वचन विसेस ॥
पहिलहि बैठवि सयनक सीम ।
आध निहारवि बङ्किम गीम ॥
जब पिय परसय ठेलवि पानि ।
मौन धरवि कछु कहव न वानि ॥
जब पिय धरि बल लय निज पास ।
नहि नहि बोलवि गद गद भास ॥
पिय परिरम्भनि मोरवि अङ्ग ।
रभस समय पुनि देयवि विभङ्ग ॥
भन विद्यापति कि कहव आर ।
आप हि गुरु होइ सिखायव मार ॥८॥

सयकन = शय्या की। आध &c = गरदन टेढ़ी कर कनखी से देखनी। ठेलवि पानि = हाथ से हटा देना। बल = बलपूर्वक। परिरम्भनि = आलिङ्गन में। रभस = रति, विहार। आर = अधिक। सिखायव = सिखावे गा। मार = कामदेव।
“पद कल्पतरु” में भणिता इस प्रकार की पायी जाती है। “विद्यापति कहइ इस ठाट। काम गुरु होइ सिखायव पाठ।”

सुन सुन मुगधिनि यह उपदेस ।
हम त सिखायव चरित विसेस ॥
पहिलाहि अलक तिलक कर साज ।
बङ्किम लोचन काजर आँज ॥
जाइवि वसन भांपि सब अङ्ग ।

दूर रहवि जनु बात विभङ्ग ॥
 सजनी पहिलहि निअर न जावि ।
 कुटिल नयन धनि मदन जगावि ॥
 भांपवि कुच दरसायवि कन्ध ।
 दृढ़ करि बान्धवि निविहक बन्ध ॥
 मान करवि कलु राखिव भाव ।
 राखवि रस जनु पुन पुन आव ॥
 भन विद्यापति प्रथमक भाव ।
 जे गुनवन्त सोइ फल पाव ॥६॥

सुगधिनि = सुग्धे, बालिके । पहिलहि &c = पहले केश वेशादिक बिन्यास
 कर मृगार साजना । बात विभङ्ग = गूंगो ऐसी । जगावि = उद्योत करना । कन्ध =
 कांधा । नीविहक = नीबीका । नीविहक बन्ध = कटो बन्द । आव = आवै ।

सुन सुन य सखि कहन न होइ ।
 राइ राइ कर तुव तनु मन खोइ ॥
 करइत नाम पेमें भइ भोर ।
 पुलक कम्प तनु घरमाहि लोर ॥
 गद गद भाखि कहइ बर कान ।
 राइ दरस बिनु निकसे प्रान ॥
 जब नहिं हेरब तकर से मुख ।
 तब जिउ भार धरब कोन सुख ॥
 तुहु बिनु आन नाहिं हथ कोइ ।
 बिसरय चाह बिसर नहिं होइ ॥
 भन विद्यापति नाहि बिवाद ॥

[६५]

पूरव तोहर सब मन साध ॥१०॥ नेत्र

कहन न होइ = कहा नहिं जाता । राइ = राय, स्वामी अर्थात् श्रीकृष्ण । तुभ
&c. = तू अपने तन मन को खो रहो है अर्थात् नष्ट कर रही है । करइत नाम
= नाम लेते ही । घरमहि = धर्म, पसीना । तेकर = उस का । इथे = इस
में, इस ब्रज में । तुहु &c. = तेरे सिवा वह और किसी पर अनुरक्त नहीं है ।
विसरय &c. = भूलने को इच्छा करन पर भी वह तुझे भूल नहीं सकता है ।
पूरव &c. = श्री राधा साधव का मिलन होगा ।

जीवन चाहि योवन बड़ रंग । तब योवन जब सुपुरुष संग ॥
सुपुरुष प्रेम कबहु नहिं छाड़ि । दिन दिन चांदकला सम बाढ़ि ॥
तुहुं से नागरिकनु रसकन्द । बड़ पुन रसवति मिले रसवन्त ॥
तुहुं यदि कहसि करिय अनुसंग । चोरि पिरीति होय लछुगुन रंग ॥
सुपुरुष ऐसन नहिं जग माझ । अरु ताह अनुरत वरज समाज ॥
भन विद्यापति इथे नहिं लाज । रुप गुनवति कर इह बड़ काज ॥

चाहि = अपेक्षा । रङ्ग = मञ्जा । तब योवन = योवन तब सार्थक है । नहिं
छाड़ि = नहीं छोड़ता । नागरिक = सुरसिका । कनु = कान्ह । रसकन्द = रस के
मूल । अनुसङ्ग = अनुग्रह दया करके अथवा यदि तुम कहो तो उन के पास अनु-
सङ्ग (प्रसङ्ग) छेड़ें अर्थात् तुम्हारी प्रीति को बात किसी बहाने उन्हें सुनावें ।
चोरि = गुप्त । लछुगुन = लाख गुणा । अरु &c. = और ब्रज समाज उन में
अनुरक्त है अर्थात् श्री कृष्ण के प्रेम में पागल हो रहा है । बड़ = प्रधान ।

सुन सुन गुनवति राधे । साधव बधिले कि साधव साधे ॥
चान्द दिनहि होय हीन । से पुन पलटि छने छन छीन ॥
अंगुरि बलय पुनि फेर । भांगि गड़ायब बुझि कत बेर ।
तोहर चरित नहिं जान । विद्यापति पुन सिर कर हानि ॥१२॥

साधव &c. = साधव को बधिले कि साधव साधे । अर्थात् साधव को बधिले कि साधव साधे ।

[६६]

अन्धकला दिन दिन होन होती है किन्तु माधव प्रति सुहृत् में क्षीण
हैं। अंगुरी वलय = अंगूठी और वाला। पुनि फेर = फिर फिरने लगे
अर्थात् ढोला पड़ गये। भांगि &c. = तोड़कर उन्हें कितनी बार गढ़ाना पड़ेगा
सो नहीं कह सकती। सिर कर हानि = सर पीटते हैं।

न जानि प्रेम रस नहिं रति रंग। कइसे मिलब हम सुपुरुख संग ॥
तोहर बचन जब करब पिरीति। हम सिसु मति अति अपयस भीति
सखि हे हम अब कि बोलबि तोय। ता संग रभस कबहु नहिं होय ॥
से बर नागर नव अनुराग। पांचसर मदन मनोरथ जाग ॥
दरसन अलिंगन देयब सोइ। जिउ निकसब जब राखब कोइ ॥
विद्यापति कह मिथह तरास। सुन अइसन नह तेकर बिलास ॥

रभस = हर्ष, आनन्द। राखब कोइ = कौन रक्षा करेगा। मिथह = मिथ्या, व्यर्थ।

सुनु सुनु बिनोदिनि राइ। तोहि पुनु कहउँ बुझाइ ॥
कानुक भाव जो होइ। हिय मँह राखबि गोइ ॥
केहो जनि लखइत पार। बेकत करबि कुचास ॥
कान्ह उयब हिय माह। आन छल बिसरबि ताह ॥
गुरु दुरजन तुव पाप। देखल, देखब बहु ताप ॥
थीर करबि सदा चीत। जइसन से कुलवति रीत ॥
पुनु जनु भावह आन। कवि विद्यापति भान ॥१४॥

बिनोदिनी राइ = श्री राधिका जो। भाव = प्रीति। केहो = कोइ। बेकत =
व्यक्त, प्रगट। कान्ह &c = श्री कृष्ण का ध्यान मन में आने से किसी बहाने उसे
भुला देना। देखब &c = बहुत ताड़ना करेंगे।

जदि अवकास कहिओ नहिं तोहि।
कां लागि ततहि पठाउल मोहि ॥
तोहर हृदय बचन नहिं थीर ॥

[६७]

नलानि पात जइसन बह नीर ॥
 कि कहव सखि हे कहव अकाज ।
 अथिरक मधय भेल सम काज ॥
 आसा लागि सहत कत साठ ।
 गरुअ न हो अमड़ा कां काठ ॥
 तुहि नागरि गुन रूपक गेह ।
 अनुदिन बुझलि कठिन तुअ नेह ॥
 तन्हिका सतत तोहर परथाव ।
 जनि निरधन मन कतय न धाव ॥
 भनइ विद्यापति ई रस गाव ।
 मगले कानट के नहिं पाव ॥ १५ ॥

कहिभो = कभी । अथिर = चञ्चल वित्त । मधय = मध्यस्थ, उदासीन । सम =
 उपयुक्त । साठ = सासति, तकलोफ़ । तन्हिका = तिनका, उन का । सतत = सदा ।
 परथाव = प्रसङ्ग । जनि...धाव = जैसे धन छोड़ निरधन का मन किसी ओर नहीं
 जाता । गाव = गीत । कानट = पुराना चियड़ा ।

से अति नागर गोकुल कान ।
 नगरहु नागरि तोहि सब जान ॥
 कत बेरि सजनी कहव बुझाय ।
 कयले धन्ध धरम दुर जाय ॥
 सुन्दरि रूप गुनहु सों सार ।
 आदि अन्त नहिं सहध पसार ॥
 सरूप निरूप बुझवली तोहि ।
 जनि परतारि पठावह मोहि ॥
 विद्यापति कह बुझ रसवन्त ।

सिरि सिव सिंह लछिमा देइ कन्त ॥ १६ ॥

धन्व = संशय । सहध पसार = महामूल्य विक्रय योग्य पदार्थ । परतारि = प्रतारणा कर के ।

प्रथम सिरीफल गरब गमावल जों गुनगाहक आवे ।
गेल जोवन पुनि पलाटि न आवे केवल रह पचतावे ॥

सुन्दरि बचन करहु समधान ।

तोह सनि नारि दिवस दस अछली ऐसन उपजु मोहि भान ॥
जोवन रूप तबे धरि छाजत जवे मदन अधिकारी ।
दिन दस गेले सेहु परायत सकल जगत परचारी ॥
विद्यापति भन जुवति लाखि लह पड़ल पयोधर तूल ।
दिन दिन अगे सखि ऐसनि हो वह घोसनि घोरक मूल ॥१७॥

सनि = सम । भान = अनुमान । जवे = जब तक । लह = अनुमान होता है ।
पड़ल = विकृत । घोसनि = गोपनारी । घोरक = माठा ।

परिहर ए सखि तोहे परनाम । हम नहिं जायब से पिय ठाम ॥
बचनचतुरि हम किछु नहिं जान । इंगित न बुझिय न जानिय मान ॥
सहचरि मिलिय बनायत वेस । बांधय न जानिय आपन केस ॥
कभु नहिं सुनिय सुरति कर बात । कैसन मीलव माधव साथ ॥
से वर नागर रसिक सुजान । हम अबला आति अलप गियान ॥
विद्यापतिकह कि बोलब तोय । आजुक मीलन समुचित होय ॥१८॥

इंगित &c. = इशारा । सहचरि &c. = संग को सखी मिल कर वेष विन्यास कर देती हैं । सुरति = केलि । समुचित = उचित रीति को ।

काहे डरसि सखि चलु मोहि संग । माधव नहिं परसब तुअ अंग ॥
इह रजनी फुल कानन माझ । के एक फिरत साजि बहु साज ॥
कुसुमक घोर धनुक धरि पानि । मारत सर बाला जन जानि ॥
अतय चलह सखि भीतर कुंज । यह रह हरी महावल पुंज ॥

एतो कहिं आनल धनि हरि पास । पूरल बल्लभ सुख अभिसार ॥ २१ ॥

अतय = अतएव । यह = यहां । हरी = सिंह । एतो = इतना ।

परिहर मन किछु न करु तरास । साधस नहिं करु चलु पिय पास ॥
दुर कर दुरमति कहलस तोय । बिनु दुख सुख कबहुं नहि होय ॥
तिल आध दुःख जनम भरि सुख । इथे लागि धनि कि होइय विमुख
तिल एक मुनि रह दुहुं नयान । रोगि करय जनि औषध पान ॥
चल चल सुन्दरि करह सिंगार । विद्यापति कह यहि से विचार ॥ २० ॥

साधस = भय । कहलस = कही । इथेलागि = इतनेही वास्ते । जनि = जैसे ।

प्रथमहि सुन्दरि कुटिल कटाक्ष । जिव जोखि नागर दे दस लाख ॥
केउ दे हांस सुधा सम नीक । जइसन परहोंक तइसन बीक ॥
सुनु सुंदरि नव मदन पसार । जनि गोपह आये बनिजार ॥
रोस दरसि रस राखव गोय । धयले रतन अधिक मुल होय ॥
भलहि न हृदय बुझायव नाह । आतुर गाहक महग वेसाह ॥
भन विद्यापति सुनह सयानि । सुहित वचन राखव हिय आनि ॥

जिव.....लाख = कटाक्ष का मूल्य स्वरूप दस लाख प्राण नागर तोल देगा,
निष्ठावर करेगा परहोंक = बहनों । बीक = विक्रय । पसार = दुकान । जनि
गोपह = गोपन मत कर, छिपाव मत । दरसि = दरसा कर ।

आज पेखलि धनि तोहरि बड़ाई । तुअ सम रमनि भुवन अरु नाई ॥
कत कत रमनी कानुक संग । अनुखन करइ तोहर परसंग ॥
हम कहली किछु तोहर संवाद । चौदिस नाह तोहर मुख साध ॥
तुअ गुन कहय रमनि गन आगे । बुझलि निचय तोहर अनुरागे ॥
छल छल नयन हरी भेल आन । भाव भरल रहे तोहर धेयान ॥
भनइ विद्यापति एहि विचार । धनि अब उचित हरी अभिसार ॥ २२ ॥

अरु = दूसरी । नाई = नहीं है । साध = चाह । निचय = निश्चय ।

१ ! हे हरि कर अवधान । दरस दान दय राखहु प्रान ॥
 छन छन वर तनु भामर भेल । सरस विलास हास दुरगेल ॥
 ठरकि ठरकि बहलोचन लोर । अधर सुखायल निकस न बोल ॥
 दुर गेल बसन दूर गेल लाज । तोहर सिनेह भेल यतक अकाज ॥
 उठइ धरनि धरि तेजइ निसास । जिवन अछय पुन तुअ प्रतिआस ॥

वर = सुन्दर । दुर... लाज = उस की पागल की दशा हो गई है, न कपड़े की सुधि रहती है और न किसी से लजाता है । यतक = इतना । अछय = है ।

राइक नविन प्रेम सुनि दुति मुख मनही हुलसित कान ।
 कतहि मनोरथ हृदय परिपूरल आनन्द हरल गेयान ॥

सजनी बिहि कि पुरायब साधा ।

कत कत जनमक पुनफल मीलब सेहे गुनमति राधा ॥
 एत कहि माधव तोरित गमन करे सुपथ विपथ नहि मान ।
 सुन्दरि मन कर दूति वदन हेरि मनमथ जरजर प्रान ॥
 ऐसन कुअ मिलल नव नागर सखिगन सों जहँ राइ ।
 दुहु दुहु वदन हेरि दुहु आकुल विद्यापति कवि गाइ ॥२४॥

राइक = रमणी अर्थात् ओ राधिका जी का । तोरित = तुरत । सुपथ विपथ = राइ कुराइ ।

कि कहब माधव पुनफल तोर । तोहर मुरलि रव राइ बिभोर ॥
 ते पुन सूनल नाम तोहार । से सब भाव हम कहाहि न पार ॥
 अङ्गअवसभेलकांपिअगेयान । मुरछित भेल धनि किछु नहिजान ॥
 बुझइ न पारिय कैसन रीत । किये भल किछु नहि हो परतीत ॥
 आवय से अब काल पै आज । विद्यापति कह अबइत काज २५

से सब &c. = तुम्हारा नाम सुनने से उस के अङ्गी में जो जो भाव प्रवर्तित हुआ वह सब मैं कह नहीं सकती । आवय = आवेगी ।

माधव कि. कहव से विपरीत ।

नेत्र

तनु भेल जर्जर भाविनि अन्तर, चित रहल तसु भीत ॥
 निरस कमल मुख कर अवलम्बइ, सखि माँके वैसल गोइ ।
 नयनक नीर थीर नहि बान्धइ, पंक कयल महि रोइ ॥
 मरमक बोल बयन नहिं बोलत, तनु भेल कुहु ससि छीन ।
 अवनि उपर धनि उठय न पावै, धयालि भुजा धरि दीन ॥
 तपत कन्या जनि काजर भेला, तनु भेला विरह हुतास ।
 कवि विद्यापति मन अभिलासत, कान्ह चलइ तसु पास ॥२६॥

भाविनि अन्तर = मन चिन्तायुक्त । पंक = कीचड़ । कुहु = वड़ अभावस्या कि
 जिस में चन्द्रमा को कलम छिप जाय और चतुर्दशी से युक्त हो । हुतास = आग ।

सुन सुन सुंदर कन्हाई । तोहे सोंपलि धनि राई ॥

कमलिनि कोमल कलवेर । लुँहु से भूखल मधुकर ॥

सहजे करब मधु पान । भूलह जनु पँचवान ॥

गनइत मोतिम हार । छले परसधि कुचभार ॥

न बुझय रति रस रङ्ग । छने अनुमति छने भङ्ग ॥

सिरिस कुसुम जिनि तनु । थोरि सहवि फुल धनु ॥

विद्यापति कवि गाय । दुति कि भिनति तुय प्राय ॥२७॥

छने अनुमति &c. = छनही में राजौ होती है और छन हो में प्रतिप्राप्त
 कर देती है ।

सहजहि तनु खिन, माँक बार जिनि, सिरिस कुसुम सम काया ।

तोहे मधु-रिपु-पति कैसे के धरति रति, अपरुव मनमथ माया ॥

माधव परिहर दृढ परिम्भा ।

भाँगि जायत मन अरू जीव सो, मदन विटप आराम्भ ॥

सैसव अछल सेइ डरे पलायल, जोवन नूतन वासी ।

न कोमल पाहुन पँचसर, भए जनु जाहु उदासी ॥
 तोहर चतुरपन जखन धरति मन, रस बूझति अबसेखा ।
 एखन अलप बुधि न बुझय अधिक सुधि, केलि करब जिव राखी
 तोहे जे नागर मानय धनि जिव सनि, कोमल कांच सरीरा ।
 ते परि करब केलि जे पुनु होअ मेलि, मूल राख बनिजारा ॥
 हमरि अइसनि मति मन दय सुन दुति, दुर कर सब अनुतापे ।
 जौं अति कोमल तैओ न ढरि पल, कबहु भमर भरे कापे ॥२८॥
 परिमृभा = आलिङ्गन । आरम्भा = आदिदि में । अकल = था । ते परि =
 उस के साथ । कापे = कापता है ।

प्रथम मिलन और दर्शन ।

प्रथम समागम भुखल अनङ्ग । धनि बल जानि करब रतिरङ्ग ॥
 हठ करब नहिं आइति पाय । बड़ भूखल नहिं दुहुकर खाय ॥
 चेतन कान्ह तोंहहि यदि आथी । के नहिं जान महत नव हार्थी
 तुअ गुन गन कहि कत अनुबोधी । पहिलही सबहि हललिपरबोधी
 हठ नहिं करब रती परिपाटी । कोमल कामिनि विधटति साटी ॥
 जवे रभस सह तवे विलास । विमति बुझिअ जो जाय न पास ॥
 धसि परिहरि, नहिं धरबिय बाहु । उगिलल चन्द गिलय जनि राहु
 भन पिद्यापति कोमल कांति । कौसल सिरिस सुमनअलि भांति

आइति = आयत्त, अधीन । आथी = अस्ति, हो । नव = नवता है । हललि
 परबोधी = प्रबोध कर रखी हूँ । साटी = शासति । रभस सह = खुसी, राजी से ।

प्रथमाहि गेलि धनि प्रीतम पास । हृदय अधिक भेल लाज तरास

[७३]

ठाढ़ि भेलिहि धनि अङ्ग न डोले । हेमसुरति सन मुखहुं न बोले
कर दुहु धय पहु पास वसाय । रूसलि छलि धनि वदन सुखाय
मुख हेरि ताकय भमर भांपि लेल । अङ्गम भरिक कमल मुखिलेल
भनविद्यापतिदइह सुमति मति । राजा सिवसिंहसुनि हिन्दूपति

पङ्क = प्रभु । भमर = अर्थात्, माधव । अङ्गम & c = कमल मुखी को अङ्ग-
वार भर कर पकड़ लिया । दइह = देना ।।

एके अवला दुजे सहजहि छोटी ।
कर धरइत करुना कर कोटी ॥
आँकम नामे रहय हिय हारी ।
जनि करिवर तर खसलि पौनारी ॥
नयन नीर भरि नहिं नहिं बोले ।
हरि डरे हरिनि जइसन जिव डोले ॥
कोसले कुच कोरक कर लेला ।
मुख देखि तिरि वध संसय भेला ॥
वारि बिलासी आकुल कान्ह ।
मदन कउतुकि आहट न मान ॥
भन विद्यापति सुनहु मुरारि ।
आतिरति हठ नहिं जीवइ नारि ॥३॥

करुना = मिनति । पौनारी = पञ्चनाल । हरि = सिंह । तिरि = तिरिया ।
आहट = भय, संकोच ।

सकल सखी परवोधि कामिनी, आन टेलि पिय पसि ।
जनि बांधि व्याधा विपिन सो मिरगी, तेजइ तीख निसास ॥
बैठलि सयत समीप सुवदनी, बचने समुख न होइ ।

भेली मानस भ्रमई दँहादिस, देली मनमथ फोड़ ॥
 कठिन काम कठोर सुकामिनी, माने नहिं परबोध ।
 निविड़ नीविबंध कठिन कंचुकी, अधरे अधिक निरोध ॥
 सकल गात दूकूल दृढ़े अति, कतहू नाहिं प्रकास ।
 पानी परसे प्रान पगिहरे, पूरति कीरति आस ॥
 करब कौन परकार अबे हम, किलु न परे अवधार ।
 कोपे कोसले करय चाहिय, हटही हल हिय हार ॥
 कन्ता कातर कतहुं मीनती, करत कामिनी पाय ।
 प्रान पीड़ न राइ मानई, विद्यापति कवि गाय ॥ ४ ॥

फोड़ = खोल । परे अवधार = निश्चय नहीं होता । हटहि...हार = बल
 प्रकाश करने की इच्छा नहीं होती । कतहुं = कितनी ।

यतने आयलि धनि सयनक सीम ।
 पांगुर लिखि छिति नत रहु गीम ॥
 सखि ! पिया पासे बैठलि राइ ।
 कुटिल भौंह करि हेरइहि काह ॥
 नवि वर नारि पहिल पिया मेल ।
 अनुनय करत जामिनि अधगेल ॥
 कर धरि बालम लेइले कोले ।
 एक पय कह धनि नहिं नहिं बोले ॥
 कोरे करत मोडइ सब अंग ।
 प्रबोध न माने जनि बालभुजंग ॥
 भन विद्यापति नायारि रामा ।
 अन्तर दाहिन बाहर बासा ॥ ५ ॥

[७५]

सयनक सोम = शय्या के पास । पांगुरि = पदांगुली । नायरि = नागरी ।
अन्तर &c. = हृदय में मिलने को अभिलाषा करती है, परन्तु भय लज्जा से
प्रत्यक्ष साहस नहीं होता ।

पाहिलहि राधा माधव भेंट । चंकितहि चाहि नयन कर हेट ॥
अनुनय काकु करत हो कान्ह । नविन रमानिधानि रस नहिं जान ॥
हेरि हरिनागर पुलकित भेल । कांपि उठेउ तनु सेद वहि गेल ॥
अथिर माधव धरु राइक हाथ । करे करवाधि धरे धनि माथ ॥
भन विद्यापति नहिं मन आन । राजासिवसिंह लखिमारमान ॥६॥

हेट = हेट, नौचे । वेद = खेद । करे.....माथ = अपने हाथ से माधव
का हाथ हटा राधा ने उन का हाथ अपने माथे पर रखा अर्थात् अपना शपथ
दिया । रमान = रमण, वल्लभ ।

कत अनुनय अनुगत अनुवोधि ।
पतिग्रह सखिहिं सोआउलि वोधि ॥
विमुखि सुतलि धनि समुखि न होय ।
भागल दल वहलावय कोय ॥
वालम वेसनि विलासिनि छोटी ।
मेजि न मिजय देलहु हिम कोटी ॥
वसन भूपाय वदन धर गोय ।
वादर तर सति वेकत न होय ॥
भुजजुग चाप जीव जों सांच ।
कुच कञ्चन कोरा फल कांच ॥
लगे नहिं सरय करय कसि कोर ।
करे कर वांहि कराहि कर जोर ॥
यत दिन रुइसवे लाउल काह्य

[७६]

अव गय मदन पढ़ाउल पाठ ॥
 गुरुजन परिजन दुअउ नेवार ॥
 मोहर सुदल अछ मदन भंडार ॥
 भन विद्यापति यहो रस भान ॥
 राजा सिवलिह लखिमा रमान ॥७॥

अनुबोधि = बुझाकर । वेसनि = अच्छी । मेलि &c. = सहस्रों स्वर्यमुद्रा देने से भी इस से समता करनेवाली दूसरी नहीं मिलेगी ।

सखि परबोधि सयन तल आनी ।
 पिय हियहरखि धयल निज पानी ॥
 छुइते राइ मलिन भइ गेली ।
 बिधु कोरे कुमुदिनी मलिन भेली ॥
 नहिं नहिं कहय नयन भरे लोर ।
 सूति रहल धनि सयनक ओर ॥
 आलिङ्गय निविबध विनु खोर ।
 करे कुच परसे सेह भेल थोर ॥
 आंचर लेइ वदन पर भांपे ।
 थिर नहिं होयत थर थर कांपे ॥
 भन विद्यापति धैरज सार ।
 दिन दिन मदनक हो अधिकार ॥ ८ ॥

विनु खोर = खोले बिना । वदन = मुख ।

माधव ये बेरि दुहि दुर् सेवा ।
 दिन दस धैरज धरु यदुनन्दन, हमे तप बर बरु देवा ॥
 कोटि कुसुम मधु वकत न रहत, हठ जनु करिय मुगरी ॥

तुअ यह दाप सहय के पारत, हम कोमल तनु नारी ॥
 आइति हट जों करवह माधव, तो आइति नहिं मोरी ।
 कांचि वदरि उपभोग न आउत, ऊहे की फल तोरी ॥
 येति छन अमियवचन उपभोगह, आरति अनदिन देवा ।
 विद्यापति भन सुन अदुनन्दन, कलियुग नित मोरि सेवा ॥६॥

कोरि = कलो । आइति = आशा । येतिछन = अभी । नित = नित्य ।

हे सखि हे सखि लइ जनु जाह । हम अति बालिक आकुल नाह ॥
 गोट गोट सखि सब बहराय । बजर केशाड़ पिय देलन्ह लगाय ॥
 तेहि अवसर पहु जागल कन्त । चीर संभारत जिव भेल अन्त ॥
 नहिं नहिं करत नयन ढरे लोर । कांच कमल भमरा भिकभोर ॥
 जइसे डगमग नलनिक नीर । तइसे डगमग धनिक सररीर ॥
 भन विद्यपति मुनु कविराज । आगि जार पुनु आगिक काज १०

गोट गोट = एक एक कर । पहु = प्रभु । आगि.....काज = आग से जलने पर फिर आग ही की सहायता जलन मिटाने को लेनी पड़ती है ।

ना कर ना कर सखि मोहे अनुरोध ।
 कि करव हम ताके परबोध ॥
 अलपवयस हम कान्ह सो तरुना ।
 अतिहुं लाज डर अतिहुं करुना ॥
 लोभ निठुर हरि कयलहि केलि ।
 कि कहव यामिनि यत दुख भेलि ॥
 हठ भेल रस सब हरल गेयान ।
 निविबंध टूटल कखन के जान ॥
 आलिङ्गन दिले भुजयुग चांपि ।

तखन हृदय मोर ऊठल कांपि ॥
 नयन वारि दरसायल रोय ।
 तबहु कान्ह उपसम नहिं होय ॥
 अधर निरस मोर करल से मन्द ।
 राहु आस निसि तेजल चन्द ॥
 कुच युग देयल नख परहार ।
 केसरि जनु गजकुम्भ विदार ॥
 भन विद्यापति रसवति नारि ।
 तुहु सचतोनि लुबुध मुरारि ॥११॥

कखन = कब । उपसम = शान्ति । मन्द = मन्द बुद्धि, कान्त ।

हे हरि वले यदि परसबि मोय ।
 तिरिविधि पातक लागय तोय ॥
 तुम रस आगर नागर ढीठ ।
 हम न बुझिय रस तीत कि मीठ ॥
 रसपरसङ्ग उठय हिय कांप ।
 वान हरिनि जनि कयलहि भांप ॥
 असमय आस न पूरय काम ।
 भल जन करे न विरस परिनाम ॥
 विद्यापति कह बुझलहु सांच ।
 फलहु सुमीठ न होयत कांच ॥१२॥

तिरिविधि = तीनों प्रकार अर्थात् मान्सिक, कायिक और वाचनिक । भांप =
 आम्ह, कूदना । भल जन = अच्छे लोग ऐसा काम नहीं करते जिस का फल
 नोरस हो ।

हम अबला तुहुं बलमत नाह ।

जीवक बदले पेस निरवाह ॥

पठि मनसिज मत दरसह भाव ।

कउतुके करिवर करिनि खेलाव ॥

परिहरु कन्त देहु जिवदान ।

आज न होयत निसि अवसान ॥

दीन दया नहिं दारुन तोहि ।

नहिं तिरिविधि डर हृदय न मोहि ॥

रमन सुखे जों रमनी जीव ।

मधुकर कुसुम राखि मधु पीव ॥

भन विद्यापति बहु रसमन्त ।

रतिरस रभस होय नहिं अन्त ॥१३॥

बलमत = बलवन्त, बलवान । मत = मन्त्र । आज &c = आज की रात पूरी न होगी, उस के पूर्व ही मेरा प्राण निकल जायगा ।

बामा बयन नयन वह लोर । कांप कुरङ्गिनि केसरि कोर ॥

एक गह चिकुर दोसर गह गीम । तिसर चिबुक चउठे कुच सीम ॥

निविँध फोयक नहिं अवकास । पानी पचमक वाढ़ल आस ॥

राधा साधव प्रथमक भेलि । न पुरल काम मनोरथ केलि ॥

भन विद्यापति प्रथमक रीति । दिन दिन बाला बुझति प्रीति १४

चिकुर = केश । दूसरे पद में साधव को कवि ने चतुर्भुज मूर्ति वर्णन किया है फोयक = खोलने का । पानी &c = पाचवें हाथ की लालसा बढ़ी ।

हृदय आरति बहु भय लनु कांपे । नुतन हरिनि जनि हरनकरु भांपे ॥

मुखल चकोर जनि पिवइत आस । येसन समय मेघ नहिं परकास ॥

पहिले समागम रस नहिं जान । कत कत काकू करताहि कान ॥

परिरम्भन बेरि उठई तरास । लाज बचन नहिं कर परकास ॥
 भन विद्यापति इह नहिं भाय । जे रसवन्त सेही रस पाय ॥१५॥
 तरल नयन सर अथिर संधान । नविन सिखायल गुरु पचवान ॥
 अगयाने कउन करय वेवहार । बले नहिं लेउत जिवन हमार ॥
 आरति न करु कान न धरु चीर । हम अबला अति राति-रन-भीर ॥
 प्रथम वयस लेसन पुरब आस । न पुरे अज्ञप धन दारिद प्यास ॥
 माधवि मुकुलित मालाति फूल । तोहे नहिं भुखल भमर अनुकूल ॥
 अनुचित काजे भल नह परिनाम । साहस करिये न संशय ठाम ॥
 भन विद्यापति नागर कान । मातल करि नहिं अंकुश मान ॥१६॥

लेउत = लो । आरति = आग्रह प्रकाश । भीर = भौर । लेख = लेखमात्र ।

निवि बन्धन हरि किय करदूर । यहो पय तोहर मनोरथ पूर ॥
 हेरले कउन सुख न बुझ विचारि । बड़ तुहु ढीठ बुझल बनमारि ॥
 हमर सपथ जों हेरह मुरारि । लहु लहु तब हम पारवि गारि ॥
 बिहर से रहसि हेरल कउन काम । से नहिं सहबहि हमर परान ॥
 कहुं नहिं सुनि ये मति व्यवहार । करये बिलास दीप लइ जार ॥
 परिजन सुनि सुनि तेजब निसास । लहु लहु रमह सुपरिजन पास ॥
 भन विद्यापति एहो रस जान । राजा सिवसिंह लखिमा रमान ॥१७॥

किय = क्यो । बिहर से रहसि = गोपन रिति से बिहार करो । रमह = बिहार करो ।

रति सुविसाद तुहु, राखो मान । बाढ़िले यौवन तोहे देवो दान ॥
 अवे से अलप रस न पुरब आस । थोरि सलिल तुय न जावपियास
 अलप अलप यदि चाहो नीति । प्रतिपद चान्दकला सम रीति ॥
 थोरि पयोधर न पुरब पानि । न दिहो नख रेह हरि रस जानि ॥
 भन विद्यापति कैसन रीत । कांच दाड़िम प्राति ऐसन प्रीत ॥१८॥

[८१]

नोति = नित्य, प्रतिदिन- । रेह = रेखा ।

परसे बुझल तनु सिरिसिक फूल । बदन सुसौरभ सरसिज तूल ॥
 मधुर बानि सरे कोकिज साद पिउली अवर मुख अमिय सवाद
 सुन्दरि बुझलि तोहर विवेक । चारि जेउल भरि, भूखल एक ॥
 वासर देखहि न पारिय सूर । दुतिक बचन अयलहुँ अति दूर ॥
 पउलहि सीतल पानि विसेख । हरह पियास कि करवह देख ॥
 भन विद्यापति सुन बनवारी । नयनक आतुर रहल मुरारी ॥१६॥

साद = शब्द । एक = नेत्र । पिउली = पान किया । चारि &c = अपर इन्द्रियों को तृप्ति हुई किन्तु अशकार के कारण नेत्र रूप को नहीं देखा सके ।
 पउलहि...देख = अति शीतल पानी मिला है, प्यास बुझा लो, देख कर क्या होगा ।

थरहरि काँपल लहु लहु भास । लाजे बचन न करे परकास ॥
 आजु धनि पेखलि वड़ वीपरीत । छने अनुमति छने मानइ भीत ॥
 सुरतिक नाम सुदइ दुइ आँखि । पाउल मदन महोदधि साखि ॥
 चुम्बन समय करय मुख बड्क । मिललहु चाँद सरोरुह अड्क ॥
 नीविबंध परसे चमकि उठे गोरी । जानल मदन भंडारक चोरी ॥
 खुलय वसन हिय भुज बहु साठि । बाहिर रतन आँचर देइ गाँठि ॥
 विद्यापति कि बुझव बज हरी । तेजि तलप परिरम्भन बेरि ॥२०॥

तलप = तल्प, शय्या । परिरम्भन = आलिङ्गन । जानल &c = उस ने जाना कि अब मदन के भंडार को चोरी होगी । द्विया &c = वक्षस्थल को करों से वेष्टित कर छिपा लिया सानो बाहर आँचर (स्तनों पर गाँठ दे दिया) ।

अबला अंसुक बालम लेला । पानिपलव धनि आँतर देला ॥
 हठ न करिह पटु न पुरव काम । प्रथम कर भस विचारक ठाम ॥
 मदन भंडार सुरति रस आनी । मोहुर मुँदल अछु असमय जानी ॥

[८२]

मुकुलित लोचन नहिं परगास। काँप कलेवर हृदय तरास ॥
 अब नवजोवन समय निहारी। अपनहिं बेकत होय परचारी ॥
 भन विद्यापति नव अनुरागी। सहिय पराभव पिय हित लागी २१

अंसुक = अंशुक, वस्त्र। पानिपलव... देला = खीने हाथ की ओट से बदन को छिपा लिया। रभस = भोग, आनन्द। अछ = है। मोहर &c = स्नानरत्न को छिपाया है। मुकुलित &c. = नेत्रों को कल के समान मूँद लिया। पराभव = तिरस्कार।

जखन लेल हरि कँचुअ अछोड़ी। कत परजुगुति कयल अङ्ग मोड़ी
 तखनुक कहिनी कहहि नहि जाइ। लाजे सुमुखि धनि रहलि लजाइ
 कर न बुझाय दूर जरे दीप। लाजन मरय नारि कठजीव ॥
 आँकम कठिन सहय के पार। कोमल हृदय उखड़ि गेला हार ॥
 भन विद्यापति तखनुक भान। कउन कहल सखि होत बिहान ॥२२

कँचुअ = कंचुकी। अछोड़ि खेल = उतार लिया। परजुगुति = प्रयुक्ति। कहहि = कहल, कहा। रहलि लजाइ = बोल नहीं सकी। आँकम = आलिङ्गन। हार = हार का चिन्ह।

नवकुच नख देखि जिउ मोर काँपे। जनु नव कमल अमर कर भाँपे
 टूटल गीमक मोतिम हार। रुधिर भरल किय सुरँग पनार ॥
 सुँदर पयोधर नखछत मारी। केसरि जनु गजकुम्भ विदारी ॥
 पुन न जाइव धनि सो पिय ठाम। जीवन रहिले पुराइव काम ॥
 भन विद्यापति सुन्दरि आज। अनल पुड़िले पुनि अनले काज २३

नवकमल &c = नव कुच कमल को नखरूपी अमर ने मानो आच्छादित किया है। टूटल.....पनार = लाल मोतीहार स्नान के बीचमें आ पड़ा है, जान पड़ता है मानो सुरंग नाला रक्तसे भर गया हो। काम = इच्छा। पुड़िले = जलने से।

हृदय तोहर जानि न भेला। पाक रतन आनि मों देला ॥

कयली माधव हमहि अकांज । हाथि मेराउलि सिंह समाज ॥
 राखहु माधव मोरी बिनती । देहु परिहरि हरि पुरजुवती ॥
 चुम्बने नयन काजर गेला । दसने अधर खण्डित भेला ॥
 पीन पयोधर नखर मन्दा । जनिय महेसर सीखर चन्दा ॥
 न मुख बचन न चित थीर । काँपे घन हने सवै सरीर ॥
 घर गुरुजन अरु दुरजन सङ्का । न गुनह माधव मोहि कलङ्का ॥
 कवि विद्यापति भान । आनक वेदन नह बुझे आन ॥२४॥

जानि न भेला = जान नहो सकी । मों = मैं । अकाज = प्रत्याय ।

गरवे न करु दृढ लुबध मुरारी । तुय अनुराग न जिय वर नारी ॥
 तुहं नागरगुरु हम अगेआन । केलिकला सब तुहं भले जान ॥
 खुल्य कवरि मोर, टूटल हार । हम त अवुझ नारि तुहं त गँवार ॥
 विद्यापति कह कर अवधान । गोरि करै ऐसे औषद पान ॥२५॥

चानुरमरदन तुहं बनमारी । सिरिस कुसुम हम कमलिनि नारी ॥
 दुति बड़ दारुन साधल काम । करि करे सौंपल मालाति दाम ॥
 अञ्जन नयन निरञ्जन भेल । मृगमद चन्दन बहि सब गेल ॥
 विदग्ध माधव तोहि प्रनाम । अवला बलि दे न पूजहु काम ॥
 ये हरि ! ये हरि ! करु अवधान । आन दिवस लागि राखहु प्रान ॥
 रसवति नागरि रस मरिजाद । विद्यापति कह पूरब साध ॥२६॥

चानुर = चाण्डूर कांस का नामी योधा । दाम = द्वार । अवधान = मनोयोग ।

ये हरि माधव कि कहव तोय । अवला बल कय महत न होय ॥
 चीकुर उधसल टूटल हार । नखघाते विदरल पयोधर भार ॥
 दंसनहिं दंसल तुहु बनवारी । सिरिसकुसुम हेरि कमलिनि नारी ॥
 भन विद्यापति सुनु बरनारी । आगिक दहन आगि प्रतिकारी २७

उधसल = उकसल, बिखड़ गया। अवका &c = अवकाश पर बल करने से बड़ाई नहीं होती। नखघात = नखचत, नोह की चोट से।

हम अति भीति रहनु तनु गोइ । से रससागर थिर नहिं होइ॥
रस नहिं होयल कयल जे साती । मदनलता जनु दंसल हाती॥
कत काकुती कयल अनुकूल । तबहु पाप हिय मो नहिं भूल ॥
हमर अछल कत पुरबक भागी । फिरि अइली हम से फल लागी॥
विद्यापति कहे न करहु खेद । इछन होयल पहिल संभेद ॥२८॥

रहनु = रहलि, रही । साती = सासति । मदन-लता = धतूरा गाछ । मदन &c. = धतूरा छत्त का कण्टक भक्षण करने से जैसे हस्ती को क्षेश मात्र लाभ हो, भोजन का सुख न मिले । काकुती = मिनति । अछल = था । संभेद = मिन्नन ।

जाति पदुमिनी सहती कता ॥ गजें दमसलि दमन लता ॥
लोभे अधिक मूल न मार । जे मुल राखय से वनिजार ॥
अछल जोरी सिरीफल आती । कयलह छोल नरंगी काती ॥
भन विद्यापति न करह लाथ । भूखल खाय न दुहु हाथ ॥२९॥

सहती कता = कितना सहे । गजें = गज से । दमसलि = दलित हुई । दमन = दँवना । लोभे अधिक &c. = अधिक लालच से मूल भी मत गवां दो । अछल काति = बेल ऐसे चिकने स्तन थे उन पर नखचत देकर उन्हें बड़ा नोष सा रखड़ा बना दिया । लाथ = छलना ।

पूछमो हे सखि पूछमो तोय । केलिकला रस कहबी मोय ॥
भूषन केस तोर छिला पूर । अलका तिलका मिटि गेला दूर ॥
कुसुम कली सब भेलि भिन भीन । अधरहि जागल दसनक चीन ॥
कौन अबुझ अस कुच नख देल । हा ! हा ! सम्भुभगन होइ गेल ॥
आलस पूरल सकलहि गा । बसन लेइ घन घन करु वा ॥
भन विद्यापति सुन वर नारी । सब रस लेयल रसिक मुरारी ॥३०॥

पूछमी = (प्रच्छ धातु लट् भस्, पृच्छामः - शब्दज, यहाँ एकवचन है)
 पृच्छामो, पूछती हूँ । भिन भौन = छिन्न भिन्न । चीन = चिन्ह । गा = वदन ।
 वा = वायु । आलस पूरल...वा = सारे शरीर में पसीना आ गया है वस्त्र से खूब
 वायु कर डालो जिस में वह सूख जाय ।

अव न लहति आइति मोरी । पर परतच्छे लखबी चोरी ॥
 बेर एक जिव राखु कन्हार्ई । परक पेअसी देहु पठार्ई ॥
 चुम्बन लेप सुकाजर धार । अधर निरस जे तोरल हार ॥
 नखछत देखह कुच जुग लागु । कइसे होइव गुरुजन आगु ॥
 भन विद्यापति रस सिङ्गार । प्रथम समागम तेजय के पार ॥३१॥

आइति = आयत्ति, मर्यादा । पर = अपर लोग । अव...चोरी = अब मेरी
 मर्यादा नहीं रहेगी, दूसरे लोग मेरी चोरी प्रत्यक्ष देख लेंगे । पेअसी = प्रेयसी
 लेप = चन्दन लेप । नखछत = नखचत ।

कि कहव हे सखि कहइत लाज । जोइ करल सोइ नागरराज ॥
 पहिल बयस कछु नहिं रतिरङ्ग । दूति मिलायल कानुक सङ्ग ॥
 हेरइत देह मों थर थर कांप । सोइ लुबुध मति तेहि करे भांप ॥
 चेतन हरल अलिङ्गन वेलि । कि कहव किये करल रस केलि ॥
 हठ करि नाह करल यत काज । सो कि कहव इह साखिन समाज ॥
 जानसि तब का करसि पुछारी । सो धन जो थिर ताहि निहारी ॥
 विद्यापति कह जनि करु त्रास । इछन होयत पहिल विलास ॥३२॥

जोइ करल = जो किया । वेली = बेर, समय । किये = क्या । धन = धन्य ।

कि कहव हे सखि रजनिक बात । बहु दुख भोगलिं माधव साथ ॥
 कर कुच भांप अधर मधुपान । वदन बदन दय बधले प्रान ॥
 नव यौवन तें रस परचार । रतिरस जाने न कान्ह गंवार ॥
 मदनविभोर कछु नहिं जाने । कतय भिनति करि तब नाहि माने ॥

भन विद्यापति सुने वर नारी । तुहु मुगधिनि सो लुबुध मुरारी३३

मुगधिनि = अज्ञान । लुबुध = लुब्ध, लोभी ।

हरि कर हरिननयनि तब सोंपी, सखिगन चलु अनु ठाम ।
से अवसर धनि कर धरि नागर, विनाति करय अनुपाम ॥

हरिननयनि धनि रामा ।

कानुक सरस परस सम्भापन मेटल लाजक धामा ॥
सुखद सेज पर नागरि नागर वैसल नवरति साधे ।
प्रति अंग चुम्बन रस अनुमोदन थर थर कांपय राधे ॥
मदन सिंहासन करल अरोहन मोहन रसिक सुजान ।
भय गढ़ तोड़ल अलप समाधल राखल सकल समान ॥
कह विद्यापति गरुअ भूखभर करु जल थोर अहार ।
ऐसन दुहु मन तलपड़ पुन पुन उपजल अधिक विकार॥३४॥

अनु = अन्य । अनुपाम = अनुपम । समाधल = समाधान अर्थात् तुष्टि किया ।
समान = सम्मान । भूखभर = क्षुधित होने पर ।

आयल माधव पाउल धाम । सम्भ्रम जागल मनमथ गाम ॥
धनि मुख ढाँकि रहलि इक पास । बादर तर ससि रहल तरास ॥
चलि सब सखि जन इक्षित जानि । करतल नाह धरल धनि पानि ॥
रूठ बलय किय भनभन बाज । बाला किछु न कहे भय लाज ॥
कत कत सखिजन करय उपाइ । धनि मुखचन्द कबहु न दिखाइ
रतिरस परिडत नागररङ्ग । चापि धरल धनि बेनि भुजङ्ग ॥
दाहिन हाथ चिबुक गहि राख । सम्भ्रम बदनइन्दु रस चाख ॥
नयन चकोर अमिय रस पीवे । अपुरुब दुहुक जीउ तब जीवे ॥
भुज धरि आनल कुसुम सयान । जनम सफल मानल पँचवान ॥

सधन अलिंगन निर्भय केलि । बल्लभ मानस साफल भेलि ॥३५॥

बलय = हाथ पांव के कड़े आदि । रूठ बलय &c. = चिड़ करके बलयादि एक स्वर से बोलने लगे । कत कत &c. = सखियां ने भांककर रमणी का मुख देखने का कितना उपाय किया परन्तु देख न सकीं । जिउ तब जीवे = प्राण तब बचा आनन्द पाने से । सयान &c. = खेल । मानस &c. = मनसा पूर्ण हुई ।

कह सखि सांमरिं भामरिं देह । कोन पुरुष सों नयली नेह ॥
अधर सुरंग जनु निरस पनार । कोन लुटल तुय अमिय भण्डार ॥
रंग पयोधर अति भेल गोर । माँजि धरल जनु कनयकटोर ॥
न जइह सो पिय तेहि एक गुन । फिर आउलि तुहु पुरवक पुन ।
कवि विद्यापति इह रस जान । राजा सिव सिंह लछिमा परमान ॥

सांजि = धो कर । कनय = कनक, सोना । एक गुन = अर्थात् तुम पर खेह, कथवा उस में यह एक गुण है कि उस (क्षण) के पास जो जाता है वह लपटता नहीं, उसी का हो रहता है अतएव उस माधव निकट न जाना आज भाग से फिर आई हो ।

सखि मधुरिपु भेटल सो हटिआं ।

लोचन जुगल जुड़ायल बटिआं ॥

दरसन लोभ पसार देलि हम सखि मुख सुनि वड़ रसिया ।
तखन उपजु रस भेलिहु माँ परवस विसरल दूधहु कलसिया ॥
मधुरिपु सम नहि देखिअ सुहाउन जे दिअ तन्हिक उपाम रे ।
सरद सुधानिधि जसु मुख नैयोंछन पंकज की लेवो नाम रे ॥
अधरो लोचन जखन निहारलहीं बांक कहय भाव भङ्ग रे ।
तखनुक अवसर जागल पचसर थाने थाने गेला अङ्ग रे ॥
दान कल्पतरु मेदिनि अवतरु नृपति हिन्दु सुलतान रे ।
मेघा-देवि-पति रूपनरायन विद्यापति कंठहार रे ॥ ३७ ॥

मधुरिपु = मधुसूदन । उपास = उपमा । नियोद्धन = निष्कावर । अधरोलोचन
= आधी आंख, कनखी । अवतर = अवतीर्ण हुआ ।

सामर सुन्दर यहि बाटे आयल, तें मोरि लागलि आंखी ।
आरति आंचर साजि न भेला सबे सखी जन साखी ॥
कहहू मों सखि कहहू मों सखि कतये ताकर बासा ।
दूरहु दुगुनहुं यड़ि मों आउब पुन दरसन कहँ आसा ॥
कि मोरा जीवन कि मोरा जौवन कि मोरा चतुरपने ।
मदनबान मुखली अछनों जिव सहनो जिव अपने ॥
आधे पद जो धरत मोरा देखल नागर समाजे ॥
कठिन हृदय भेदि ना भेला जाउ रसातल लाजे ॥
सुरपति पाय सुलोचन मागों गरुड़ मागों पाखी ॥
नन्देरि नन्दन मों देखि आवलों मन मनोरथ राखी ॥३८॥

तें = उसी से, उस से । आरती = अनुगम के आवेग से । कतये = कहाँ ।
बासा - निवासस्थान । यड़िमों आउब = तयकर आजंगो । कि = क्या फल ।
मुखली अछनों = मूर्च्छित हुई हूँ । सहनों = सहती हूँ, भार ढोती हूँ । आध पद
&c = एक पद आगे पड़ते उस नगरवासी चतुर ने लोगों के सामनेही मुझे
देखा । भेदि = विदोष । पाखी = पंख ।

* यह गीत नयपाल की पोथी में है; इस में भणिता नहीं है । नयपाली
पोथी के गीतों में भणिता प्रायः नहीं पाई जाती है ।

अधर मगइत अउंध कर माथ । सहय न पार पयोधर हाथ ॥
विघटल नीबी करे धरि जाँति । अँकुरल मदन धरय कत भाँति ॥
कोमल कामिनि नागर नाह । कोने परि होयत केलि निवाह ॥
कुच कोरक तव कर गहि लेल । कांच बदरी अरुन रुचि भेल ॥
जावय चाहिअ नखर बिसेख । मोह न आवय चान्दक रेख ॥

तसु सुख सों लोभे रहु हेरि । चान्द भूपाव वसन कत बेरि ॥३६॥

अधर = अधर का चुम्बन । अंठंथ करमाय = सिर नोचाकर लेतो है । विघटल = खुली हुई । भांति = रूप । कोने पर = क्यों कर । बदरी = बड़र । नखर = नखचत । मोंह...रेख = भु भङ्ग नहीं करती । अरुन रुचि भेल = लाल रङ्ग ऐसा हो गया ।

कोमल तनु पराभव पाउव, तेजि न हलवी तेहुँ ।

भमर भरे कि मांजरि भांगय, देखल कतहुँ केहु ॥

माधव बचन धरब भोर ।

नहिं नहिं कयले न पतिआयव, अपद लागत भोर ॥

अधर नीरसि धूसर करव, भाव सु उपजत भला ।

छने छने राति रभंस अधिक, दिने दिने ससिकला ॥३७॥

तेजो &c = चप्ते छोड़ न देना । भांगय = टूटे । अपद = अग्रग ।

बारि विलासिनि जतने आनलि रमन करब राखी ।

जैसे मधुकर कुसुम न तोड़े मधु पीवे मधुमाखी ॥

माधव करब तैसनि मेरा ।

बिनु हँकार तुय निकेतन आवय, जोहि मों दोसरि बेरा ॥

सिरिसकुसुम सम कोमल ऊ धनि, तोहहुं कोमल कान ।

इंगित उपर केलि करव जे, जे न पराभव जान ॥

दिन दिन दूनों पेम बढ़ाउव, जैसे बाढसि ससी ।

कौतुकहु किलु बाम न बोलव, परथम भीलव हंसी ॥३८॥

मेरा = मेला, मिलन । जेन पराभव = जिस में तिरस्कार न समझे ।

हरि बड़ गरवि गोपी माँकेबसई । ऐसन करवि जासैं बैरि न हसई ॥

परिचय करवि समय भलचाई । आजु बुझव हम तुय चतुराई ॥

पहिलहि वैठवि स्याम करि बाम । सँकेते जनायव हमर परनाम ॥

पुछत कुसल उलटायवि पानि ।
 बचन न बांधवि सुनह सेयानि ॥
 हरि यदि फेर पुछय धनि तोय ।
 ईंगित निवेदन जनायाव मोय ॥
 जब चित देखवि बड़ अनुराग ।
 तेखन जनाइव हिय जनु लाग ॥
 सखिगन गनइत तुहुँ से स्यानि ।
 तोहें कि सिखायव चतुरि भवानि ॥
 इह रस विद्यापति कवि भान ।
 मान रहुक पुन जाउक प्रान ॥ ४२ ॥

बसइ = बैठ कर । चाइ = देख कर । संकेते = इशारा से । बचन न बांधवि
 = बात का योग न देना अर्थात् उत्तर न देना ।

देखलि कमल मुखि कोमल देह । तिल एक लागि
 कत उपजल नेह ॥ नूतन मनसिज गुरुतर लाज । बेकत
 प्रेम कत करय बेआज ॥ छन परितजय छन आवे पास ।
 न मिलय मन भरि न होय उदास ॥ नयनक गोचर थिर
 नहिं होय । कर धरइत धनि मुख धर गोय ॥ भन विद्या-
 पति यह रस गाव । अभिनव कामिनि उकृति बुझाव ॥ ४३ ॥

बेआज = बहाना, प्रेम छिपाने के लिये । गोचर = कटाक्ष ।

बिह मोर परसन भेल । रघुपति दरसन देल ॥
 देखलि बदन अभिराम । पुरल सकल मन काम ।
 जागि उठल पंचवान । बसि नहिं रहल गेआन ॥
 भन विद्यापति भान । सुपुरुष न करे निदान ॥ ४४ ॥

परसन = प्रसन्न । बसि...ज्ञान = अपनी बुद्धि वश में नहीं रही ।

कैतुक चललि भवन के सजनी गे, सँग दस चौदिसि
 नारी । बिच सोभित सुंदरि सजनी गे, जनि घर मिलब
 मुरारी ॥ लै अभरन के खोड़स सजनी गे, पहिरि उतिम रँग
 चीर । देखि सकल मन उपजल सजनी गे, मुनिहुक चित
 नहिं थार ॥ नील वसन तन घेरलि सजनी गे, सिर लेलि
 घोघट सारी । लग लग पहु के चलइति सजनी गे, सकुचल
 अंकम नारी ॥ सखि सब देख भवन कय सजनी गे, घुरि आयलि
 सभ नारी । कर धय खेल पहु लगे के सजनी गे, हेरै वसन
 उधारी ॥ भय घर सनमुख बोले सजनी गे, करे लागल सवि-
 लासे । नव रस रीत पिरिति भेला सजनी गे, दुहु मन परम
 हुलासे ॥ विद्यापति यह गावल सजनी गे, इधिक नव रसरीति ।
 बयस जुगल सम चित थिक सजनी गे, दुहु मन परम पिरिति ४५

कैतुक = कैतुक भवन के = कीहवर में । उपजल = प्रेम जगा । घोघट
 सारी = घूँघट करने के लिये सारी पर्याप्त चादर । लग &c. = स्वामी के निकट
 पहुँचते ही संकोच से सखियों को गोद में समा गयो । वर = स्वामी ।

प्रथम समागम भेल रे । हठहि रहनि बिति गेल रे ॥
 अमर करै कत भाय रे । अमरीके किछु न सोहाय रे ॥
 नव तनु नव अनुराग रे । विनु परिचय रस मांगुरे ॥
 सारन तजि पहु गेल रे । जौवन उमगत भेल रे ॥
 अब न जिअब विनु कंत रे । आय जिवन भेल अन्त रे ॥
 भन विद्यापति भान रे । रसिक पुरुष रस जान रे ॥४६॥

भाय = भाव । सारन = स्त्री । आय &c. = अब जीवन आ के अन्त हुआ ।

माधव सिरिस कुसुम सम राही ।

लोभित मधुकर कौसल अनुसर नवरस पिवु अवगाही ॥
 पहिल वयस धनि पहिल समागम पहिलुक जामिनि जामें ।
 आरति पति परतीत न मानथि कि करथि केलिक नामें ॥
 अंकम भरि हरि सयन सुतावल हरल बसन अविसेखी ।
 चांपल रोस जलज जानि कामिनि मेदनि देल उपेखी ॥
 एक अधर दै नीवि निरोपलि दू पुनि तीन न होई ॥
 कुच जुग पांच पांच ससि उगल किलय धरथि धनि गोई ॥
 आकुल अलप बेआकुल लोचन आंचर पूरल नीरे ॥
 मनमथ मीन बनसि लय बेधल देह दसो दिसि फीरे ॥
 भन विद्यापति दुहुक मुदित मन मधुकर लोभित केली ।
 असहल सहथि कत कोमलकामिनि जामिनि जिव दयगेली ४७

अनुसर = अनुसरण कर, पीछा कर । अवगाही = स्नान कर, डूब कर ।
 पहिलुक &c = उस में भी पहिली रात है । देल उपेखी = हृद भर कमोन पर
 दबाया । एक = एक हाथ । अलप = अलाप, बचन । आंचर = अंचरा ।
 जिव &c. = मानो प्राणान्त हो गया ।

आज देखलि सखि बाड़ि अनुमनि सनि, बदन मलिन मुख तोरा
 मंद बचन तोहि केह कहल अछि, से न कहहु कछु मोरा ॥
 आजुक रइनि सखि कठिन बितलि अछि, कान्ह रभस कर मंद
 गुन अबगुन पहु एको न बुझलन्हि, राहु गरासल चन्दा ॥
 अधर सुखायल केस ओभरायल, घामे तिलक बहि गला
 बारि बिलासनि केलि न जानथि, भाल अरुन मंद भेला ।
 भन विद्यापति सुनु वर जौमति, भेद कहय मन हांसे
 जे किछु पहु देल आंचर भांपि लेलि, सखि सभ कर उपहासे ४८

अनुमनि = उदास । घामे = प्रसौना से । अरुन = ईश्वर । के किछु &c. = सामो
जो कुछ दिया अर्थात् नक्षत् उधे आंचर से छिपा लिया ।

सुरत समापि सुतल वर नागर, पानि पयोधर थापी ।
कनकसंभु जनि पूजि पुजावे, धयल सरोरुह भांपी ॥
सखि हे माधव केलि विलासे ।

मालति रमि अलि नाइ अगोरथि, सुनु रति रंगक आसे ॥
बदन मिलाय धयल मुख मंडल, कमल विमल जनि चंदा ।
भमर चकोर दुओ अलसायल, पीवि अभिय मकरंदा ॥
भन विद्यापति सुनु मथुरापति, राधा चरित अपारा ।
राजा सिव सिंह रूपनरायन, प्रानवती कँठहारा ॥४६॥

समापि = समाप्त कर । पानि &c. = स्नानों पर हाथ रख कर । नाइ =
न्याई, सदृश । अगोरथि = अगोरता है । प्रानवती = शिव सिंह की रानी जो
उन्हें गले के हार से ही रही थी ।

कि कहव ए सखि केलिविलास । विपरितसुरत नाह अभिलास ॥
कुच जुग चारु धराधर जानी । हृदय पड़त तें पहु देला पानी ॥
मातल मनमथ दुरिगेला लाज । अविरल किंकिनि कंकन बाज ॥
घामविन्दु मुख सुन्दर जोती । कनककमल जनु फरिगेला मोती ॥
कहि नहिं परय पहु मुख भास । समुख निहारि दुहू मन हास ॥
भन विद्यापति रसमय बानी । नागरि रस पिय अभिमत जानी ॥

चारु = सुन्दर । धराधर = पर्वत । अविरल = लगातार । घाम...मोती =
सुन्दर मुखयोति पर प्रसौना ऐसा भान होता था मानो सोने के कमल में
मोती फला हो ।

उठु उठु सुन्दरि सुभ कय आजु । ततमत कैने नहिं बने काजु ॥
धानि अति कोमल आकुल कंत । किहि विधि होय केलि परिवंधा ॥
सखि सब बोधि सेज देलि आनि । इषि पिया गहि भैलन्हि पानि ॥

नहिं नहिं कहत नैन भर नोर । कांच कमल भमरा भिकभोर ॥
थिर न रहै केदलि जस कांप । आंचर फेरि अपन मुह भांप ॥
भनहि विद्यापति तखनुक रीति । जुग २ बाढे पहु सों प्रीति ५१

सुभ &c. = आज का दिन सुफल कर । ततमत = आगपौछ । परिवंध =
प्रबन्ध । केहि विधि = किस रीति से । नोर = लोर । तखनुक = उस समय की ।
कर कुच मंडल रखलहु गोइ । कमलकनक गिरि भांपि न होइ ॥
हरख सहित हेरलहु मुख कांति । पुलकित तनु मोर धरकत भांति ॥
तखन हरल हरि आंचर मोर । रस भर सरक कसनि के डोर ॥
सपना इक सखि देखलि आज । तखनुक कौतुक कहइत लाज ॥
आनंद नोर नयन भरि गेल । प्रेमक आंकुर पल्लव देल ॥
विद्यापति कवि कौतुक गाव । राजा सिवासिंह बुभरसभाव ॥५२॥

कर &c. = कर से कुचमण्डल छिपाने से भी नहीं छिप सका क्योंकि सोने के
कमल से कहीं पहाड़ नहीं छिपता । कसनि = कंचुकी । डोर = बन्द ।

हे हरि हे हरि सुनिय सवन भरि, अब न विलासक बेरा ।
गगन नछत छला सेहो अबेकत गेला, कोकिल करइछ फेरा ॥
चकवा मोर सोर कय चुप भेला, ओठ मलिन भेला चन्दा ।
नगरक धेनु डगर के संचर, कुमुदिनि बसु मकरंदा ॥
मुखकर पान सेहो रे मलिन भेला, अवसर भल नहिं मंदा ।
विद्यापति भनइहोन निकथिक, जग भरि करइछ निंदा ॥५३॥

सवन भरि = ध्यान दे कर । फेरा = अपने नियत समय पर बोल रहा है ।
फेरा पहरियों के गश्त की कहते हैं । अवसर &c. = विलास का अब समय नहीं है ।

ये सखि काहे कहसि अनुयोग ।

कान सों अबहि करबि प्रेम भोग ॥

कोले लेव सखी तुहंक पीया ।

हम चलली तुहु थिर कर हीया ॥
 यह कहि कान मिलल सो सखी ।
 प्रेमक रीति कहल सब दुखी ॥
 सुनतहि कान धावल धनि पास ।
 विद्यापति कह अधिक उलास ॥ ५४ ॥

अनुयोग = अयोग । प्रेम = प्रेम ।

मान ।

अरुन पुरबदिसि बहल सगर निसि गगन मगन भेला चन्दा ।
 मुनि गेला कुमुदिनी, तइओ तोहर धनि मूनल मुखअरविन्दा ॥
 कमलबदन कुबलय दुइ लोचन अधर मधुरि निरमान ।
 सकल सरीर कुसुम तुअ सिरजल किअ तुअ हृदय पखान ॥
 असकत कर कङ्कन नहिं पहिरसि हृदय हार भेला भारे ।
 गिरि सम गरुअ मान नहिं मुअसि अपरुव तुअ व्यवहारे ॥
 अवगुन परिहरि हरखि हेरु धनि मानक अवधि बिहाने ।
 राजा सिवसिंह रूपनरायन विद्यापति कवि भाने ॥ १ ॥

बहल = बीत गयी । मगन भेला = अस्त हुआ । मुनि = मुंदि । अरुन.....
 अरविन्दा = पूर्व दिशा में सूर्य उदय हुआ, सारी रात बीत गई, चन्द्रमा डूब
 गया, कोई मुरझा गई तौभी तुम्हारा मुखकमल मान से मुंद रहा है विकसित
 नहीं होता । कुबलय = कमल, मधुरि = मधुर, माधुरीयुक्त (माधुर = मलिका
 पुष्प) । मुअसि = मोचन अर्थात् त्याग करती हो । अवगुन = अपगुन, क्रोध
 वा मान ।

हे धनि मानवि करहु संजात ।
 तुअ कुच हेम घट हार भुजंगिनी ताके उपर धरि हात ॥
 तौहे छाड़ि हम जो परसी कोय । तुअ हार नागिनि काटव मोय ॥

हमर वचन यदि नहु परतीत । बुझिय करहु साति जे हो उचीत ॥
 भुज पासे बांधि जघन पर ताड़ि । पयोधर पाथर हिय देहु पारि ॥
 उरकारागार बांधि राखो दिनराति । विद्यापति कह उचित य साति

संजात = संयत, संयम । नहु = नहीं हो । साति = सासति, दण्ड । ताड़ि
 = ताड़ना करके ।

की लागि भांपसि वदन सुन्दरि, हरसि चेतन मोर ।
 पुरुष वध कर भय करसि ना, बड़ो साहस तोर ॥

मानिनि ! आकुल हिरदय मोर ।

मदन वेदन सहत जात न, सरन लइली तोर ॥
 किं गिरिबर कि कनया कलसी, ता देखि लागय धन्द ।
 हियक ऊपर शम्भु पूजित, बेरिया वालकचन्द ॥
 ए करकमल परसित चाही, विहि न होय यदि वाम ।
 तोहर चरन सरन लइली, सदय हइबे राम ॥
 चञ्चल देखि व्याकुल हइली, आकुल भेला चीत ।
 कह विद्यापति सुनह युवती, कान्हर सो करु हीत ॥ ३ ॥

लागय धन्द = सन्देह होता है । बेड़िया = बेठित कर । परसित चाही = स्पर्श
 करना चाहता हूँ । वाम = प्रतिकूल ।

दिवस तिल आभ राखवि यौवन बहइ दिवस सब जाब ।
 भाव मन्द दुइ सँगे चलि जायब परउपकार से लाभ ॥

सुन्दरी हरि बधे तुहुं भेलि भागी ।

राति दिवस सोइ आन न भावय कालविरह तुअ लागी ॥
 विरहसिन्धु महुँ दुषइत आछय तुअ कुच कुँभ लखि देई ।
 तुहु गुनवती उधारु गोकुलपति त्रिभुवन भरि यशलेई ॥

लाख लाख नागरि जेहि हेरइ से सुभ दिन कर मान ।
तुअ अभिमान लागि सोइ आकुल कवि विद्यापति भान ॥४॥

तिल साध = तिलार्घ, अल्प । दिवस...जाव = यौवन दो दिन का है फिर
दिन के साथ वह भी ढल जायगा । सोइ = वह । भाग्य = चिन्ता करता है ।
लखि देख = देखने दो । यश लेई = यश लेकर ।

ये धनि मानिनि कठिन परानी । एतहु विपद तुहु ना कहसि बानी ॥
ऐसन है यह प्रेमक रीत । अब के मीलन होय समुचीत ॥
तोहर विरह जब तेजव प्रान । तब तुहु केहि सँभे साधवि मान ॥
के कहे कोमल अन्तर तोय । तोहँ सम कठिन हृदय नहिं होय ॥
अब यदि नहिं मिलु साधव साथ । विद्यापति तब न कहव वात ५ ॥

छोड़ल अभरन मुरलि विलास । पदतल लोटय सो पितवास ॥
जाक दरस विनु भारय नयन । अब नहिं हेरासि ताकर वयन ॥
सुन्दरि तेजहु दारुन मान । साधय चरन रसिक वर कान ॥
भागे मिलल यह साम रसवन्त । भागे मिलल यह समय बसन्त ॥
भागे मिलल यह प्रेम संगति । भागे मिलल यह सुखमय राति ॥
आजु यदि मानिनि तेजव कन्त । जनम गंवाइव रोइ एकन्त ॥
विद्यापति कहे प्रेमक रीत । याचित तेजि नहिं होय समुचीत ॥६॥

अभरन = आभरण । पितवास = पौतवासम्, पौतं वासो यस्य, श्राद्धस्थ । वयन
= मुख । साधय = साधन करता है, विनय कर रहा है । भागे = भाग्य से ।
साम = साम । संगति = सङ्गति । प्रेम संगति = प्रणय समावेश । याचित =
वाञ्छित वस्तु । तेजवि = त्याग करोगी । समुचीत = उचित ।

सुन्दर कुलसिल धनि वर यूवक कि करव लोचनहीन ।
कि करव तपजप दान अतादिक यदि करुना नहिं दीन ॥

ए सखि बूझि कहासि कटुवानी ।

ऐसन एक गुन बहु दोष नासय, एक दोष बहु गुन हानी ॥

गरलसहोदर, गुरु-पतनी-हर, राहु बदन उगार ।

बिरहदुतासन बारिजनासन, सिल गुन ससि उजियार ॥

परसुतअहित, यतन नहिं निज सुत, काक उछिट रस पानी ।

सो सब अवगुन ढांकल यकल पिक बोले मधुरी बानी ॥

कानक प्रितिकि कहब य सखि सब गुनमूल अमूले ।

वंसी परसि सपथ सत सत करे तबहु प्रतीत न बोले ॥

पुन परिरम्भन चुम्बन कोरे करि संकेत कर विश्वास ।

आन रमनि सों सो निसि वञ्चल मोहे करल निरास ॥

अनलहु अधिक मो तन दहई रतिचिन्ह लखि प्रति अङ्गे ।

विद्यापति कह जिउ मोरनिकसब तँउ न मिलव हरि सङ्गे ॥७॥

कुल सिल = कुल शीलवान । धनि = धनी, धनाढ्य । गरल सहोदर = विष का भाई गुरु &c = ब्रह्मसूत्र की पत्नी तारा की हरण करनेवाला । उगार = उद्गार उद्गमन । उछिट = उच्छिष्ट । पानी = पान करने वाला । यकल = अकेला, केवल । अमूले = मूल्यहीन, अपदार्थ । सब = एक प्रीति ने श्याम के सब गुण को अपदार्थ कर दिया है । सङ्केत &c. = सङ्केत में मिलने का विश्वास दिला कर निसिवञ्चल = रात बिताई ।

लोचन अरुन बुझलि बड़ भेद । रैनि उजागरि गरुअ निवेद ।

ततहि जाहु हरि न करहु लाथ रैनि गमौलह जिनि कै साथ ॥

कुच कुँकुम माखल हिय तोर । जनि अनुराग रागि कर गोर ।

आनक भूषण लागल अंग । उकुति बेकत होय आनक संग ॥

भन विद्यापति बजबहु बाध । बड़क अनय मौन पय साध ॥८॥

उजागरि = उजियार । गुरुअ = गुरुता, गुरुभेद । निवेद = निवेदन करता है ।

लाय = वहाना । कुंकुम = रंग विशेष । रागि = रङ्गकर । कुच...गोर = कुच का कुंकुम तुम्हारे छातों पर ऐसा दीखता है मानो अनुराग तुम्हारे काले रंग को रङ्ग कर गौरा बना दिया है । उकुति &c. = प्रकट करता है कि आप दूसरे के सङ्ग थे । बजबहु बाध = बोलना व्यर्थ है । अनय = अन्याय ।

अवनत-वयनि धरानि नख लेखं । जे कहे स्याम ताहि नहिं पेख ॥
असन वसन परि विगलित केस । अभरन तेजलि भांपलि भेस ॥
नीरस अरुन कमल वर वयनी । नयनक नोर जात वहि धरनी ॥
एसन सनय आयलि वनदेवि । कहय चलहु धनि भानुक सेवि ॥
अवनत-वयनि उतर नहिं देली । विद्यापति कह सो चलि गेली ६

अवनत-वयनी = सिर झुकाये हुये रमणी । परि = परित्याग कर । विगलित = बिखड़े हुए । नीरस...वयनी = फीकी अरुणज्योति से मलिन थोड़ा कमल जैसे मुखवाली अर्थात् मलिन बदनी । भानुक सेवि = सूर्य की पूजा करें ।

सुन माधव ! राधा स्वाधिन भेली ।
यतनहि कत परकार बुझावल तबु धनि उतर ना देली ॥
तोहर नाम सुनय जब सुन्दरि श्रवन मुदय दुइ पानी ।
तोहर पिरीति जो नव नव मानइ सो अब सुनय न बानी ॥
तोहर केस कुसुम तृण तम्बूल, धयलाहि राइक आगे ।
कोपि कमल मुख पलाटि न हेरइ बैसलि विमुख विरागे ॥
अलि बुझि कुलिससार तलु अन्तर कैसे मिटायव मान ।
कह विद्यापति वचन ये समुचित आप सिधारहु कान ॥१॥

बानी = तुम्हारी बात । तोहर केश इत्यदि = अर्थात् केश, कुसुम, तृण तथा ताम्बूल भेज कर श्री कृष्ण ने यह सङ्केत किया था कि मैं ने अपराध किया है, इस लिये केश मुड़ाने पर राजी हूँ, क्षमा कर के अनुरागप्रेरित कुसुम ग्रहण करो । दांत में तृण ले कर कहता हूँ कि ऐसा अपराध फिर कभी नहीं करूँगा, मेरे प्रणय और अपनी क्षमा के निदर्शन

स्वरूप यह ताम्बूल ग्रहण करो । ” अथवा “ यदि तुम दया नहीं करोगी तो मैं केश मुड़ा कर संन्यासी हो जाऊँगा ; मेरी अब वह पुष्पशय्या नहीं है, अब तो मैंने तृणशय्या ली है, तब यदि तुम मेरा प्रणयोपहार यह ताम्बूल ग्रहण करो तो मेरी रक्षा हो ” । कुलिससार = बज्र । तकु = उस का । सिधारहु = जाव ।

बड़ जन जाकर पिरीत रे । कोपहुँ न तजय रीति रे ॥
काग काँड़ल एक जाति रे । भेम भमर एक भांति रे ॥
हेम हरादि कत बीच रे । गुनहिं बुझिय उँच नीच रे ॥
मनि काँदव लपटाय रे । तें कि तनिक गुन जाय रे ॥
विद्यापति अवधान रे । सुपुरुष न करु निदान रे ॥११॥

बड़ जन . रे = बड़े लोग जिससे प्रीति करते हैं रंज होने पर भी उसे नहीं छोड़ते । भेम — कौट विशेष । काँदव = कौच । अवधान = भिचार ।

पीन कठिन कुच कनयाकटोर बँकिम नयन चित हरि लेल मोर ॥
परिहर सुन्दरि दारुन मान । आकुल भ्रमर करय मधुपान ॥
ए धनि सुन्दरि कर धरि तोर । हठ न करहु मन राखहु मोर ॥
कतेक बुझायव तोहि बार बार । मदनवेदन हम सहै न पर ॥
भन मिद्यापति तुहु सब जान । आसाभँग दुख मरन समान ॥

पीन = स्थूल, मोटा । कनयाकटोर = सोने का कटोरा जैसा । लेल = लिया ।
आसाभँग = किसी बात की आशा भङ्ग हो जाना मरने के बराबर है ।

तोहर विरहवेदन बाउर सुन्दर माधव मोर ।

छिनहि सचेतन छिनहि अचेतन छिनहि नाम धरेतोर ॥

वामा हे ! तों बड़ि कठिन देह ।

गुन अवगुन जे तों नहिं बूझह तेजि जगदूलह नेह ।

तोहर कहिनी कहिते जागथि सुनई देखइ तोय ।

[१०१]

नहिं घर बाहर तनिकहुं धीरज धर पथ निखइ रोय ॥
 कत परवोधि न मानय रहसी ना करे भोजन पान ।
 काठक मूरति ऐसन आछय कवि विद्यापति भान ॥१३॥

बाहर = पागल । देह = हृदय । जगदूलभ = जगद्गुरु । रहसी = निर्जन ।

सुन सुन गुनवति राधे । परिचय परिहरु कोन अपराधे ॥
 गगन उदय कत तारा । चांद आनहि अवतारा ॥
 आन कि कहव विशेषी । लाख लछिमि बहूँ लखय न लेखी ॥
 सुनि धनि मनोहृदि भूर । तवहि मनहि मन पूर ॥
 विद्यापति कह भीलन भेल । सुनइत धनइ सबहिं दुरि गेल ॥१४॥

परिहर = परित्याग करती हो । गगन अवतारा = स्त्री जगत में सुन्दरी
 अनेक हैं किन्तु तुम एक स्वतंत्र वस्तु हो । लाख लेखि = लक्ष्मी सट्टय
 रूपवती लाख लो को देख कर भी वह नही देखते अथवा लाख लक्ष्मी को
 भी किसी लेखा (गिनती) में नही लाते । मनोहृदि = मनोहृदय, मनःप्रिय । भूर
 = सूखे हृदयवाला । पूर = पूर्ण प्रसन्न ।

सुनइत ऐसन राइक बानी । नाह निकट सखि कैलि पयानी ॥
 दूरहि सों सखि नागर हेरि । तोरइ कुसुम निहारइ फेरि ॥
 हेरइत नागर आयल तांहि । कि करह ए सखि आउल काहि ॥
 हमर वचन कलु करु अवधान तुहुं यदि कहसि सो माननि मान ॥
 सुनि कह सो सखि नागर पास । विद्यापति कह पूरल आस ॥१५॥

फेरि = फिर कर । तोहि = तहां । माननिमान = माननि के मान का क्या
 हाल है, कूटा वा नही ? पूरल आस = आशा पूरी हुई, मान कूटा ।

कञ्चनज्योति कुसुमपरकास । फलिवे रतन बढ़ावल आस ॥
 ताकर मुल दिनु दूधक धार । फल किछु हेरिय ना भनभानिसार ॥
 जाति गोआरिनि हम मतिहीन । कुजनक प्रीति मरन आधीन ॥

[१०६]

करता है उसी की पूजा करता है और फिर मेरा हृदय वेधने के लिये अर्थात् मुझे दुःख देने के लिये उसी को वानस्वरूप पास रखता है ।

चनन भरम हम सेवलि सजनी, पुरत सकल मन काम ।
 कंतक दरस परस भेला सजनी, सिमर भेला परिनाम ॥
 एकहि नगर बसु माधव सजनी, परभामिनि बस भेला ।
 हम धनि एहन कलावति सुन्दरि, गुन गौरव दुर गेला ॥
 अभिनव एक कमल फुल सजनी, दोना नीमक डार ।
 सेहु फुल आतेहि सुखायल सजनी, रसमय फुलल नेवार ॥
 बिधिवस आजु आयल पिया सजनी, एत दिन ओतहि गमाय ।
 कोन परि करव समागम सजनी, मोर मन नहिं पतिआय ॥
 कावि विद्यापति गावल सजनी, उचित आवत गुनसाह ।
 उठि बधाव करु मन भरि सजनी, आज आवत घर नाह १६॥

चनन = चन्दन । पुरत = पूरा होगा । सिमर = स्मरण । सिमर &c. = फल नीरस मिला, जैसे सुगा को स्मरण के फूलपर लाल फल के धोखा से चोच मारने पर रस नहीं मिलता । एहन = ऐसी । अभिनव... सुखायल = नीम की डार (अर्थात् वियोग) को टोकरो में नया कमल रूप मेरी सुन्दरता आते ही सुभायगौ । वही = ओतही = उधरही । नेवार = मूलो विशेष । एत = इतना । गुन साह = गुण का साहस, यादक ।

कोकिल कुल करे कलरव सुन्दर काहल बाहर बाजे ।
 मंजरि ऊपर मधुकर गुंजर से जनि कुंजर गाजे ॥
 मन मलीन परान दिगन्तर लगनु कयल लाज ।
 विरहिन जनही मरन कारन वेकत भो रितुराज ॥

सुन्दरि अवहू तेजिअ दोष ।

तू बर कामिनि हू मधुयामिनि अपद नहीं तिअ दोष ॥

[१०४]

कमल चाहि कलेवर कोमल वेदन सहय न पार ।
 चन्दन चन्द कुन्द नहि भावय तावय मोतिमहार ॥
 सीरिसकुसुम सेज ओछावल तवौ न आवय नीन्द ।
 आकुल चीर चिकुर नहि समरे सुमरे देव गोविन्द ॥२०॥

काहल = नगारा । कुंजर = हाथी । जनि = मानो । दिगन्तर = अन्यस्थान ।
 लगनु = प्रीति । अबह &c. = अब भी अपराध क्षमा करो । अपद &c. = आपदकाल
 में मान तेजने में स्त्री को दोष नहीं होता । नहिं समरे = नहीं सम्हार होता ।

चरन नखर मनि रंजन छाँद । धरनि लोटायल गोकुलचाँद ॥
 ढरकि ढरकि पदु लोचन लोर । कत रूप मिनति कयल पहु मोर ॥
 लागल कुदिन कयलि हम मान । अब नहि निकसय कठिन परान ॥
 रोखातिमिर एत बैरि कि जान । रतन भै गेला गेरुक समान ॥
 नारि जनम हम नहिं कएल भोग । मरन सरन भेलि मानक लागि
 विद्यापति कह सुन धनिराइ । रोयासि का मोहि देइ बताइ २१

चरन &c. = चरण के नख-मणि को रंजित करते हुए अर्थात् श्याम-प्रभा से
 प्रभावित करते हुए गोकुल के चन्द श्री माधव पग के पास भूतल पर लोट रहे
 हैं, श्री राधा मान में हैं । कतरूप = किस २ प्रकार से । रोषतिमिर &c. = क्या
 जानती थी कि रोष की अन्धेरी इनकी शत्रुता करेगी ? गेरुक = मिट्टी । रतन
 &c. = मान के कारण प्रीति मिट्टी के समान हो गयी अर्थात् मिट्टी मिल गयी ।
 मरन सरन &c. = मान के कारण मृत्यु का शरण लेने की बारी आई ।

कमल भ्रमर जग अछय अनेक । सभ महुँ से बड़ जाहि बिबेक
 मानिनि तोरित करिय अभिसार । अबसर थोड़ बहुत उपकार ॥
 मधु नहिं देलह रहल कि खागि । से सम्पति जे परहित लागि ॥
 अति अतिसय ओलना तुअ देल । जाव जीव अनुतापक भेल ॥
 तोहें नहिं मन्द मन्द तुअ काज । भलो मन्द होय मन्द समाज ॥

भन विद्यापति दुति कह गोय । निज क्षति बिनु परहित नहिं होय

सभ &c. = सबों में । तोरित = तुरत । खागि = कमो । ओलना = उपा-
लम्भ, ओलहना । जाव जीव = जावज्जीवन । तोहें &c. = तू मन्द नहीं है तेरा
काम मन्द है ।

सुन सुन माधव निरदय देह । धिक् रहु ऐसन तोहर सनेह ॥
काहे कहल तुहुं संकेत बात । यामिनि बँचल आनहि साथ ॥
कपट लेह करि राइक पास । आन रमनि सों करह बिलास ॥
को कह रसिक सेखर बर कान । तुहुं सम मूख जग नहिं आन ॥
मानिक तेजि कांच अभिलास । मुधासिन्धु तजि छार पियास ॥
छीरसिन्धु तजि कूप विलास । छिय छिय तोहर रभसमय भास ॥
विद्यापति कवि चम्पति भान । राइ न हेरव तोहर बयान ॥२३॥

बँचल = बीत गई । लेह = स्नेह । पियास = अभिलाषा । चम्पति = श्रेष्ठ ।
बयान = बदन ।

माधव बचन करिय प्रतिपाल ।

बड़ जन जानि सरन अवलंबल, सागर होयत सताल ॥
भुवन भ्रमिये भ्रमि तुअ जस पाओलि, चहुंदिसि तोहर बड़ाई ।
चित अनुमानि बूझि गुन गौरव, सहिमा कहलो न जाई ॥
आगा सब केओ सील निवेदय, फल जानिय परिनाम ।
बड़क बचन कबहुं नहिं बिचलय, निसिपति हरिन उपाम ॥
भन विद्यापति सुनु वर जूवति, यह गुन कोउ नहिं आन ।
राजा सिवसिंह रूपनरायन, लछिमा देइ प्रति भान ॥२४॥

सागर...सताल = तल युक्त समुद्र हम ने तुम्हें समझा था । भ्रमिये =
भ्रमण कर । आगा = पहले । केओ = कोई । बड़क = बड़ों का । उपाम =
उपमा । निसिपति &c. = चन्द्रमा अभी तक मृगश्राप की हृदय में धारण करते
हैं । कोउ नहिं आन = किसी दूसरे में नहीं है ।

मानिनि उचित नहीं अब मान ।

एखनुक रंग एहन सन लगइछि, जागल पय पंचवान ॥
 जूड़ि रहनि चक्रमक कर चन्दा, एहन समय नहीं आन ।
 एहि अवसर पहु मिलन जेहन सुख, जेकर हिं होय से जान ॥
 रभसि रभसि अलि बिलसि^२ कर, जे कर अधरमधु पान ।
 अपन २ पहु सबहु जेमाओलि, भूखल तुअ जजमान ॥
 त्रिवलि तरंग सितासित संगम, उरज संभु निरमान ।
 आरतपत प्रतिग्रह मगइछ, करु धनि सरवस दान ॥
 दीप दिपक देखि थिर न रहय मन, दृढ़ करु अपन गेआन ।
 संचित मदन वेदन अति दारुन, विद्यापति कवि भान ॥२५॥

पय = मानो । जूड़ि = शीतल । चन्दा = चन्द्र । सितासित संगम - गंगा
 यमुना का संगम, गौर बदन की गंगा से, स्याम रोमावली को यमुना से और
 त्रिवली को लहर से उपमा है । प्रतिग्रह मगइछ = दान मांगता है ।

पुरवक प्रेम ऐलहुं तुअ हेरि । हमरा अबैत बसलि मुख फेरि ।
 पहिल बचन उतरो नहीं देलिं । नैन कटाछ सँ जिव हरि लेलि॥
 तुअ ससिमुखि धनि नहीं करुमान । हमहुँ अमर अति विकलपरान
 आस देइ पुन न करु निरास । होहु प्रसन पूरहु मोर आस ॥
 भन विद्यापति सुनु परमान । दुहु मन उपजल बिरहक बान^{२६}
 आजुपरल मोहि कोनअपराध । किअ न हेरि हरि लोचनआध ॥
 आनदिन गहि गृम लाविअ गेह । बहुविधि बचन बुझाएव नेह ।
 मन दै रूसि रहल पहु सोइ । पुरुखक हृदय एहन नहीं होइ॥
 भन विद्यापति सुनु परमान । बाढ़ल प्रेम उसरि गेला मान ॥

कि कहव हे सखि निज अगेआन । सगरी रइनि गमाओलि मान ॥
 जखन हमर मन परसन भेल । दारुन अरुन तखन उगि गेल ॥
 गुरु जन जागल कि करव केलि । तनु भूपइत हम आकुल भेलि ॥
 अधिक चतुरपन भेलि अज्ञानी । लाभक लोभ मुरहु भेला हानी ॥
 भन विद्यापति निज मन दोस । अवसर काल उचित नहिं रोसर ॥
 दारुन अरुन = दुखदायक मूर्ख । मुरहु = मूर अर्थात् असल में भो ।

सम्भाषण ।

कर धर करु मोहि पार, देव मैं अपरुप हार, कन्हैया ।
 सखि सभ तजि चलि गेलि, न जानि कवन पथ भेलि, कन्हैया ॥
 हम न जायव तुअ पास, जायव औघट घाट, कन्हैया ।
 विद्यापति एहो भान, गूंजरि भजु भगवान, कन्हैया ॥ १ ॥
 धर = धरकर । पथ भेलो = किस राह से गयी । गूंजरि = सुन्दर युवति ।

सुनु रसिआ ।

अब न बजाव बिपिन बसिआ ॥
 बार बार चरनारविन्द गहि, सदा रहव वनि दसिआ ।
 किं छलुं कि होयव से के जाने, वृथा होयत कुल हसिआ ॥
 अनुभव ऐसन मदन भुजंगम, हृदय मोर गेल डसिआ ।
 नन्दनँदन तुअ सरन न त्यागव, बलु जग होय दुरजसिआ ॥
 विद्यापति कह सुनु बनितामनि, तोर मुख जीतल ससिआ ।
 धन्य धन्य तोर भाग गोआरिनि, हरि भजु हृदय हुलासिआ २
 कलुं = थी । दुरजसिआ = निन्दा । ससिआ = चन्द्र ।

रामा अधिक चढ़िम भेल ।

कतना जतने कत अदभुत बिहि बिहि तोही देल ॥
 सुन्दर बदन सेन्दुर बिन्दू सामर चामर भार ।
 जनि ससि रबी संगहि उगल पालु कय अंधकार ॥
 चंचल लोचन बाँके निहारय अंजन सोभा पाय ।
 जनि इन्दीवर पवन पेलल अली भार उलटाय ॥
 उन्नत ऊरज चीर भूपावय पुनः पुनः दरसाय ।
 जइओ जतने गोपय चाहे हिमगिरि नाहिं लुकाय ॥
 एहनि सुन्दरि गूनक आगरि पुन पुनमत पाय ।
 ई रस बिन्दक रूपनरायन कवि विद्यापति गांय ॥३॥

चङ्गिम = शोभा । बिहि = विधान । बिहि = विधात । चामर = घना
 केश । ससि = आनन । रबी = सेन्दुरबिन्दु । अंधकार = केश । बाँके = बद्ध भाव,
 कटाक्ष । पेलल = आन्दोलित किया । इन्दी = कमल । जइओ = यद्यपि । एहनि
 = ऐसी । ई = यह । बिन्दक = ज्ञाता ।

कुच नख लागत सखि जन देख । गिरि कस लुकइव नव
 ससि रेख ॥ आरत अधिक करहु नाहिं लोभ । सब राखय पहि-
 लहि मुख सोभ । नहेरु न हेरु हरि हृदयक हार । दुहु कुल अप-
 जस पहिल पसार । खरकय खेव लेहु निअ दान । रसिक प
 राखु गोपिजन मान । तुहु जदुकुल हम कुलिन गोआलि ।
 अनुचित वाट न करु बनमालि । भन विद्यापति अरिगिरि
 गोआरि । बड़ पुन सम्भव आदर मुरारि ॥ राजा रूपनरायन
 जान । राजा सिव सिंह लछिमामरमान ॥४॥

आरत = अनुराग । पसार = दुकान । प्रथम पसार = नवीन यौवन । खरकय
 = जल्दी जल्दी । प = परत । वाट = पथ, व्यवहार । गोआरि = खालिन ।

[१०८]

सहज प्रसन मुख, दरस हृदय सुख, लोचन तरल तरंग ।
 गगन ताले बस, सेउ कस भेला अस, चांद सगेरुह संग ॥
 कुचमण्डल सिरि, हेरि कनकगिरि, लाजि दिगन्तर गेला ।
 केउ अइसन कह, सेउ न जुगुति सह, अवल सचल कस भेला ॥
 मांझ खीन तनु, भारे टुटि जा जनु, विधि अनुसय भेला साजी ।
 नील पटोर आनि, अति दृढ जानि, जतने सिरिजु रोमराजी ॥
 भन विद्यापति, काम रमनि रति, कउतुक बुझे रसवन्ता ।
 सिरि सिवसिंह राउ, पुरुष सुकृत पाउ, लछिमा देवि असकान्ता ५

सहज = स्वाभाविक । सिरि = श्री, शोभा । केउ अइस = कोई २ ऐसा
 कहता है परन्तु वह भी युक्तियुक्त नहीं है । मांझ &c = औणकटि । जनु = जनि,
 नहीं । अनुसय = अनुताप । पटोर = रेगम । जतने = यत्नपूर्वक

कुंज भवन सों चलि भेलि हे, रोकल गिरधारी ।
 एकाहि नगर वसु माधव हे, जनि करु बटपारी ॥
 छाडु २ यदुपति आँचर हे, फाटत नव सारी ।
 अपजस होयत जगत भरि हे, जनु करिअ उधारी ॥
 सँगहुक सखि अगुआइलि हे, हम एकसर नारी ।
 दामिनि आय तुलाइलि हे, एक राति अन्हारी ॥
 भनहिं विद्यापति गावल हे, सुनु गुनमति नारी ।
 हरिक सँगे किलु डर नहिं हे, तुहे परम गनारी ॥ ६ ॥

बटपारी = राहजनों । होयत = होगा । अगुआइलि = प्रागे निकल गयीं ।
 तुलाइलि = व्याप्त हुई । भनहिं गावल = गा कर कहते हैं । तु हे = तुम हो ।

जनु हुतवहे हवि आनि मेरायल, ता सम भेल विकार ।
 दुअय नयन तोर विषम मदन सर, सालय हृदय हमार ॥
 केहि लागि सुमुखि विहँसि हसि हेरल, जीवन परल सँदेह ।

पीन पयोधर अपरुप सुन्दर, ऊपर मोतिम हार ॥

जनि कनकाचल उपर विमल जल, दुहु वह सुरसरि धार ।

भन विद्यापति सुन वर नागर, सबहु होयत परकार ॥

राजा सिवसिंह रूपनरायन, लखिमाकन्त उदार ॥ ७ ॥

जनु = मानो । हुत वहे = ज्वलिताग्नि में । मेरायल = मिलाया । हवि = सामग्री । विकार = यातना । दुअय = दोनों । केहि लागि = क्यों । सबहु &c. = सब का उपाय हो सकता है ।

नाव डोलाय अहीर, जिवत न पायब तीर, खर नीर लो ।

खेवन लेअय मोल, हसि हसि कि दहु बोल, जिव डोल लो ॥

कके बिके एलहु आप, वेढ़लहु मोहि बड़साप, मोरे पाप लो ॥

करितिहुं पर उपहास, परिलिहुं तन्हि विधि फास, नहिं आस लो ॥

न बुझसि अबुझ गोआरि, भजि रहु देव सुरारि, नहिं गारि लो ॥

कवि विद्यापति भान, नृप सिव सिंह रस जान, वर कान्ह लो ॥

खर = खर स्रोत से, तेज । लो = हे । खेवन मोल = खेने की मजदूरी, खेवा । किदहु = क्या दोगी । डोल = कांप रहा है । कके = क्यों । बिके = बेचने । वेढ़लहु = आ घेरा । तन्हि = इसी कारण से । वर = प्रेष्ठ ।

तुअ गुन गौरव सील सुभाव । सेहे लागि चढ़लिहु तोहर नाव ॥

हठ न करहु कान्ह करु मोहि पार । सब तह बड़ थिक पर उपकार ॥

आइलि सखि सब साथ हमार । से सब भेलि निकहि विधि पार ॥

मोरा भेलि कान्हर तोहर आस । जे अँगरिय ता न होय उदास ॥

भल मँद जानि करिय परिनाम । जस अपजस दुइ रह यह ठाम ॥

हम अवला कत कहब अनेक । आइति परलीं बुझिये विवेक ॥

तोहे परनागर हम परनारि । कांप हृदय तुअ प्रकृति निहारि ॥

कवि विद्यापति अपरुप गाव । राजा सिव सिंह इ रस पाव ॥

[१११]

मेहे लागि = इसी कारण से । सब तह = सब से । थिक = है । निकहि विधि
= भलो भांति । जे अंगरिय &c = जो कार्य अंगीकार किया उस को पूर्ण करने
में उदासोन न हो । भल &c = परिणाम अच्छा वा बुरा होगा इसे विचार कर
कार्य करो । जस &c = यश और अपयश दोनों इसी जगह (संसार ही में) है
और आदमी को मिलता है । अनेक = अधिक । आइति = प्रायत, वग में ।

अभिसार ।

नव अनुरागिनि राधा । कलु नहिं भावय वाधा ॥

एकलि कयलि पयान । पंथ विपथ नहिं मान ॥

तेजलि सनिमय हार । उच कुच मानय भार ॥

कर सों कङ्कन मुदरी । पंथहि तेजलि भिगरी ॥

सनिमय मंजिर पाय । दूरहि ताजि चल जाय ॥

जामिनि घन अंधियार । मनमथ हेरि उजियार ॥

विधिन बिथारित बाट । प्रेमक आयुध काट ॥

विद्यापति मति जान । ऐसन नहिं हेरि आन ॥ १ ॥

सुदरि = अंगूठी । मंजिर = नूपुर । हेरि = देख कर अर्थात् प्रभाव से ।
यामिनि... उजियार = रात घोर अंधियारी है परन्तु मन में जो काम प्रज्वलित
हो रहा है उसी को ज्योति के सहारे चलो जा रहा है । cf “ आगे आगे जाय
मिश्रल आतशीं नाले हुये । ”

वारिस जामिनि, कोमल कामिनि, दारुन अति अधिकार ।

पँथ निसाचर, सहस संचर, घन परे जलधार ॥

माधव प्रथम नेह से भीत ।

गय अपनेहि से अवलोकिय, करिय तइसन रीत ॥

अति भयावनि नाह जलामय, कैसे आउति पार ।

[११२]

सूरत रस सुचेतन बालमु, ता पति सबै असार ॥
 एत सुन मन विमुख सुमुखी, तोहर मन नहिं लाज ।
 कतय देखल मधू अपने जाय सु मधुप समाज ॥ २ ॥

बारिस = वर्षा । सहस = सहस्र, हजारों । नाद = नदी ।

आजु पुनिमा तिथि जानि मो ऐलिहु, उचित तोहर अभिसार ।
 देह जोति सलिकिरन समाइति, के विभिनावय पार ॥

सुन्दरि अपनहु, हृदय विचारि ।

आंख पसारि जगत हम देखलि, के जग तुअ सनि नारि ॥
 तौहँ जानि तिमिर हीत कय मानह, आनख तोर तिमिरारि ।
 सहज बिरोध दुरे परिहर धनि, चलु उठि जतय मुरारि ॥
 दूती बचन हीत कय मानल, चालक भेला पँचवान ।
 हरि आभसार चललि बर कामिनि, विद्यापति कवि भान ॥३॥

मो = हम । विभिनावय पार = अलग कर (पहचान) सकता है । हीतकय = हितकरनेवाला । तोहे जनु ४० = अंधेरी रात में तुम्हारा अभिसार नहीं हो सकता क्योंकि तुम्हारे मुखचन्द्र की ज्योति से तम नष्ट हो जायगा । चालक = प्रेरक ।

अपनहि नागरि अपनहि दूति । से अभिसार न जान बहूत ॥
 की फल तीसर कान जनाय । आनख नागर नयन बभाय ॥
 ए सखि राखसि अपनुक लाज । परक दुआर करहु जनु काज ॥
 परक दुआर करिअ जोकाज । अनुदिन अनुछन पाइअ लाज ॥
 दुहु दिस यक सों होइक बिरोध । ते कर बजइते कतय निरोध ॥

बहूत = बहुत लोग । बजइते = बकाश करने में । निरोध = निषेध ।

माधव करिअ सुमुखि समधाने ।

तुव अभिसार कयलि जत सुंदरि, कामिनि करु के आने ॥

वरिसि पयोधर, धरनि वारि भर, रङ्गनि महाभय भीमा ।
 तइओ चकलि धनि तुअ गुन मन गुनि, तसु माहम नहिं सीमा ॥
 देखि भवन भिति लिखल भुजंगपति, जसु मन पास तरासे ।
 से सुवदनि कर रूपइति फनिमनि, विहुसि आइलि तुव पासे ॥
 निअ पहु परिहरि अइलि कमलमुखि, परिहरि निअ कुलगारी ।
 तुअ अनुराग मधुर मद मातलि, किछु न गुनलि घर नारी ॥
 ई रस रसिक विनोदक विन्दक, कवि विद्यापति गावे ।
 काम प्रेम दुहु एक मत भय रहु, कखने की न करावे ॥५॥

पयोधर = बदली । करु के = ओर कौन करेगो । भीमा = डरावनी । देखि
 भवन...पासे = जो घर के दीवार पर बनाया हुआ साँप का चित्र देखकर डरती
 है वह मार्ग में साँपों को पैरों से दबाती हुई तुम्हारे पास आई है । पहु = प्रभु,
 पति । विन्दक = ज्ञाता, पसन्दा । काम = वासना ।

माधव जाइत देखलि पथ रामा ।

गरुडासन सख तातक बाहन ता सम गति अभिरामा ॥
 दच्छ सुता चारिम पति भगिनी तनय घरनि सम रूपा ।
 सुरपति अरि दुहिता पति बैरी तें भरि भेलि अनूपा ॥
 अदिती तनय बैरि गुरु चारिम ता सम आनन कांती ।
 कुंभ तनय तसु असन तनय तसु कोष बैसावलि पांती ॥
 नंद घरनि तनया तसु बाहन ता सम माझक छीनी ।
 कामधेनु पाति ता पति प्रिय फल उरज हनल जिमि जीमी ॥
 भन विद्यापति सुनु वर जौमति अपरुप रूपक रंगे ।
 रावन अरि पतनी तातक तप ता सह पाविअ संगे ॥ ६ ॥

गरुडासन &c. = श्रीकृष्ण के सखा (अर्जुन) के पिता (इन्द्र) के बाहन (ऐरावत)
 ऐसी गति । दच्छ &c. = दक्षकी चौथी सुता (रोहिणी) के पति (सोम) की भगिनी

(लक्ष्मी अर्थात् रुक्मिणी) के तनय (प्रद्युम्न अर्थात् कामदेव) की घरनि (रति) ऐसा रूप। सुरपति अरि &c. = हिमालय, तिन की दुहिता (पावती) के पति (शिव) के बैरी अर्थात् कामदेव के सानुकूल होने वा प्रभाव से परम सुन्दरी दीखती है। अदिति &c. = अदिति तनय देवता जिस के बैरी दैत्य जिस के गुरु शुक जिस से चारिम (चौथा) चन्द्र, क्योंकि शुक से चौथा दिन चन्द्र का होता है; अतएव चन्द्र ऐसा मुख। कुंभ तनय = अगस्त्य जिस का असन समुद्र जिस का तनय मोती, उस के कोष (समूह) की पांती ऐसा दांत। नंद-घरनि तनया = माया (अर्थात् दुर्गा) के वाहन सिंह ऐसा कमर। कामधेनु पति = (वंसड़ा) बैल के पति (शिव) के प्रिय फल बैल जमि (ऐसा) उरज। हनल = है। जीमौ = गोला। रावन अरि = श्रीरामचन्द्रको पतनी श्रीजानकी के तात जनक के ऐसा जो तप करे ता (वह) सह (उस का) संग पावे।

माधव ! जाइति देखलि पथ रामा ।

अबला अरुन तारा गन बेढ़लि धिकुर चामर अनुपामा ॥
जलनिधि सुत सन बदन सोहाओन सिखर बीज रद पाती ॥
कनकलता जनि फरल सिरीफल बीहि रचल बहु भांती ॥
अजेआसुत रिपु बाहन जेहन ता सन चलु जिमि राही ॥
सागर गरह साजि वर कामिनि चललि भवन पति ताही ॥
खगपतितनय तासु रिपुतनया ता गति जेहन समाने ॥
हरिबाहन तेहि हेरइत हेरलन्हि, कवि विद्यापति भाने ॥८॥

अरुन = ईश्वर । बेढ़लि = घेरे हुए । जलनिधिसुत = चन्द्र । सिखर-बीज = धनार का दाना । अजेआसुत = बकरा, उस का रिपु = दुर्गा, क्योंकि श्री दुर्गा जी को बकरा बलि दिया जाता है ; उन का बाहन = सिंह । अजेआसुत &c. = सिंह ऐसी नायिका की गति है, क्योंकि सिंह के समान निःशंक चली जा रही है । राही = राई, सुन्दरी । सागर &c. = सागर सात और ग्रह नव दोनों मिल कर सोलह हुए अर्थात् सोलहो शृङ्गार कर के । खगपति &c. = खग ग्रह, उस का पति चन्द्र, उस का तनय बुध, उस का रिपु सूर्य, उस की तनया यमुना । तागति... समाने = उसकी गति के समान है जिसकी महिमा हरिबाहन = गङ्गा

[११५]

स्वगपति...हेरलन्हि = श्रीकृष्ण नायिका की प्रतीक्षा में यमुना की गति के समान धीमे २ विचरण कर रहे थे और किधर से कब आती है यह देख रहे थे, तो उन्हीं ने गरुड़ के समान दूर ही से उसे आते देख लिया ।

राहु भेष भै गरसल सूर । पथपरिचय दिवसहि भेला दूर ॥
जो न बरिसय अवसर नहिं होय । पुर परिजन संचर नहिं कोय ॥
चलु चलु सुन्दरि कर गये साज । दिवस समागम सपजत आज ॥
गुरुजन परिजन डर कर दूर । बिनु साहस अभिमत नहिं पूरा ॥
यह संसार सार है यह । तिल एक संगम जवजिव नेह ॥
भन विद्यापति कवि कंठहार । कोटिहु न घटय दिवस अभिसार ॥

भै = हो कर, बन कर । पथ...दूर = दिन ही में रास्ता सूझना कठिन हो गया । अवसर = अभिसार की सुविधा । संचर - चलना । कर गये साज = जा कर तयारी कर । सपजत = समपन्न हो सकता है, सम्भव है । जवजिव = आजन्म । कोटिहु &c. = कोटि यह करने पर भी दिन में अभिसार संभव नहीं होता ।

पयरहि अयलहुँ तरनि तरंग । पगु लागल कत सहस भुजंग ॥
निसिथ निसाचर संचर साथ । भागन केओ नहिं धयलन्हि हाथ ॥
यत कय अयलहुँ जीव उपेख । तइओ न भेला मोहि माधव देख ॥
तनि नहिं पढ़लन्हि मदनक शीति । पिसुन बचन कयलन्हि परतीति ॥
दूती दम्पति दुअओ अबोध । काज अलस दुहु परम विरोध ॥
भन विद्यापति सुन वर नारि । धैरज धय रहु मिलत मुरारि ६

पयरहि &c. = तरङ्गित नदी में नौका रहने पर भी मैं तैर कर आई भागन = भाग अच्छा था । जीव उपेख = जान पर खेल कर । देख = देखादेखी, भेंट । पिसुन = चबाइन, चुगल । दम्पति = यहाँ केवल नायक से तात्पर्य है, नायिका से नहीं, क्योंकि नायिका तो निदृष्ट स्थान पर पहुँच हो गई थी ।

गगन सगन भेल तारां । तइओ न काहु तजय अभिसारा ॥

अपना सरवस लाथें । आनक बेल नुडिअ दुहु हाथें ॥
 दूटल गीम मोतिहारा । बेकत भेला अछि नखछत धारा ॥
 नहिं नहिं नहिं पय भाखे । तइओ कोटि जतन कर लाखे ॥
 भनहिं बिद्यापति बानी । यहि तीनू महँ दूति सयानी ॥१०॥

लाथें = बहाने से । नुडिअ = लोड़िये, तोड़िये । अपना &c. = पयोधर को युगल पर में धारण करता है, इस बहाने कि दूसरे का होने पर भी वह सर्वस्व अपना ही है । दूति सयानी = क्योंकि नायिका की इच्छा नहीं रहने पर भी उसे भोरा कर नायक के पास ले गयी ।

कह कह सुन्दरि न कर बेआज । देखिअ तुअ अपरुव सभ आज॥
 मृगमद पंक करसि अँगराग । कोन नागर परिनत होअ भाग॥
 पुनुपुनु उठसि पछिम दिसि हेरि । कखन जायत दिन कत अछ बेरि
 नेपुर उरज करसि कसि थीर । दढ़ कय पहिरसि तमसम चीरा॥
 उठसि बिहसि हँसि तेजिअ सार । मो मन भाव सघन अधियार॥
 भन बिद्यापति सुनु बर नारि । धैरज करु मन मिलात मुरारि११

कखन...दिन = कब दिन बीत जायगा । तम सम = नोला । उठसि &c. = हंस उठती है और हंसने में सार (मखन) ऐसी मृदुलता (मधुरता) बगराती है ।
 मो मन &c. = दूति अपने मिस व्यंग द्वारा नायिका के मन के भाव को प्रकट करती है कि उसे घोर अंधेरी भाती है ।

सुन्दरि कह कह न कर बेआज ।

पुरुव सुकृत फल केदहुँ पावत मदन महा सिधि आज ॥
 मृगमद तिलक अगर अनुलोपित सामर बसन समारि ।
 हेरह पछिम दिस कखन होयत निस गुरुजन नयन निवारि ॥
 विनु कारन यह करत गतागत मूनि नयन अरबिंदा ।
 पुलकित तनु बिहसहुँ अकामिक जागि उठलि सानंदा ॥

[११७]

चेतन हाथ लाथ नहिं संभव विद्यापति कवि भाने ।

राजा सिव सिंह रूपनरायन सकल कला रस जाने ॥१२॥

विआज = बहाना । केदहुं = केदो, कौन । गतागत = आना जाना । अकामिक
= वेकाम के, बेवजह । चेतन हाथ = ज्ञानवान के सामने ।

रइनि छोटि आति भीरू रमनी । कत छन आउव कुंजरगमनी ॥

भीम भुजंगम सरना । कत सङ्कट तसु कोमल चरना ॥

विहि पाय करि परिहार । अविधिन सुन्दरि कर अभिसार ॥

गगन सघन सहि पंका । विथिन विथारित उपजय संका ॥

दस दिस घन अंधियार । चलइत खलइ लखइ नहिं पार ॥

सब जानि पलटि भुलोलि । आउत मानवि भानत लोलि ॥

विद्यापति कवि कहई । प्रेमहि नारि पराभव सहई ॥१३॥

सरना = पथ । भीम &c. = राह सर्प जैसी पतली, लम्बी, बक्र तथा भयङ्कर
है । विथिन विथारित = राह गली विस्तारित है । खलई = पैर फिसलता है
भानत = सवांग, रूप । लोलि लोला, चपला अथवा लक्ष्मी । पराभव =
पराजय ।

अबहुं राजपथ पुरजन जाग । चांद किरन जग मंडल लाग ॥

सान्ति रहति नहिं नूतन देह । हेरि हेरि सुन्दरि पड़ल सँदेह ॥

कामिनि कयल कतय परकार । पुरुषक बेस कयल अभिसार ॥

धमिल लोल भोंट करि बन्ध । परिहन बसन आन करि छन्द ॥

अम्बर कुच नहिं सम्बरु गेल । बाजनयन्त्र हृदय करि लेल ॥

ऐसन मीलल कुंजक मांझ । हेरि न चीन्हइ नागरराज ॥

हेरइत माधव पड़लन्हि धन्द । परलित भांगल हृदयक द्वन्द ॥

विद्यापति कह कीये भेलि । उपजल कतकत मनमथ केलि १४

कतय प्रकार = कितना प्रकार का, धमिल = धीमा, मीलल = मिला, लोल = सुन्दर ।

[११८]

भौंटा = भौंटा, बिखरा हुआ बाल । करिवन्त = बान्धकर । धमिल &c. = बिखड़े हुये बालों का सुन्दर जूड़ा बना कर । परिहन वसन = पहनने का कपड़ा । कन्द = प्रकार । सम्बरु गेल = छिप सका । इन्द = भ्रम ।

कत अछि युवति कलामति आन । मानय तोहि जनि दोसरि परान
तुअ दरसन बिनु तिलओ न जिवई । दारुन मदन वेदन कत सहई
सुन २ गुनमति पुनमति रमनी । न करु बिलम्ब छोटे मधुरजनी
सामर अम्बर तनु के रङ्गा । तिमिर मिलउ ससि तुलित तरङ्गा ॥
सपुन सुधाकर आनन तोर । पिवत आमिय हसि चांद चकोर ॥
भन विद्यापति दूती भोरी । चेतन गोपय गोपति चोरी ॥
आंचर बदन भांपह गोरी । राजा सुनइछ चान्दक चोरी ॥
घर घर पहरी छोड़ि गेल जोय । अबहि देखव धनि नागरि तोय ॥
हांसि सुधामुखि न कर बिजोरि । वानिक ध्वनि धनि बोलव थोरि ॥
अधर समीप दसन करु जोती । सींदुर समिप बसावल मोती
सुनु सुनु सुन्दरि हित उपदेस । सपने हूँ जनि विपद कलेस ॥
चांदक आछय भेद कलंक । उये कलंकी तुहु निकलंक ॥
राजा सिवसिंह लछिमा संग । भन विद्यापति मनहु निसंक ॥

सुनइछ = सुना है । पहरी = पहरेदार । जोय = जो । विजोर = बिजुली ।
उये = वह ।

विरह और प्रबोध ।

अनुखन माधव माधव सुमिरत, सुन्दरि भेलि मधाई ।
ओ निज भाव सुभावाहि बिसरल, आपन गुन लुवधाई ॥

माधव अपरुव तोहर सिनेह ।

अपने विरह अपन तनु जर जर, जिवइत भेल संदेह ॥
भोरहि सहचारि कातर दिदि हेरि, लल लल लोचन पानी ।

[११८]

अनुखन राधे राधे रट तिहि, आध आध कहु बानी ॥
 राधा सँ जब गुनतहि माधव, माधव सँ जब राधा ।
 दारुन प्रेम तबहु नहिं टूटत, बाढ़त विरहक बाधा ॥
 दुहु दिस दारुदहन जस दग्धइ, आकुल कीट परान ।
 प्रेसन वल्लभ हेर सुधा मुखि, कविं विद्यापति भान ॥१॥

* इस गीत में श्री राधिका जी का प्रेमोन्माद वर्णित है । श्रीमति कभी अपने को श्रीकृष्ण समझ कर श्री राधिका का विरह सहती हैं और कभी अपने को राधा समझ कर श्रीकृष्ण के विरह में कातर होती हैं । सधाई = माधव । लुवधाई = सुग्ध हुई हैं । भोरहि = भोर वा विह्वल होकर । दारुदहन = दावानल ।

एक दिन छलि नव रीति रे । जल मिन जेहन प्रीति रे ॥
 एकहिं बचन विच भेल रे । हसि पहु उतरो न देल रे ॥
 एकहिं पलंग पर कान्ह रे । मोर लेखे दुर देस भान रे ॥
 जाहि बन केओ न डोल रे । ताहि बन पिआ हँसि बोल रे ।
 धरव जोगिनिआ के भेस रे । करब में पुहक उदेस रे ॥
 भन विद्यापति भान रे । सुपुरुष करे निदान रे ॥२॥

उदेस = उद्देश, खोज ।

सपनेहु नहिं पूरज मन साध । नयन हेरल हरि एत अपराध ॥
 मन्द मनोभव मन जर आगी । दूलभ प्रेम पराभव लागी ॥
 चांदबदनि धनि चकोर नयनी । दिवसर भेलि चउगुन मल्लिनि
 कि करत चानन की अरविन्द । विरह बिसर जो सूतिअ निन्द
 अबुध सखीजनन बुझ्य आधि । आन उपध करय आन बेआधि
 मनसिज मन के मन्द बेवथा । छाड़ि कलेवर मानस बेथा ॥
 चिन्तय बिकल हृदय नहिं धीर । बदन निहार नयन बह नीर

चरुगुन = चौगुनी । विरह &c. = यदि सोने पर नौंद आ जाय तो विरह
विसर जाय किन्तु ऐसा नहीं होता, विरह में नौंद नहीं आतो । इसी से किसी
ने कहा है “ नौंद की भी नौंद आ जाती है हिज्जे यार में । छोड़ कर बेखाव
हम को आप सो जाती है नौंद । ” अधि = ज़रा भी । बेवया = व्यवस्था ।

जलउ जलधि जल मन्दा । जहँ बसे दारुन चन्दा ॥

बचनक नहिं परमान । समय न सह पँचवान ॥

कामिनि पिया विरहिनी । केवज रहिली कहिनी ॥

अवध समापित भेला । कइसे बचन हरि चुकेला ॥

नीठुर पुरुष पिरिती । जिव दय सन्तर युवती ॥

नीचल नयन चकोर । ढरिए ढिरिए पल नोर ॥

पथए बहे हेरि हेरी । पिय गेला अधि विसेरी ॥

विद्यापति कवि गाय । पुनफल सुपुरुष की नहिं पाय ॥४॥

जलउ = जल जाय । दारुन = दुखद । बचन = वादा । परमान = ठिकाना ।
समय &c. = मदन समय को अवेक्षा नहीं करता ; समय देख कर नहीं
सताता । केवल &c. = केवल कहने ही मात्र रही कि वह संसार में
जीवित है नहीं तो विरह ने उस को दशा परिवर्तन कर उसे मृतकवत् बना
रखा है । कइसे &c. = क्यों वादा खिलाफ़ी हुई । सन्तर = सन्तरण । जिव &c. =
प्राण पर खेल कर रमणो प्रेम पयोनिधि में तैरती है । नीचल &c. = विरह में
नयन नीचल (स्थिर) हो रहा है, जिधर देखती है उधर ही टकटकी बंधजाती है ।
पल = पलक से । पथए...विसेरी = राह की ओर देखती २ उस की आंखें अनवर्त
बहती हैं क्योंकि पीतम अवधि को भूल गये, नहिं आये । की = क्या ।

अविरल नयन गरय जलधार । नव जल बिन्दु सहय कोन पार

कुच दुहु ऊपर आनन हेरु । राहु डरे ससि चढ़ल सुमेरु ॥

कि कहव सुन्दरि तोहरि कहिनी । कहाहि न पारिअ देखलि जहिनी

अनिल अनलसम मलअज बीख । जे छल सीतल से भेला तीख ॥

चान्द सँतावय सविताहु जीनि । नहिं जीवन एकमत भेला तीनि ॥
 किछु उपचार न मानय आन । एही देआधि आधिक पंचवान ॥
 तुअ दरसन बिनु तिलओ न जीव । जइओ कलामति पीउख पीव ॥
 भन विद्यापति दूती भोी । चेतन गोपय गोपति चोरी ॥५॥

कहिनी = कहानी, बात । जहिनी = जैसी । अनिल = हवा । कुल = या ।
 सविता = सूर्य । अधिक = वैद्य (पाठान्तर भेषज है) । जइओ = यद्यपि ।

कतन जातकि कतन केतकि बने कुसुम विकास ।
 तइओ भमरा तोहि सूमिरय लेत न कतहुं वास ॥
 मालति बधओ जाएत लागि ।

भमर वापुर कीरह आकुल तोहर दरसन लागि ॥
 जखन जतए बन उपवन ततहि तोहि निहार ।
 लिहिं महीतल तोहि परीखय तोहर जीवन सार ॥
 समय गेले नेह न बाढ़िवे कूसुम होयत साल ।
 भमर बूझह जनु अचेतन छुड़त करव निहाल ॥६॥

कतन = कितनी । मालति &c. = मालति (श्रीराधे) ! तुम्हें माधव के
 बध करने का दोष लगेगा । जखन = जब । जतय = जहां । लिहि = लिख कर ।
 चित्रित कर ।

कतहु साहर कतहु सुरभि कतहु नवि मज्जीर ।
 कतहु कोकिल पँचम गावय समय गुन गुज्जीर ॥
 कतहु भमरा भंमि भमिकर करत मकरन्द पान ।
 कतहु सारस बासर जोरय गुपुत कूसुम बान ॥
 सुन्दरि नाहिं मनोरथ ओर ।

अपन वेदन जाहि निवेदों तइसन मेदिनि थोर ॥
 पिय देसांतर हिरदय आंतर पर दुआर समाद ।

[१२२]

विपिरित काज बूझ न पारिअ अपदहो अपवाद ॥

पथिक दे समदेय चाहिअ बाट घाट नहि आव ।

खन विसरिये खन सुमरिये थिर न थाकय भाव ॥ ७ ॥

साहर = खलिहान । सुरभि = सुगन्ध । नवि = नव । मञ्जीर = मञ्जर, मोजर ।
समय &c. = समयानुसारगुंजार करता है । सारस = कमल, सारस (कमल)
कुसुमवान (कामदेव) के संग वान मिला रहा है, अर्थात् उस को सहायता
करता है, इस से कमल देख कर काम उत्तेजित हो मन में सर ऐसा वेधता है ।
मेदिनि घोर = पृथिवी में थोड़े लोग हैं । देशांतर = देशान्तर । दुआर समाद =
द्वारा सम्वाद ।

सरूप कथा कामिनि सुनू । परक आगे कहिह जनू ॥

तँ अति नीठुर ओ अनुरागी । सगरी निसि गमावय जागी ॥

ए हो राधे जानि न जान । तोरे बिह बियाकुल कान ॥

तोरिय चिन्ता तोरिय नाम । तोरिय कहिनी कहय सब ठाम ॥

आउर कहव सनेह कि तोर । सुमिरि सुमिरि सुनयन बह नेर ॥

नित्य से आवय नित्य से जाय । हेरइत हसइत से न लजाय ॥

न पिन्हे कुसुम न बाँधय केस । सबहिं सुनावय तोर उपदेस ॥ ८ ॥

सरूप कथा = सत्य बात । तँ = तू । ओ = वह । जानि &c. = बूझ कर भी
अनबूझ होती हो ।

कानन कान कान हम सुनली, भै गेल आनक आन ।

हेरइत संकरिपु मोहि हरलन्हि, कि कहव तिनिक गेआन ॥

सात पांच हम लीखि पठाओलि, बहु बिधि लिखलि बनाइ ।

से पुन नाथ पांच कय रखलन्हि, दुइ फेरि देलन्हि मिटाइ ॥

चानन चानअंग हम लेपलि, तँ बाढ़ल अति दापे ।

अधरक लोभ सँ बिखधर ससरल, धरै चाह फेर साँपे ॥

भन विद्यापति दुहुक सुदित मन, मधुकर लोभित केली ।

असह सहायि कत कोमल कामिनि, जामिनि जिव दय गेली ॥६॥

कानन &c. = कानों से मैंने सुना कि श्रीकृष्ण वन में हैं । भै गेल &c. = किन्तु और का और ही हो गया । संकररिपु = कामदेव । हरलन्हि = वशीभूत किया । तिनिक = उन का कामदेव का । सात = सात अक्षर अर्थात् 'विष खाय सरव' । पांच = पांच अक्षर अर्थात् 'नहिं आएव' । दुई = 'नहिं' । से पुन &c. = उत्तर में नायक ने उन्हीं पांच अक्षरों को लिख कर दो को मिटा दिया अर्थात् 'नहिं आएव' लिखकर 'नहिं' को मिटा दिया । चानन चान अङ्ग &c. = अपने चन्द्र से बदन में मैंने चन्दन लेपा । तें = तिस से । धरै...सांघि धर कर डसना चाहा । सहयि कत = कितना सहती ।

हम धनि तापिनि मँदिर यकाकिनि दोसर जन नहिं संग ।

बरषा परवेस पिया गेला दुरदेस रिपु भेला मत्त अनंग ॥

सजनी ! आजु समन दिन होय ।

नव जलधर अब चौदिक भांपल, हेरि जिउ निकसय मोय ॥

घन घन गरजत सुनि जिउ चमकत, कांपत अन्तर मोर ।

पपिहा दारुन पिउ पिउ सोरन, भ्रमि भ्रमि दइ तखु कोर ॥

वारिखय पुन पुन आगिदहन जनु, जानलु जीवन अन्त ।

विद्यापति कह सुन रमनीवर, मिलव पहु गुनवन्त ॥ १० ॥

तापिनी = दुःखिनी । परवेस = प्रारम्भ । मोय = मेरा । सोरन दइ = स्मरण कराता है, वा उच्चारण करता है । पपिहा &c. = निदारुण पपिहा मेघ के कोले में घूम घूम कर प्यारि को स्मरण कराता है ; अथवा, पपिहा पिउ २ शब्द उच्चारणकर प्रीतम को गोद को याद दिलाता है । आगिदहन = अग्नि का सन्ताप ।

ए सखि हमरो दुखक नहिं ओर ।

उए भरा बादर मासहु भादर सूनो मन्दिर मोर ॥

घन भँक्का गरजन्ति सन्तति भुवन भरि वरिखन्तिया ।

कन्त पाहुन काम दारुन सघन खर सर हन्तिया ॥

कुलिस सत सत पात मोदित मयुर नाचत मातिया ।

तिमिर भरि भरि घोर यामिनि थीर विजुरी पाँतिया ॥

मत्त दादुर डाक डाकड़ फाटि जायत छातिया ।

विद्यापति कह कस गँवायब हरि बिना दिन रातिया ॥ ११ ॥

भरा = जल पूर्ण, भादर = भाद्र, सूना = शून्य, भँक्का = तूफान, सन्तति = सर्वदा, वरिखन्तिया = वर्षा पात हो रहा है, पाहुन = विदेशी, प्रदेशवासी अथवा पाहनवत् अर्थात् निष्ठुर, घोर &c. = इतना शीघ्र शीघ्र विद्युतपात होता है कि विजुलि अणु स्थिर ज्ञात होती है, डाक &c. = बारम्बार बोल रहा है, या = यह अर्थात् वर्षाकाल का दिन रात ।

अंकुर तपन ताप यदि जारब कि करब बारिद मेहे ।

इनवयोवन बिरह गँवायब कि करब से पिय लेहे ॥

हरि हरि को यह दैव दुरासा ।

सिन्धु निकट यदि कंठ सुखायब के दुर करब पियासा ॥

चन्दन तरु जब सौरभ छोड़ब सभधर बरिखब आगी ।

चिन्तामनि जब निज गुन छाड़ब की मोर करम अभागी ॥

सावन मँह घन बुन्दन वरिखब सुरतरु बांझ कि छाँदे ।

गिरिधर सेवि ठाम नहिं पायब विद्यापति रहु धन्धे ॥ १२ ॥

मेहे = मेघ ; यथा " का बरषा जब क्षिप्ति सुखानो " । लेहे = लह कर, पा कर, सौरभ = अच्छा गंध, कि मोर करम &c. = मेरे करम में कितना अभाग बदा है उस का क्या वर्णन नहीं हो सकता है, बांझ कि छाँदे = फलहीन वृक्ष जैसा हो, धन्धे = सन्देह में ।

सजनी को कहु आयब कन्हार्ई ।

बिरह पयोधि पार किय पायब मो मन नहिं पतियाई ॥

[१२५]

एखन तखन करि दिवस गवायनु दिवस दिवस करि मास ।
 मास मास करि बरिख गवायनु खोयनु ये तनु आस ॥
 हिमकरकिरन नलिनि यदि जारे कि करवि साधविमास ।
 भन विद्यापति पुन बर युवती अब नहिं होहु निरास ॥
 सो ब्रजनन्दन हृदय अनन्दन झटिति मिलव तुअ पास ।

एखन तखन = अब तब । साधविमास = वेसाख । झटिति = शीघ्र ।

हिम हिमकर कर ताप तपयनु भे गेला काल बसन्त ।
 कन्त काकमुख नहिं सँवादइ किय करु मदन दुरन्त ॥

जाननु रे सखि कुदिवस भेला ।

केहि छन विहि मोरा धीमुख भेला पलटि दीठि नहिं देला ॥
 यत दिन तनु मोर साध सधायनु बूझनु अपन निदान ।
 अवधिक आस भेल सब कहिनी कत सह पापपरान ॥
 विद्यापति भन साधव निकरुन कस समझायव खेद ।
 यह बड़वानल ताप अधिक भेला दारुन पियक विछेद ॥१४॥

हिम = शीतल । हिमकर = चन्द्रमा । तपयनु = सतायो गई । काल = काल
 स्वरूप । काकसंवादइ = काग मुख से पंथ-आगम श्रुति नहीं उचरता । पलटि
 &c. = फिर कर नहीं देखा अर्थात् प्रसन्न नहीं हुआ । साध सधायनु = इच्छा
 करके रखा; आशा देकर रखा । निदान = परिणाम । अवधिक &c. = जो क्षण
 जो मथुरा से फिरने को अवधि दे गये थे वह केवल कहानी हो गयी अर्थात्
 वचन पूरा नहीं हुआ । पाप = दुःख, वा पापी प्राण ।

हिमकर पेखि आनत करि आनन रहत करुन पथ हेरि ।
 नयन काजर देखे लिखइ विधुखुद ना सों कहतहि टेरि ॥

[१२६]

माधव कठिन हृदय परवासी ।

तोहरि विलासिनि पेखनु विरहिनि अबहु पलटि गृह जासी ॥
दखिनपवन बह कैसे युवति सह ताहि दुख देइ अनंग ।
गेलहुँ परान आस देइ राखइ दस नख लिखइ भुजंग ॥
भन विद्यापति सिवसिंह नरपति विरहक यह उपचारि ।
परभृतक डर पायस लेइ कर वायस नियरे पुकारि ॥१५॥

कहन = कातर भाव से । आनन &c. = आनन (सुख) दूसरी ओर फेर कर ।
विधुन्द = राहु । नयन काजर &c. = आँख के काजर से राहु का चित्र बनाकर
उस (राहु) से क्रोध हो कर जोर २ से कहती है कि वह चन्द्र को क्यों नहीं
घास करता । परवासी = परदेश में रहने वाला । भुजंग &c. = सर्प इवा पीता
है इसी लिये उस का चित्र बनाती है कि उपर्युक्त दक्षिण समोर को पान कर
जाय । उपचारि = चिकित्सा । परभृत = (दूसरे से पाला गया) कोकिल ।
पायस = खीर । वायस = काग । वायस &c. = काग को बुला कर खीर खिलाती
है और अनुरोध करती है कि जिस में वह कोकिल को न पाले ।

माधव इ नहिं उचित विचार ।

जनिक जेहन धनि कामकला सनि से किअ करु व्यभिचार ॥
प्रानहु तोहि अधिक कय मानय हृदयक हार समान ।
कोन परियुती आन के ताकव की थिक हुनक गेयान ॥
कृपिन पुरुष कें केओ नहिं निक कह जग भरि कर उपहास ।
निअ धन अछइत ना उपभोगव केवल परहिक आस ॥
भन विद्यापति सुन मथुरापति इ थिक अनुचित काज ।
मांगि लायव वित से यदि होय नित अपन करव कोन काज १६

जनिक = जिनकी । कोन &c. = अन्यको ओर ताकना कौन युक्ति है । हुनक =
उन का । मांगि &c. = यदि दूसरी से मांगकर अपना काम चलाया जाय तो

[११७]

अपना धन क्या होगा, यदि परस्त्री ही रमण करोगे तो अपनी स्त्री को क्या करोगे ?

साधव तूं जनि जाहु विदेस ।

हमरो रंग रभस लय जैवहं लैवहं कौन सनेस ॥

बनहिं गमन करु होयति दोसर मति विसरि जायव पति मोग ।

हीरा मनि मानिक नहि मांगव फेरि मांगव पहु तोरा ॥

जखन गमन करु नयन नीर भरु देखिओ न भेला पहु तोरा ।

एकहि नगर बसि पहु भेला परबस कैसे पुरत मन मोग ॥

पहु संग कामिनि बहुत सोहागिनि चन्द्र निकट जस तारा ।

भन विद्यापति सुन वर युवती अपन हृदय धरु साग ॥१७॥

रभस = आनन्द । गमन करु = जाति समय । मन = इच्छा ।

कालिक अवधि करिया पिय गेला । लिखइत काजि भीत भरि गेला

भेल प्रभात से पूछह सवहूं । कह कह हे सखि काली कबहूं ॥

काजि कालि करि तेजल आस । कंत नितंत न अइलन्ह पास ॥

भन विद्यापति सुन वर नारि । पुर रमनी गन राखल वारि ॥१८॥

नितंत = नितांत, एकदम । अइलन्ह पास = पास नहीं आया । वारि = मना कर के ।

मोहि तजि पिया मोर गेला विदेस । कौन परि खेपव वारि बएस

धइरज धयचित ना रह थीर । मदनदाह मोर दगध सरीर ॥

भनहि विद्यापति कवि जय भान । कि करत नाह दइव भेजवाम १९

वारि बएस = यौवन । धइरज = धैर्य, धीरज धरने से भी मन स्थिर नहीं रह सकता । जय भान = कविता में जिस की जय है । कि करत &c. = जब विधाता वाम है तो-जाह (खामो) क्या करे ।

[१२८]

सांझहि निअ मुख प्रेम पिंयाइ । कमलिनिभमरा रखल छिपाइ ॥
 सेज भेल परिमल फुल भेला वास । कतय भमरा मोर परल उपास ॥
 भमि २ भमरि बालमु निजखोज । मधुरिवि मधुकर सुतल सरोज ॥
 न फुल कहेसन डगड़त सूर । सिनेहो न जाय जीव सँ मोरे ॥
 केओ न कहे सखि बालमु बात । रइनि समागम भे गेला प्रात ॥
 भनहि विद्यापति सुनु ये भमरी । बालमु अछ तोर अपनहि नगरी २०

मुख प्रेम = अधरासृत । डगेत = डोलता है, उदय लेता है । सिनेहो
 स्नेह में मेरा प्राण क्यों नहीं निकल जाता ? रइनि समागम = रात में मिलने
 की बातचीत थी । अपनहि नगरी = अपने नगर में अर्थात् अपने मजे में ।

मन परबस भेल परदेस नाह । देखि निसाकर तन उठे दाह ॥
 मदन वेदन दे मानस अन्त । काहबहब दुख परदेस कन्त ॥
 सुमरि सनेह गेह नहिं आव । दारुन दादुर कोकिल राव ॥
 ससरि रखस निविवन्ध आज । बड़ मनोरथ घर पहु न समाज ॥
 भन विद्यापति सुनु परमान । बुझ नृप सिवसिंह नव पंचवान २१

ससरि &c = ढोला पड़ कर सरक जाता है । समाज = सुख का समाज ।
 सुनु परमान = परमान अर्थात् निश्चय जानो । 'सिवसिंह' पाठान्तर 'राघव' । नव
 पंचवान = रस रभस में कामदेव नूतन ।

माधव कि कहब तोहरो गेआन ।

सुपहु कहलि जब रोस कयल तब कर मूनल दुहु कान ॥
 आयलु गमन बेरि नीन न टरु अरि तें किछु पुछिओ न भेला ।
 एहन करमहिन हम सनि के धनि कर सँ परसमनि गेला ॥
 जौ हम जानितहुं एहन निठुर पहु कुच कंचन गिरि सांधी ।
 कौसल करतल बाहुं लता लय दढ़ कय रखितहुं बांधी ॥
 ई सुमरिए जब जँ म मरिए सब, बुझि पड़ हृदय पखान ।

गोप कुमरि हरि चरन हृदय धरु कवि विद्यापति भान २२

गेअन = ज्ञान । सुपहु = सुन्दर प्रभु, सुयोग्य स्वामी । नोनन टरु = नोन्दन टूटी । एहन = ऐसी । परस = पारस । कुच...बांधो = कौशल कर के बाधुलता तथा करतल रूपी फांस से कुच रूपी कंचनगिरि की तराई में कस कर बांध रखती कि जिस में मुझे छोड़ कर प्राणप्यारें कहीं दूसरी जगह न जायं । ई... तब = इस बात को भी स्मरण कर जब मैं नहीं मरती तब प्रतीत होता है कि मेरा हृदय पत्थर सा है ।

माधव हमरो रटल दुरदेस । केओ न कहे सखि कुसल संदेस ॥
जुग जुग जिवथु वसथु लख कोस । हमर अभाग हुनक नहिं दोस ॥
हमर करम भेला बिहि विपरीत । तेजलन्हि माधव पुरबिल प्रीत ॥
हृदयक वेदन बान समान । आनक वेदन आन न जान ॥
भन विद्यापति कवि जयराम । कि करत नाह दइव भेला वाम ॥

रटल = चले गये । केओ न = कोई नहीं । हुनक = उन का । हमर करम = हमारे कर्मदोष से । पुरबिल = पिछली । जयराम = भगवान भला करे ।

प्रथम वयस हम कि कहव सजनी, पहु तजि गेला विदेस ।
कत हम धीरज बांधव सजनी, तिनि बिनु सहव कलेस ॥
आवन अवधि वितित भेलि सजनी, जलधर छपल दिनेस ।
सिसिर बसंत उखम गेला सजनी, पावस लेल परबेस ॥
चहुँ दिस भींगुर भन करु सजनी, पिक सुन्दर करु गान ।
भनसिज मारु मरम सर सजनी, कतेक सुनव हम कान ॥
सेज कुसुम नहिं भावव सजनी, बिख सम चानन चीर ।
जइओ समीर सितल बहु सजनी, मन बच उड़ल सरीर ॥
कवि विद्यापति गावल सजनी, मन धनि करिय हुनास ।
सुदिन हेरि पहु आओत सजनी, मन जनि करिअ उदास २४

तिनि बिनु = उन के बिना । उखम = गरमो । पावोस = वर्षा । लेल
परवेस = आरंभ हुआ । मरस = मरमभेदो । मन &c. = मग और वचन ठिकाने
नहीं है ।

✽ उठु उठु सुन्दरि जाइछि विदेस । सपनहु मोर नहिं पाएब उदेस
उठइत उठि बैठलि मन मारि । बिरहक मातलि चुप रहे नारि ॥
एक हाथ उपटन एक हाथ तेल । सुन्दरि मनावय पिया घर गेल ॥
दुरि करु उपटन दुरि करु तेल । पछलि पहर राति खटपट भेल ॥
भन विद्यापति सुनु ब्रज नारि । धैरज धैरहु मिलत मुरारि ॥२६॥

✽ यह मियना प्रचलित वह गीत जिसे साधारण लोग प्रायः गाया करते हैं ।
जिस गीत के आदि में ऐसा (✽) चिन्ह हो उसे इसी प्रकार का जानना ।
जाइछि = जाता हूँ । उठइत = उठते ही । मनावय = मनाने को । राति =
रात में । धैरहु = धरे रहो ।

✽ मोहि तेजि पिया गेला विषम विदेस । नैन बरिसि
गेल मंघ असरेस ॥ कतेक दिवस हरि पाहुन भेल । आनि
सिंहासन बैसक देल ॥ पैचों न भेटए अछे फल कांच । पहु
लेखे मधुर हमर जिव कांच ॥ से सुनि कान्ह चलल रिसि-
आय । हंसि हंसि राधे रखलि बिलमाय ॥ कांच सिरिस
फल तोहँ वरु खाहु । हम दुख सहब वेमुख जनि जाहु ॥
भन विद्यापति ईरस भान । राधक बचन लोभायल कान ॥२७॥

विषम = कठिन । नैन &c. = नैनों से आंसू मघा असरेसा नक्षत्र के सदृश
भर रहा है । कतेक &c. = कितने दिनों के बाद माधव पाहुन ऐसा घर फिर
आये । पैचों = मगनी, उधार । लेखे = लिये । रिसिआय = रंज हो कर । रखलि
बिलमाय = ठहरा लिया । वरु = बरन, बल्के ।

✽ मोहन मधुपुर वास रे । हमहुं जायब तनि पास रे ॥

[१३१]

भुललनि कुबजा के नेह रे । तजलनि हमरो सिनेह रे ॥
 कत दिन ताकब बाट रे । रटला जमुनक घाट रे ॥
 उताहि रहथु दृग फेरि रे । दरसन देखु एक बेरि रे ॥
 भन विद्यापति भान रे । सुपुरुष गुनक निधान रे ॥२८॥

मधुपुर = मथुरा । तनि = उन के । रटला गये । रहथु = रहें । देखु = दें ।

● माधव गेलहन विदेस रे । करिऔन हुनक उदेस रे ॥
 हम सन सुन्दरि नारि रे । एको न लेलहनि विचारि रे ॥
 कखन जायब दृग फेर रे । दरसन देखु एक बेरि रे ॥
 भन विद्यापति भान रे । मन जनि करसि मलान रे ॥२९॥

करिऔन = करो । एको &c. = उन्होंने ने कुछ विचार नहीं किया ।

● यहन करम मोर भेल रे । पहु दुर देसहिं गेल रे ॥
 कतन कयलिं हम बाद रे । पहु सों छुटल समाझ रे ॥
 दै गेला वचनक आस रे । हमहु जायब तनि पास रे ॥
 भन विद्यापति भान रे । रसिक पुरुष रस जान रे ॥ ३० ॥

बाद = प्रतिवाद, अर्थात् रोका । पहु सों &c. = स्वामी ने मेरी बात न मानी ।

● मधुपुर गेल भगवान रे । हुन बिनु त्यागब प्रान रे ॥
 हुन का के कहै आन रे । अपने चतुर सेआन रे ॥
 मधु मिसरी पकवान रे । खैले तित मिठ जान रे ॥
 भन विद्यापति रूप रे । मानुख जनम अनूप रे ॥३१॥

हुन का &c. = उन को दूसरा कौन समझावे । खैले &c. = खाये बिना चीज़ का स्वाद नहीं मिलता ।

हरि कि मथुरपुर गेला । आजु गोकुल सुन भेला ॥
 रोदिति पिंजर सक । धेनु धावई माथुर मुख ॥

अब सोइ यमुना कूल । गोप गोपी नहिं डूल ॥
 हम सब तेजब प्रान । आन जनम होव कान ॥
 कानु होयब जब राधा । जानव विरहक बाधा ॥
 विद्यापति कह गीत । रोदन नहिं समुचीत ॥३२॥

मथुरापुर = मथुरा । सुन = शून्य । माथुर मुख = मथुरा की ओर । डूल =
 डोलती वा भ्रमण करती हैं, विचरण करती हैं । द्यान = दूसरे । कानु होयब
 &c. = दूसरे जन्म में जब श्री कृष्ण श्री राधिका होंगे तब उन्हें विरह को
 व्यथा जान पड़ेगी । समुचीत = उचित ।

अब मथुरापुर माधव गेला । गोकुल मानिक के हरि लेला ॥
 गोकुल उछलल करुना रोल । आंखिन जल देखि बहय हिलोल ॥
 सुनभेला मन्दिर सुनभेलानगरी । सुनभेलादसदिस सुनभेला सगरी
 कैसे जायव यमुना तीर । कैसे निहारव कुंजकुटीर ॥
 सहचरि सँ जहँ भेला फुलधार । कैसे जियव अब ताहि निहार ॥
 विद्यापति कह कर अवधान । कौतुक छापित तँहि रहु कान ३३

करुना रोल = आर्त नाद, हाहाकार । हिलोल = तरङ्ग । सगरी = सब ।
 फुल-धार = पुष्पवर्षण । छापित = लुका रहे हैं ।

हरि गेला मधुपुर हम कुलबाला । बिपथ पड़ल जस मालातिमाला
 कि कहसि कि पुछसि सुन प्रिय सजनी । कैसे बांचव इह दिन रजनी
 नयनक निंद गेला बयनक हाँस । सुख गेला पिया सँग दुख हम पास
 भन विद्यापति सुन बरनारि । सुजनक कुदिन दिवस दुइ चारि ३४

माधव विधु बदना ।

कबहु न जानइ विरहक वेदना ॥

तहुँ परदेस जइव सुनि भइ खीना ।

प्रेम परताप चेतन हरु, दीना ॥
 किसलय तेजि भुमि सुतलि अयास ।
 कोकिल कलरव उठय तरास ॥
 लोरहि कुच कुंकुम दुर गेला ।
 कृस भुज भूखन छितितल मेला ॥
 आनत बयन राइ हेरत गीम ।
 छिति लिखइत भेलि आंगुरि खीन ॥
 कह विद्यापति सुन री चरीत ।
 सो सब गुनइत भेलि मुरछीत ॥ ३५ ॥

लइव = जावेगे । प्रेम &c. = प्रेम के कारण चेतना जाती रह्यी, सब दोन ची
 दीखती है । मेला = मिला अर्थात् गिरा । आनत = अवनत ।

* तरुनि बयस मोर बीतल जसनी, पहु बिसरल मोर नाम ।
 कुसुम फल्लिए फुलि मउलल सजनी, भमरा जे लेल बिसराम ॥
 उठइत देह डगमग करु सजनी, किए रे दइव भेला वाम ।
 कोकिल सबद सुनावल सजनी, दिढ़ न रहल मोर ज्ञान ॥
 यहि बिधि कत दिन खेपव सजनी, अलप बयस अज्ञान ।
 कवि विद्यापति गावल सजनी, माधव सभ रस जान ॥ ३६ ॥

मउलल = मुरझाया । किए = क्यों । दिढ़ न &c. = स्थिर न रहा । खेपव =
 बिताऊंगी ।

सेहे परदेस परजोखित-रसिया, हम धनि कुलमति नारि ।
 तन्हि पुनु कुसल आउव निज आलय, हम जिव गेलह मारि ॥
 कहव पथिक पीया सँ मन दय, जौवन बल चलि जाय ।
 जों आविअ होँ अहना आउव, जाउ विजयी रितुराज ॥

अवधि रहत हे रहत न जीवन, पलटि न होयत समाज ।

गेला नीर विरोधक की फल, अवसर बहला दान ॥

जों अपने नहिं जानयार भल, जन सँ पूछ वञ्चान ॥ ३७ ॥

सेहे = वह । परजोखित—रसिया = (योखित = स्त्री) परनारो में अनुरक्त ।
कुलमति = कुलीन । कुसल = कुशलपूर्वक । आलय = घर । मन दय = समझा
कर । आविग्र = आना हो । अइना = अभी । अवधि &c. = अवधि के भीतर
जीवन के रहने में सन्देह है, अवधि व्यतीत होने पर तो अवश्य नहीं रहेगा ।
समाज = मिलन, भेंट । विरोधक = रोकने का । अवसर &c. = अवसर बीतने पर
दान का क्या फल है । जानियार भल = भली भाँति नहीं जानते । वञ्चान = वचन,
बात । जन &c. = दूसरों से यह बात पूछ लेंगे ।

कत दिन माधव रहव मथुरपुर, कब घूचव बिहि बाम ।

दिवस लिखी लिखि नखर खोआयनु बिलुरल गोकुल नाम ॥

हरि हरि काह कहव सम्बाद ।

सुमरि सुमरि नेह खिन भेला मोर देह, जिवनक अब कोन साध ॥

पूरब पियारि नारि हम अछनू, अब दरसनहु सँदेह ।

भ्रमर भ्रमरी भ्रमि, सबहु कुसुम रमि, नहिं तजे कमलिनि नेह ॥

आस निगड़ करि, जिउ कत राखव, अबहि जे करत परान ॥

विद्यापति कह आस हीन नह, आउब सो बर कान ॥ ३८ ॥

नखर &c. = नख को घिसा दिया । बिलुरल &c. = श्री कृष्ण को गोकुल का
नाम भी भूल गया । पियारी = प्रियतमा । आस &c. = आशा शृङ्खल में बांधकर ।
जे करत = जैसा कर रहा है अर्थात् जैसा व्याकुल हो रहा है ।

हम अबला दुख सहल न जाय । विरह दारुन दुजे मदन सहाय ॥

कोकिल कलरव मति भेला भोर । कह जानि सजनी कवन गतिमोर

पाहिलबयस मोर ना पुरल साध । परिहरि गेला पिया कोन अपराध ॥

[१३५]

ऐसन सखि रे करम किय भेल । विद्यापति कह हवे पुन भेल ३६

कह जनि सजनि = हे सजनो ! मत कह कि मेरी दशा कैसी है । ऐसन &c
= हे सखी ऐसा करम (भाग्य) क्यों हुआ । हवे = होगा ।

ॐ भरम भवन तेजि गेलाह मुरारि । जे देखि गेलाह तेकर गुन चारि
प्रथम एगारह फेरि दिअ पांच । तीसक तेगुन थोड़े दिन सांच
जेकर चगुन सय लिअ न विचारि । तैं तोहि भल नहि कहथि मुरारि
चालिस काटि अधा हरि दैल । तैं मोर जिवन एहन सन भेल
भनहि विद्यापति सुन ब्रजनारि । धैरज धैरहु मिलत मुरारि ॥४०॥

जे देखि &c. = जो बयस देख गये उस का चौगुना हो गया । प्रथम एगारह
&c = ११ + ५ = १६ वर्ष की उम्र हो गई । तीसक तेगुन &c = ३० का तिगुना
= अर्थात् नव्वे = (नव्य), नव्वी उमर थोड़ेही दिन सांच है अर्थात् थोड़े ही दिन
तक नई अवस्था रहती है । जे कर &c. = जिस का चौगुना सौ है अर्थात्
पचीस वर्ष, वही विलास का समय है, इस बात को तुमने नहीं विचारा । इसी से
ह मुरारि । लोग तुम्हें अच्छा नहीं कहते । तैं = इसी वजह से । कहथि = कहते
हैं चालिस अधा = ४० का आधा बीस अर्थात् विष, भाव यह कि हरि ने
विरहरूपी विष दिया इसी से मेरा जीवन ऐहन सन (ऐसा) परम दुखदाई हुआ ।
धैरज &c. = धीरज धरो श्रीकृष्ण अवश्य मिलेंगे ।

प्रथम एकादस दै पहु गेला । सेहो वितित मोर कत दिन भेला
रति अवतार बयस मोर भेल । तइओ न पहु मोर दरसन देल ॥
अब न धरम सखि बाँचत मोर । दिन दिन मदन दुगुन सर जोर
चान सुरुज मोहि सहिओ न होय । चानन लाग बिसम सर सोय
भनहि विद्यापति गुनवति नारि । धैरज धैरहु मिलत मुरारि ४१

प्रथम = प्रथम अक्षर अर्थात् 'क' । एकादस = एकादश अक्षर 'ट' । प्रथम
&c. = प्रभु 'कट' अर्थात् 'अवधि' 'वादा' दे कर गये । से हो &c. = कितने

दिन हुए वह अवधि भी बीत गई। रति &c. = मेरो देह में यौवन के चिह्न प्रकट हुए। सहिओ न होय = सहा नहीं जाता। विसम = विषम।

कुसुमित कानन कुंज बसी। नैनक काजर घोर मसी ॥
नख सों लिखिलन्हि नलनि क पात। लीखि पठै। लनिह आखर सात
प्रथमहिं लिखलन्हि पहिल बसंत। दोसरहिं लिखलन्हि तेसर क अंत
लिखि नहिं सकलन्हि अनुज वसंत। पहिलहिं पद अछि जीवक अंत
भनहि विद्यापति अच्छर लेख। बुध जन होथि से कहथि विसेख ४२

कुसुमित &c. = वसन्त ऋतु पा कर कानन फूलों से भर गया और विरहिणी अकेली कुंज में बैठकर नयन के काजर को स्याहो बनाकर लिख रही है। आखर सात = “ऋतुवतो मेलहु” अर्थात् ऋतुवतो हुई हूं अथवा “कुसुमित कानन” यही सात अक्षर लिखा, अर्थात् मेरो देह कुसुमित हुई, तात्पर्य यह कि प्रथम यौवन आरम्भ हुआ। प्रथम हि ... अंत = पहले उसने लिखा कि ऋतु आरम्भ हुई फिर लिखा कि तीसरा दिन बीत गया अर्थात् चौथा दिन ज्ञान का दिन आया। अनुज वसंत = काम, कामावतार (प्रधुम्न)। पहिलहि &c. = कंदर्प अर्थात् काम प्राणान्त करता है। विसेख = विशेष अर्थ।

माधव बुझलों तुअ गुन आज ।

पच दुन दस गुन दस सै सैगुन सौह देलह कोन काज ॥
चालिस काटि चारि चौठाई से मैं से पहु मोरा ।
कपटी कान्ह कोलि नहिं जानह कैलह जनमक ओरा ॥
नवो वाम कै नौ बुझा दै से उर हमर पराने ।
से निरखत मुख काहि लागत सुख कारन के नहिं जाने ॥
साठि काटि दह बुंद विवर्जित से कत कर उपहासे ।
पहुक विषाद सहे नहिं पावी दुइ बुन करब गरासे ॥
भनहि विद्यापति सुनु वर जौमति ताहि करत केअ बाधा ।

आपन मन दै पराहि रिभावी कमलनाल दुई आधा ॥४३॥

पच...सौगुन = असंख्य। सौहं = सौगन्ध, कसम। चाहिस...चौठाई = चालीस से चार घटाने पर ३६ बचा, उस की चौथाई नव। चालिस...मोरा = अर्थात् नव, नवीन वयसकी मेंहूँ और मेरे स्वामी हैं। कैलह &c. = मेरे जन्म का और अन्त कर दिया। बुन्ना = शून्य। नवो...दै = ६००००००००० = नौ सौ कोटि अथवा नवपद्म। नवो...पराने = नौ सौ कोटि (नायक) मेरे हृदय से परा गया है भाग गया है; वा नौसौ कोटि मेरा प्राण हृदय से दूर गया है; अथवा नव पद्म (नवीन नायक) मेरे हृदय का प्राण है। से निरखत &c. = उस के सुख को देख किस को सुख जान पड़ेगा। साठि...विवर्जित = ६० में से १० काट (निकाल) लेने से ५० बचा, इस को हुन्द विवर्जित अर्थात् शून्य रहित किया तो ५ बचा अर्थात् पांच, पंच। सेकत &c. = पंच कितना उपहास कर रहे हैं। दुइ बुन = दो और शून्य = २०, विष। करव गरासे = पान करूंगी। ताहि = उस में, प्रेम में। ताहि &c. = प्रेम में कौन बाधा दे सकता है। आपन &c. = अपना मन देकर दूसरे को (ऐसा) रिभाना चाहिये कि फिर कोई उसे कमलनाल की भांति दुइ आधा दो टूक नहीं कर सके अर्थात् उसे विलगा न सके।

माधव माधव होहु समधान । तुअ बिन करव भुवन रितु पान ॥
प्रथम पचीस अठाइस भेल । ता सम बदन हेम हरि लेल ॥
पचिस अठारह बिस तनु जार । छिति सुत तेसर से जिव मार ॥
सुमिरिअ माधव ते दिन सिनेह । जे दिन सिंह गेल मीनक गेह ॥
भनाहि विद्यापति आखर लेखि । बुध जन होथि से कहाथि विसेख ४४

होहु समधान = ध्यान दो। तुअ बिन &c. = भुवन १४ है और रितु ६ है, दोनों मिला कर बीस हुआ अर्थात् तुम्हारे विरह में विष पान करूंगी। प्रथम = प्रथम अक्षर 'क'; पचीसवां = 'म'; अठाइसवां 'ल'। प्रथम &c. = कमल जैसा हमारा आनन हेम (विरहपाला) के लगने से सुरभा गया। पचिस &c. = पचीसवां अक्षर 'म'; अठारहवां 'द'; विरधां = 'न' अर्थात् 'मदन' तन जरा रहा है। छितिसुत = मंगल। तेसर = मंगल से तीसरा अर्थात् शुक्र; शुक्र प्रभात समय

उदित होता है, इससे शुक्रसे तात्पर्य प्रभात हुआ; अथवा, शुक्र का अर्थ कामदेव । तात्पर्य यह कि निशा बीत गई और आप न आये, प्रभात समय शुक्र का उदय देख प्राण जा रहा है क्योंकि अब दिन में मिलने की आशा नहीं; अथवा कामदेव वियोग में प्राण ले रहे हैं । सिंह... गेह = 'सिंह' राशि का नाम है 'म' जिस अक्षर से मस्तक शब्द आरम्भ होता है अतएव 'मस्तक'; और 'मीन' राशि का नाम है 'प' जिस अक्षर से पद शब्द आरम्भ होता है अर्थात् 'पद'; भाव यह कि जिस दिन सिंह राशि मीन के घर गया अर्थात् तुम्हारा मस्तक मेरे पद पर पड़ा अर्थात् जिस दिन तुम मेरा पाव पड़ते थे ।

माधव मास तिथि छिला माधव अवध करिए पहु गेला ।
 कुच जुग सँभु परसि हसि कहलन्हि तें प्रतीति मोहि भेला ॥
 अवधि और भेला समय वेआपति जीवन बहि गेला आसे ।
 तखनुक बिरह जुबाति नहिं जीउति कि करत माधव मासे ॥
 छन २ कय कँ दिवस गमाओलि दिवस दिवस कय मासे ।
 मास मास कय बरस गमाओलि अब जीवन कोन आसे ।
 आम मजर धरु मन मोर गहवर कोकिल सबद भेला मन्दा ॥
 एहन बयस तजि पहु परदेस गेला कुसुम पिउल मकरंदा ।
 कुमकुम चानन आगि लगाओल केओ कहे सीतल चंदा ॥
 पहु परदेस अनेक कें राखथि विपति चिन्हिए भल मंदा ।
 भनहि विद्यापति सुनु बर जौमति हरिक चरन करु सेवा ।
 परल अनाइत तें छथि अंतय बालमु दोस न देवा ॥ ४५ ॥

माधव मास = बैसाख । माधव तिथि = समसी । और भेला = अन्त हुआ ।
 समय &c. = समय बीत गया । जीवन &c. = जीवन की आशा चली गयी ।
 कँ = कै, कितना । कय = करके । गहवर = वन । केओ = कौन । परल अनाइत
 = परवश होकर । अंतय = विदेस ।

चानन भेल विखम सर रे, भूखन भेला भारी ।

सपनहु हरि नहिं आएल रे, गोकुल गिरिधारी ॥
 अकसर ठाढ़ि कुसुम तर रे, पथ हेरलि मुरारी ।
 हरि विनु देह दग्ध भेला रे, भामर भेला सारी ॥
 जाहु जाहु तौ हे ऊधव हे, तौ हे मधुपुर जा हे ।
 चन्द्रवदनि नहिं जीउति रे, बध लागत कह कोहे ॥
 भनहि विद्यापति तन मन दे, सुनु गुनमति नारी ।
 आजु आओत हरि गोकुल रे, पथ चलु भट भारी ॥४६॥

पथ &c. = सुन्दर मुरारि को वाट जोड़ रही हूँ । चन्द्रवदनि = श्रीराधिका ।
 काहे = किस को । तन मन दे = ध्यान दे कर । भट भारी = शीघ्र ।

लिखब उनैस सताइस संग । से पुनि लिखब पचीसक संग ॥
 जनि काँ सोंपि गेला मोहि आहि । से पुनि गेलाह देखब नहिं ताहि ॥
 बड़ अनुचित आनक परवेस । से पुनि एलह तेकर संदेस ॥
 माधव जनि दीअह मोर दोस । कत दिन राखब हुनक भरोस ॥
 भन विद्यापति आखर लेख । बुध जन होय से कहय विसेख ४७

उनैस &c. = १८वां अक्षर 'ध'; २७वां 'र' और २५वां 'म'; अर्थात् "धरम" ।
 जनिकां &c. = तुम ने मुझे धर्म को सौंपा किन्तु उस ने भी अब मेरा साथ
 छोड़ दिया और कहीं दीख नहीं पड़ता । बड़ अनुचित &c. = दूसरे का घर में
 घुसना नितान्त अनुचित है किन्तु क्या किया जाय तुम्हारे अनुसन्धान में मदन
 मेरे हृदयमन्दिर में घुस आया । संदेस = खबर, अनुसन्धान । हुनक = धर्म का ।

हम सम अभागिनि दोसर न भेला । कान कान करत
 जनम बहि गेला ॥ आयब कहि मोरिं पिया चलि गेला । पुर-
 वक सब गुन बिसरित भेला । मोर मन जत दुख कहब कहा
 के । त्रिभुवन एत दुख नहिं जाने लोके ॥ भन विद्यापति
 सुन बनिराई । कान समझाइत हम चलि जाई ॥ ४८ ॥

वह गेला = बीत गया । विसरित भेला = भूल भेगया । कान समझाईत = कान
कान्ह को समझाने जा रहे हैं ।

कान मुख हेरइत भाविनि रमनी । फुकरइ रोअत भर
भर नयनी ॥ अनुमति मागत वर बिधु वदनी । हरि हरि
सबद मुरझि पडु धरनी ॥ आकुल कत परबोधल कान ।
अब नहिं मधुपुर करब पयान ॥ यहि सब सबद पइसल
सरवन । तब विरहिनि धनि पावल चेतन ॥ निज कर धरि
दुहु कानुक हाथ । यतन धरलि धनि अपनक माथ ॥ बूझि
कहय वर नागर कान । हम नहिं माथुर करब पयान ॥ जब
धनि पावल यह आसोयास । बैठलि पुहु तब छोड़ि निसास ॥
राइ परबोधि कय चलल मुरारि । विद्यापति यह कहइ न
पारि ॥ ४६ ॥

सरवन = अवन । निज ... माथ = कान्ह का हाथ अपने माथे पर रख कर
अपने सिर को सपथ दौ । पुहु = पुनः, फिर । निसास = निश्वास ।

कतिहुँ मदन तनु दहसि हमारि । हम नहु संकर हउँ वर
नारि ॥ नाहिं जटा यह, वेनि विभंग । मालति माल सिर,
नाहिं यह गंग ॥ मोतिम-वद्ध-मउलि, नह इन्दु । भाल नयन
नह, सिन्दुर विन्दु ॥ कंठ गरल, नह मृगमद सार । नहि
फनिराज उर, यह मनिहार ॥ नील पटम्बर, नह बघछाल ।
केलिक कमल यह, नाहिं कपाल । विद्यापति कह एहन
सुचन्द । अंग भसम नह, मलयज पंक ॥ ५० ॥

कतिहुँ = क्यों । हम ... नारी = हम शंकर नहीं एक अवला कामिनी हैं ।
हउँ = हूँ । मोतिम-वद्ध-मउलि = मुक्तायुक्त ललाट, वा मुक्तायुक्त किरीट । केलि
&c. = यह विलास कमल है, नर-कपाल नहीं हैं ।

इसी भाव की श्री जयदेव जी कृत एक कविता है :—c. f.

“हृदि विसलता हारो नायं भुजङ्गम नायकः ।
 कुवलय दलश्रेणी कसटे न सा गरल द्युतिः ॥
 मलयज रजो नेद भस्म, प्रियविरहिते मयि ।
 ग्रहर न हरभ्रान्त्यानङ्ग कुधा किमुधावसि ॥”

सखि हे मन्द प्रेम परिनाम ।

बल के जीवन कयल पराधिन नहिं उपकार इकठाम ॥
 भाँपल कूप लखइ ना पारनु आइत पड़लहुँ धाइ ।
 तखनक लघु गुरु कछु न बिचारनु अब पाछु तरइत चाइ ॥
 मधु सम बचन प्रेम सम मानुख पहिलहि जान न गेला ।
 अपन चतुरपन परहाथे सौँपनु हिय सँ गरब दुर भेला ॥
 यत दिन आनु भानु हम आछुनु अब बूझनु अवगाही ।
 अपन सूल हम आपहि चाँचनु दोख देयब अब काही ॥
 भनहिं विद्यापति सुन वर युवती चित नहिं गूनबि आन ।
 प्रेमहि कारन जीव उपेखिये जग जन के नहिं जान ॥५१॥

बल के = बलपूर्वक । इक ठाम = एक स्थान में भी अर्थात् एक विषय में भी । भाँपल कूप = ठका हुआ कूप । आइत &c. = दौड़कर आते हुए गिर गयो । लघु गुरु = ऊँच नीच । अब पाछु &c. = अब फिर तयार कर निकलना चाहतौ हूँ । जान न गेला = ज्ञात नहीं हुआ । चतुरपन = ज्ञान । दुर भेला = दूर हुआ । भानु भानु = अन्य भाव अर्थात् अन्य रूप से । अवगाही = अन्तर में प्रवेश कर, गौर कर के । चाँचनु = बनाया । गूनबि आन = कुछ दूसरा न सोचना । प्रेम उपेखिये = प्रेम के लिये जीवन कौ भी उपेक्षा करनी होती है ।

माधव सो अब सुन्दरि बाजा ।

अविरल नयन बारि भरु नीभर जनु सावन घन माला ॥
 पुनिमक इन्दु तिन्दु मुख सुन्दर सो भेला अब ससि-रेहा ।

कलैवर कमल कांति जिनि कामिनि दिन २ खिन भेला देहा ॥
 उपवन हेरि मुरछि पडु भूतल चिन्तित सखिगन संगी ।
 पद अंगुली दइ छिति पर लीखइ पनि कपोल अवलम्बा ॥
 ऐसन हेरि तुरितु हम आयनु अब तुहु करह विचार ।
 विद्यापति कह निकरुन माधव बूझनु कुलिसक सार ॥ ५२ ॥

सारि &c = निर्भर वत् जल भर रहा है । पुनिमक &c = पूर्णचन्द्र विनिन्दक
 चन्द्र मुख । ससि रेहा = शशिकला वा दूज का चन्द्र । दइ = से, दे कर । पनि =
 पाणि, हाथ । तुरितु = तुरत, अभी । कुलिसक सार = वज्र का सत् ।

माधव अबला पेखनु मतिहीन ।

सारंग सबद मदन अति कोपित, ताइ दिन भेला खीन ॥
 रहत विदेस सँदेस न पठयसि, कस जीवय ब्रजबाला ।
 ऐहन सुन्दरि रुप गुन आगरि, जारत विरह-विख-ज्वाला ॥
 उर विनु सेज परस नहिं पारय, सोइ लोटत सहिठाम ।
 पुनिमक चाँदा टूटि पड़ल जनु, भामर चम्पकदाम ॥
 सोहि अवधि दिन बहु असोयासलु, तँ धनि राखत प्रान ।
 भन विद्यापति निकरुन माधव, सुनइत हरल गेयान ॥ ५३ ॥

सारंग = कोकिल, स्मर । कोपित = उद्धोष । ऐहन = उस की एसी । उर
 मितु &c = जो वत् स्थल भिन्न शय्या स्पर्श नहीं कर सकती थी वही अब भूतल
 पर लोट रही है । पुनिमक &c = पूर्णिमा का चाँद शुष्क चम्पक दाम पर टूट
 पड़ा है अर्थात् सुन्दरी करतल पर कपोल दे कर बैठो हुई है ; यहाँ अंगुली
 मणि चम्पकदाम और मुख पूर्णशशि है । असोयासलु = आश्वासन दिया ।
 सोहि...दिन = उसी दिन से ।

माधव ! हेरिया आइनु राई ।

विरह विपति नाहिं देइ सम्मति, रहल बदन धनि चाई ॥

मरकत अस्थलि सूतलि आछलि, विरहे से खिन देहा ।
 निकष-पषान जनू पँचवाने, कषिल कनक रेहा ॥
 वयनमंडल लोटय भूतल, ताह से अधिक सोहे ।
 राहू भय ससि भूमि पड़ल खसि, ऐसन उपजल मोहे ॥
 वीरह वेदन का तोहि कहव, सुनहु नीटुर कान ।
 भन विद्यापति से जे कुलवति, जीवन संसय जान ॥ ५४ ॥

हरिया आइनु = देख आयी हूँ । विरह &c. = विरह दुःख से कातर कुछ
 उत्तर श्री मति ने नहीं दिया, मुह की ओर देखतो रह्यो । अस्थलि = स्थली ।
 मरकत अस्थली = हरिद्वर्ण-मणि-मण्डित शिविर, वा हरी भूमि । खिन देहा = श्री
 कृष्ण विरहिणी दुवल राधा । निकषपषान = कसौटी । निकष &c. = मदन ने
 मानो कसौटी में घिस कर स्वर्ण रेखा अङ्कित की है । वयन मंडल = मुख
 सण्डल । राहू &c. = ऐसा बोध हुआ मानो राहु के डर से चन्द्रमा भूतल में गिर
 पड़ा है ।

माधव ! जाइ न पेखहु बाजा ।

आजिहु कालि प्रान परितेजव, कत सह विरहक ज्वाला ॥
 सीतल सलिल, कमल-दल-सेजहुँ, लेपहुँ चन्दन-पंका ।
 सो सब जतहुँ अनल सम होयल, दसगुन दहइ मृगङ्गा ॥
 सकति गेल, धनि उठइ धरनि धरि, खेपहि निसि निसि जागी ।
 चमकि चमकि धनि बोलत सिव सिव, जगत भरल तखु आगी ॥
 किय उपचार बुझइ ना पारय, कवि विद्यापति भाव ।
 केवल दसमि दसा विधि सिरिजल, अबहु करह अवधान ॥ ५५ ॥

परितेजव = परित्याग करेगी । मृगङ्गा = चन्द्रमा । सकति गेल = शक्ति जातो
 रह्यो । खेपहि = काटतो है, बिताती है । बोलत सिवसिव = काम से पीड़ित होने
 से शिव को स्मरण करती है कि वंश काम को पुनः दग्ध कर उस की रक्षा करें ।

तबु = उस के लिये । दसमी दसा = मृत्यु । केवल &c. = अब भी तुम उस का प्रबन्ध करो जिस में उस की मृत्यु न हो अर्थात् उसे दर्शन दो ।

माधव ! कत परबोधव राधा ।

हा हरि ! हा हरि ! कहतहि बेरि बेरि अब जिउ करव समाधा ॥
 धरनि धरिया धनी यतनहि बैठत पुनहि उठइ नहि पारा ।
 सहजहि विराहिनि जग मँह तापिनि बैरि मदन सर धारा ॥
 अरुन नयन लोर तितल कलेवर विक्षोलित दीघल केसा ।
 मन्दिर बाहिर करइत संसय सहचरि गनतहि सेसा ॥
 कि कहव खेद भेद जनु अन्तर घन घन उतपत साँस ।
 भन विद्यापति सोइ कलावति जीवन बंधन आस ॥५६॥

समाधा = शेष । जिउ &c. = जीवन त्याग करेंगी । दीघल = दीर्घ, लम्बा ।
 मन्दिर &c. = अब शयनभवन से बाहर निकालने में सन्देह होता है कि कहीं दुर्बलता के कारण उस की मृत्यु न हो जाय, सखी सब शेष गणना कर रही है अर्थात् मृत्यु की आशङ्का कर रही हैं । उतपत = उत्तप्त, गरम । जीवन &c. = तुम्हारे मिलने की आशापास में अपने जीवन को श्री मति ने बांधि रखा है ।

कानु सों सजनि कहाबि कर जोरि । बोलि दुइ चार
 सुनायबि मोरि ॥ कितना हम कहँ परिखब आर । तोहर
 अराधन विदित सँसार ॥ हमरो संग न टूटव नेह । सुपुरुष
 बचन पखानक रेह ॥ कवि विद्यापति कह सुन राइ । कानु
 बुझायब हम अब जाइ ॥ ५७ ॥

बोलि &c. = मेरी दो चार बातें उन्हें कह सुनाना । कितना &c. = मेरी अब कितनी परीक्षा करेंगे । तोहर &c. = सभी जानते हैं कि मैं तुम्हारी आराधना करती हूँ ।

जहुँक विरह डर हार न देली । से अब नदि गिरि

आँतर भेली ॥ जासु गरब हम काहु न गनला । पिय बिन
के का नहिं मोहि कहला ॥ सजनी ! बड़ दुख रहल मरम में ।
पिय बिलुड़ल तब का जीवन में ॥ पुरब जनम बिहि लिखला
भरम । पिया दरसन, नहिं छिला जे करम ॥ आन अनुराग
पिय दुर देख गेला । पिय बिनु पांजर भांभर भेला ॥ भन
विद्यापति सुन वर नारि । धैरज धरु चित मिलब मुरारि ॥५८॥

जहुंका = जिस के । जहुंका &c. = जिस के विरह के डर से हार नहीं पड़-
नती थी, कि ऊपर हार रहने से हमारे उन के अन्तर हो जायगा, सो प्रियतम
अब इतना दूर है कि आपस में नदी और पर्वत का अन्तर पड़ गया है । जासु
&c. = जिस के प्रेम में गर्विता हो कर मैं किसी की परवाह नहीं करती थी उसी
प्राणेश्वर के बिना आज सुझे किस ने क्या नहीं कहा । मरम = हृदय । का =
क्या मज्जा । पुरब &c. = पूर्व जन्म में विधाता ने भ्रम वश हमारे भाग्य में प्रियतम
दर्शन लिख दिया, नहीं तो वास्तविक में हमारे कर्म में ऐसा बदा नहीं था
अतएव आज दर्शन का सुख हमें नहीं होता है । आन अनुराग = दूसरे के प्रेम
में फंसकर । भांभर = जर्जरित हुआ, हड्डी २ नजर आने लगी ।

प्रेमक गुन कहई सब कोई । प्रेम सौं कुलवति कुलटा होई ॥
हम जो जनती प्रिति दुरन्त । तब का जइती पापक अन्त ॥
अब सब बिष सम लागय मोह । हरि हरि ! प्रीति करय जनि कोइ ॥
विद्यापति कह सुन वर नारि । पिये पानि का जाति विचार ॥५९॥

मोइ = हम को । पिये &c. = जल ग्रहण करने पर जाति पूछने से क्या
लाभ है ।

हम जनली नहिं टूटब नेहा । सुजनक प्रिति पवानक
रेहा ॥ ताहे भेला अति विपरित । जनली ना अस दइब
गठीत ॥ य सखि कहबि कान करजोड़ि । विफल प्रेम कय आँकुर

मोड़ि ॥ जो अब कहहु सखि अगेयानी । हम सौंपालि हिय निज
करि जानी ॥ विद्यापति कह लागत धन्ध । जा उर प्रिती
सो जन अन्ध ॥६०॥

ताहे भेला &c. = सो विलकुल उल्टा होगया । जनलोना &c. = देव ने ऐसा
मेरे ललाट में लिखा है सो मैं नहीं जानती थी । मोड़ि = ममोरना । निज करि
= अपना जान । जा उर &c. = जिस के हृदय में प्रेम का बिकाश होता है वह
अन्धा हो जाता है ।

कत गुरु गंजन दुरजन बोल । मन नहिं गनलू ओ
रस भोल ॥ कुलज रीति छोड़लु जसु लागि । सो अब
बिलुरल हमर अभाग ॥ सुन री सुन सखि कहबि भुरारि ।
सुपुरुष परिहर दोख बिचारि ॥ जो पुन सहचरि होय मति-
मान । करय पिसून बचन अवधान ॥ नारी अबला कि बोलब
आन । तुहुँ रसनानंद गुनक निधान ॥ मधुर बचन कहि
कानु बुझाइ । यहि कर देखि रोख अवगाइ ॥ तुहुँ वर
चतुरी हम किय जान । भन विद्यापति यह रस भान ॥६१॥

ओरस = प्रेमरस । भोल = भोर, विह्वल । जसु लागि = जिस के किये ।
परिहर = छोड़ता है । जो... अवधान = हे सहचरि जो बुद्धिमान है वह पिसूस
(दुर्जन का वा निष्ठुर) वाक्या भी ध्यान पूर्वक सुनता है । रसनानंद =
वाक्पटु । अवगाइ = निवारण वा प्रशमन हो । वर = अष्ट ।

लोचन लोर तटिनि निरमान । तही कमल मुखि करत
सिनान ॥ तब माधव तुअ राई जीवइ । जब तुअ रूप
नयन भरि पीवइ ॥ फूयल कवरि उलटि उर पड़ई । जनु
कनयागिरि चामर चरई ॥ तुअ गुन गनइत नींद न होय ।
अवनत आनन धनि कत रोय ॥ भन विद्यापति सुनु वर
कान । बुझनू तुअ हिय कठिन पखान ॥ ६२ ॥

तटिनि = नदी । तट्टी = उसी में । फूजल = बिखरौ हुई । चामर = चमरो मृग ।

माधव से नव नागरि बाला ।

तुहू बिछुरलि वीहिक डारलि भेलि निमालिक माला ॥
 से सोहागिनि नित नित दिन गिनि पन्थ निहारइ तोरा ।
 नीचल लोचन नहिं सुने बचन ढरी ढरी पडु लोरा ॥
 तोहरि मूरलि से दिक छाड़लि भामरु भामरु देहा ।
 जनु सोनार सो कसि कसटी पै तेजल कनकरेहा ॥
 फूजल कवरी ना बांधे सम्बरी धनि जे अवस एता ।
 रुखलि भूखलि दूखलि देखलि सखिन रंग समेता ॥
 तूससि तूससि पडय खसि खसि आलि अलिङ्गन चाहे ।
 जेकर व्याधि पराधिन औखध ते कर जीवन काहे ॥
 भन विद्यापति करिए सपधि आउर अपरुष कथा ।
 भावित भावित तोहर चरित भरम होवल यथा ॥ ६३ ॥

डारलि = समर्पण किया । निमालिक = निर्माल्य की । दिन गिनि = अवधिकी गणना कर । तोहरि &c. = तुम्हारी सुरत्नीको ध्वनि जिस दिनसे उस ओर हुई । से सोनार = वह स्वर्णकार अर्थात् मदन । कसटी = कसौटी । तेजल = छोड़ दिया । सम्बरी = संभार कर । भूखलि = कृशा । दूखलि = दुःखिता । तूससि = तुष वा भूसी ऐसी । जे कर व्याधि &c. = जिस की व्याधि का औषध पराये के हाथ में है उस के जीवन की क्या आशा है ।

माधव पेखनु सो धनि राई । चितपुतली जनु यक दिठ चाई ॥ बैठल सकल सखी चहुँ पासा । अति खिन स्वास बहत तसु नासा ॥ अति खिन तनु जनु कंचनरेहा । हेरइत कोइ न धर निज देहा ॥ कंकन बलय गजित दुइ

हाथ । फूजल कवरि न सम्बरि माथ ॥ चेतन मुरछन बुझइ
न पारि । अनुछन घोर विरह उबर जारि ॥ विद्यापति कह
निरदय देह । तेजल अब जग जन अनुनेह ॥ ६४ ॥

चितपुतलो = चित्र-पुतलो । चार्द = देख रही है । खिन = चोचन, धोसा ।
हेरइत &c. = श्रीमती को देख कर दुःख से कोई निज देह धारण अर्थात् प्राण-
रक्षा की इच्छा नहीं करता अथवा श्री मती को देख कर किसी की यह धारणा
नहीं होती कि यह उन का अपना देह है । गलित = गिर गया है । सम्बरि
= समहाली नहीं जातो । चेतन &c. = चेतन तथा मूर्च्छा में अन्तर नहीं ज्ञात
होता । निरदय देह &c. = हे मूर्त्तिमान निरदय ओक्षण ! तुम्हारा आरचण देख
कर संसार मात्र ने तुम से स्नेह छोड़ दिया अथवा श्रीमती को निरदय देह ने
सब से स्नेह छोड़ दिया ।

सजनी ! कान के कहवि बुझाय ।
रोपि प्रेम विज अंकुर मोड़ल, बाँचक कौन उपाय ॥
तेल विन्दु जस पानि पसारल, ऐसन तुअ अनुराग ।
सिकता जल जस छनहिं सुखायल, ऐसन तोहर सुहाग ॥
कुलकाभिनि जिनु, कुलटा भय गेनु तोहर बचन लोभाय ।
आपन कर हम मूड़ मुड़ायनु, कानक प्रेम बढ़ाय ॥
चोररमनि जनु मन मन रोअइ, अम्बर वदन छिपाय ।
दीपक लोभ सलभ जनु धायलि, सो फल भुँजइत चाय ॥
भन विद्यापति यह कलियुग रिति, चिन्ता जनि करु कोइ ।
अपन करम दोख आपहि भुँजइ, जो जन परबस होइ ॥ ६५ ॥

मोड़ल = (ममोड़ल) ममोड़ दिया, नष्ट किया । बाँचक = बचने का । पसारल
= पसरल, फैल गया । तेल &c. = जल पर एक बून्द तेल पड़ जाने से जिस
प्रकार वह चंचल इधर उधर बहता फिरता है स्थिर नहीं रहता वही दशा तुम्हारे
प्राति का है । 'रोपि' से 'सुहाग' तक नायिका का सम्वाद नायक से है ।

‘कुलधामिनो’ इत्यादि श्रीमती का स्वयम् वेद है। जिनु = जो थी। भय गीनु = हो गयी। चोररमनि &c. = c. f. “चोर नारि जिमि प्रगट न राई।” सलभ = पतङ्ग। धायलि = मैं श्री कृष्ण को ओर दौड़ो। भुंजइत चाय = भोगना चाहिए। कलियुग = क्षापर के अन्त में और कलि के प्रारम्भ में श्री कृष्ण लीला हुई थी।

नाह दरस सुख विहि कैला बाध । अंकुर भांगल विनु
अपराध ॥ सुखमय सागर मरुभुमि भेला । जलद निहारि
चातक मरि गेला ॥ आन कयल चित विहि कैला आन ।
अब नहिं निकसय कठिन परान ॥ ये सखि बहुत कयलु
हिय मांह । दरसन नहिं भेला सुपुरुष नाह ॥ सुनइत निक-
सय कठिन परान । अबनहिं स्याम नाम करु गान ॥ विद्या-
पति कह सुपुरुष नारि । मरन समापन प्रेम विथारि ॥६६॥

कैला = किया। नाहदरस &c. = प्रीतम के दर्शन में द्रम्हा ने बाधा डाला।
अंकुर = प्रेमांकुर। भांगल = तोड़ा। कयल = किया। आन = अन्य। आन &c. =
c. f. “मेरे मन कहु और है विधना के कहु और”। बहुत = बहुत लालसा।
अबनहि = मेरे श्रवण में। मरन समापन = मृत्यु पर्यन्त। विथारि = विस्तार।
मरन &c. = अन्तकाल तक प्रेम निबाहती है।

कत दिन घूचब यह हहकार । कत दिन घूचब गुरु
दुख भार ॥ कत दिन चांद कुमुद हब मेलि । कत दिन
कमल भ्रमर करु केलि ॥ कत दिन पिय मोर पूछब बात ।
कबहु पयोधर देहब हाथ ॥ कत दिन लेइ बैठायब कोर ।
कत दिन मनोरथ पूरब मोर ॥ विद्यापति कह सुन बर
नारि । भागव सब दुख मिलब मुरारि ॥ ६७ ॥

घूचब = मिटेगा। हब = होगा। कबहु = क्या कभी।

मलिन चिकुर सजनी तनु चीर । करतल वयन नयन

भरु नीर ॥ सुन माधव किय बोलव तोय । तुअ गुन लुबुधि
मुगुधि भेलि सोय ॥ कोइ कमल दल करइ बतास । कोइ
चतुर धनि हेरइ निसास ॥ कोइ जो कहे घर आयल मुरारि ।
सुनि चेतन भेलि नाम तोहारि ॥ उर डोले सुन्दर स्यामल
बेनी । कमलिनि पर जनु कारी सांपिनी ॥ विद्यापति कवि
यह रस गावय । विरहिनि वेदन सखि समुझावय ॥ ६८ ॥

नदि बहे नयनक नीर । मुरझि पड़ल तसु तीर ॥
माधव तोहरि करुन अति वंक । तोहे नहिं तिरि बध कर संक ॥
तइछन छिन भेला सांस । कोइ नलनी दल कयल बतास ॥
चौदसि चांद समान । तुअ बिनु सून भेल तसु प्रान ॥
कोइ रह राइ उपेखि । कोइ सिर धुनि धुनि देख ॥
कोइ सखि परिखय सांस । हम धायलिं तुअ पास ॥
पलटि चलहु निज गेह । मन गुन पुरब सिनेह ॥
कवि विद्यापति भान । मन जानि बुझइ सेयान ॥ ६९ ॥

तसु = उस के । तिरिवध = तिरिया बध, स्त्रीहत्या । तइछन = तभी से ।
उपेखि = उपेक्षा कर । मन जानि = मन में विचार कर ।

कि कहब माधव कि करब काज । पेखनु कलावति
प्रिय सखि माझ ॥ अछइत आछल कंचन पुतुला । भुवन
अनूपम रुप गुन कुसला ॥ अब भेला विपरित भामर देह ।
दिवस मलिन जनु चांदक रेह ॥ कर कपोल लूलित कच
भार । कर नख लिखु माहि चख जलधार ॥ विद्यापति भन
सुन वर कान । राजा सिवसिंह इथे परमान ॥ ७० ॥

अछइत आछल = रहती थी, पहले थी । भामर = विवर्ण, काला । लूलित =
मालु लायित, बिखड़े हुए ।

सुन सुन माधव पड़ल अकाज । बिरहिनि रोअति
मन्दिर मांझ ॥ अचेतन सुन्दरि नहिं खोले दीठ । कनक
पुतलि जनु अवनिय पीठ ॥ के जाने कइसन तोहरि
पिरीति । बड़इ दारुन प्रेम बधइ युवति ॥ कह विद्यापति सुनहु
मुरारि । । सुपुरुख नहिं छोड़े रसवाति नारि ॥ ७१ ॥

दीठ = दृष्टि, नयन । अविनय पीठ = पृथिवी पर पड़ी है । के = कौन । बड़इ
&c. = दारुण प्रेम बढ़ा कर युवती को बध करते हैं ।

पहिले पिया मोर सुख सुख हेरिहेरि, तिलयक छोडल
न अंग । अपुरुष प्रेम पास तनु गांथल, अब तेजल मोर
संग ॥ सखि ! हम जीयब अब केहि लागि । जे बिनु तिल
यक, रहइ न पारिय, से भेला पर अनुरागि ॥ अंगुलिक
आंगुठि से भेल बाहुटि, हार भेला अति भार । मनमथ
वानहि अन्तर जरजर, विद्यापति दुख कहइ न पार ॥ ७२ ॥

सुख सुख = सुखवर्धक सुख । हेरि = देख कर । बिनु = देखे बिना । बाहुटि
= बाहुटा, कराभरण विशेष ।

सखि गन कन्दर थोइ कलेवर घर सों बाहिर होय ।
बिनु अवलम्बन उठइ न पारइ अतय निवेदलु तोय ॥

माधव ! कत परबोधब तोय ।

देह दीपति गेला, हार भार भेला, जनम गंवायलि रोय ॥

आंगुठि बलय भेला काम पिंघावल, दारुन तुअ नव नेह ।

सखि गन साहस लुअत न पारइ तन्तुक दोसर देह ॥

नवमी दसा गेलि देखि आयलु चालि कालि निसि अवसान ।

आजुक जत छन गेला सकल दिन, भला मन्द विहि जान ॥
 केलि-कलप-तरु सुपुरुख अवतरु, विद्यापति कवि भान ।
 राजा सिवसिंह रूपनरायन, लछिमा देवि परमान ॥७३॥

कन्दर=कन्धर, स्कन्ध । थोइ=थाप कर, रख कर । अतय=अतएव ।
 निवेदलु=निवेदन किया । दीपति=दीप्ति, कान्ति । पिंधावल=पेन्हावल,
 पहराया । तन्तुक दोसर=द्वितीय तन्तुवत, तांत ऐसा । नवमी दसा=मूर्च्छा ।

सुन सुन सुन्दरि कर अवधान । नाह रसिक वर विद-
 गध जान ॥ काहे तुहु हृदय करासि अनुताप । अबहु मिलब
 सोइ सुपुरुख आप ॥ उदभट प्रेम रसिक अनुराग । निति
 निति ऐसन हिय महुँ जाग ॥ विद्यापति कह बांधह थेह ।
 सुपुरुख कबहु न तेजय नेह ॥ ७४ ॥

उदभट=उद्भट, उत्कट । थेह=धैर्य ।

कि कहबि मोहि निदान । कहइत दहइ परान ॥
 तेजलु गुरु कुल संग । पूरल दुकुल कलंक ॥
 विहि मोर दारुन भेला । कान निठुर होय गेला ॥
 हम अबला मति बामा । गनलि न इह परिनामा ॥
 कि करब यह अनुयोग । आपन करमक भोग ॥
 कवि विद्यापति भान । तुरत मिलायब कान ॥ ७५ ॥

निदान=परिणाम । मतिवामा=विपरीत बुद्धि; विवेचना हीन । अनुयोग
 =तिरस्कार ।

विसरत वदन होय अवसान । कही न जाय बुझत
 अवधान ॥ कहत न बनत सहत नहिं जाय । कहहु सखी
 अब कि करि उपाय ॥ कोन विहि निरमल यह पुन नेह ।
 कुलवाति कियक गढ़ल मोर देह ॥ कर धरि काम करय बेभार ।

राख्य मन्दिर कुल आचार ॥ रहइ न पारिय चलइ न पारि ।
घन फिरि जस पिअर महुँ सारि ॥ इतना विपद जीये कस
देह । भन विद्यापति विषम सिनेह ॥ ७६ ॥

होय अवसान = थक जाता है, अवसन्न होता है (भोजपुरी) । अवधान =
लिहाज । पुन = पुन्य । बेभार = बाहर, वहिः शब्दज । कर धरि &c. = हाथ धर
कर काम घर से बाहर खींचता है अर्थात् काम ताप से व्याकुल होकर मन
चाहता है कि घर से बाहर हो जाय और कुलाचार इधर बलपूर्वक घर में
रखता है । रहइ &c. = घर में रहना सख्त नहीं होता और घर से बाहर भी
नहीं हुआ जाता । घन = अविरत । घन फिरि &c. = जैसे पिछरे की सारिका
सदा इधर उधर घूमा करती है, मैं भी घर में अस्थिर भाव से विचरण किया
करती हूँ ।

करे कर धरि जे कहल किछु, वदन बिहसी थोर ।

जैसे हिमकर मिरिग परिहरि, कुमुद कयल कोर ॥

रामा ! सपाथि करहु तोर ।

सोइ गुनवाति सुगुन गनि गनि, न जानि किय गति मोर ॥

गलित वसन लोलित भूषन, फूजल कवरी भार ।

आहा उहु करि जे कहल किछु, ताकि बिछुरीवार ॥

निभृत केतन हरल चेतन, हृदय रहल बाध ।

भन विद्यापति भेलि से ऊमति, वीपति पड़ल राध ॥ ७७ ॥

कयल कोर = गोद में किया । किय = क्या । बिछुरीवार = भूलने योग्य है ।

निभृत केतन = निर्जनकुञ्ज । बाध = बाधा, पीड़ा । ऊमति = उन्नता । राध = राधा ।

बर रामा हे ! सो किय बिछुरन जाय ।

कर धरि माथुर अनुमति माँगलि, ततहि पड़ल मुरझाय ॥

किछु गद गद स्वर लहु लहु आखर, जे किछु कहल सु रामा ।

कठिन सरिर मोर तेइ चल आयल, चित्त रहल सेइ ठामा ॥

ता बिन राति दिवस नहिं भावय, ताँहि रहल मन लागी ।
 आनि रमनि सो राज सम्पदमय, अछिये जस वैरागी ॥
 दुइ एक दिवस निचय हम जायब, तहु परबोधन ताई .
 विद्यापति कह चित रहल तह, प्रेम मिलायब जाई ॥ ७८ ॥

सो कि बिकुरन जाय = वह प्रेम क्या विलग होजाने से भूलता है । माथुर = मथुरा । लहु = मृदु । तेंद = इसी से । ताँहि = वहीं । आनि &c. = अपर रमणी गण के बीच और राजसम्पदा में मैं वैरागियों सा हूँ अर्थात् उन्हें भोगता नहीं ताई = उस को ।

तुहु जलधर सहजहिं जल राज । हम चातक जलवि-
 न्दुक काज ॥ जल दय जलद जीव मोर राख । अवसर देले
 सहस होय लाख ॥ तनु देअ चान, राहु कर पान । तइओ
 कला नहिं होय मलान ॥ भन विद्यापति जलद उदार ।
 जीवन दय पालथि सँसार ॥ ७९ ॥

तनु देअ चान &c. = चन्द्र अपना शरीर दान करता है, राहु उस को ग्रस करता है तथापि चन्द्रकला मलौन नहीं होती । पालथि = पालन करता है । यह “अन्योक्ति” का उदाहरण है ।

तोहर बचन अमिय अइसन, ते मति भूलालि मोर ।
 कतय देखल भला मँद होय, साधु न फारय चोर ॥
 सजनी ! अब किय बोलब आउ ।

आगू गुनि जे काज करय नहिं, पाछे हो पछताउ ॥
 आपनि हानि जे कुल के लाघव, किछु न गूनलि तबे ।
 मन मनोरथ बनिहि लागल, अब गमाओल हमे ॥
 जतन कतन किय बेसाहय, गुंजा केदहु कीन ।
 परक बचन कूआं धस देअ, तैसन के मतिहीन ॥

भमर भमर सब कौउ बोलय, मैं धनि जानल मोर ।
 पढ़ि गुनिं हमें सबे विसरल, दोख नहीं कलु तोर ॥
 भन विद्यापति दूति भोरी । चेतन गोपय गुपुति चोरी ॥८०॥

ते = उसी वंश से । कतय &c. = कितना ऐसा देखा कि अच्छा और बुरा का विचार करने पर साधु और चोर में विभेद नहीं पाया जाता । भाउ = भोर । आगु = आगे का, परिणाम । आपनि &c. = कुछ सज्जा गया कर जो मैंने अपनी कितनी छानि की इस का विचार उस समय नहीं हुआ । मन &c. = मनका मनोरथ सत्य अर्थात् दूसरी नायिकाओं के निकट पूर्ण होने लगा अतएव नायक ने सुख भुक्ता दिया । किय = क्या । गुंजा = गुञ्जा, रत्ति, लाल ? केदहु = कोई । जतने &c. = परिश्रम कर लाल को खरोद कर क्या कोई बेंच देता है । धस देश = गिर जाय । भमर &c. = नायक को सभी 'भमर' अर्थात् भिन्न भिन्न पुष्पों (नायिकाओं) से नेह करनेवाला कहते थे किन्तु मैं उन्हें 'मोर' अर्थात् अपनी अथवा एक बदली (नायिका) से नेह करने वाला समझती थी । दोख = दोष । नेपाल प्रचलित गीत है ।

धन जोवन रस रंग । दिन दस देखिअ तुलित तरंग ॥
 सुघटित विह बिघटावे । बाँक बिधाता की न करावे ॥
 इओ भला नहीं रीति । हठ न करिअ दुरि पुरवक पिरीति ॥
 सच कित हेरय आस । सुमिरि समागत सु पुहुक पास ॥
 नयन तजय जलधार । चेतय न चरी न पहिरय हार ॥
 लख जोजन बस चन्द । तैओ कुमुदिनि करय अनन्द ॥
 जेकरा जा संग रीति । दुरहुक दुर गेलें दुइ गुन पिरीति ॥
 विद्यापति कवि गाहे । बोलल बोल सुपहु निरवाहे ॥ ८१ ॥

दिन दस = कुछ दिनों तक ; थोड़े दिनों तक । तुलित तरंग = समान उमड़, बराबर सौज । सुघटित = अच्छे की बिधाता बुरा बना देता है । इओ = यह । हठ &c. = हठ कर के पूर्वानुराग को हटा न देना । सच &c. = सच कह आशा की

आँखों से किधर देख रही है ; अब किस के ऊपर तेरी आशा है । अथवा " सच-
कित." &c. = सुपुत्र का निकट आगमन [सुमिरि २] कर आशा से इधर उधर
चकित हो कर देखती है कि कब किधर से आते हैं । दुरदृक् &c. = एक दूसरे से
जितनी दूर होते हैं उतनी ही प्रीति बढ़ती है । गाहे = गान करता है । बोलल बोल
= बोल, प्रतिज्ञा ।

सुन्दरि बिरहि सयनघर गेल । किय विधाता लिखि
मोहि देल ॥ उठलि चिहाय बइसलि सिर नाथ । चहु दिस
हेरि २ रहलि लजाय ॥ नेहक बंधु सेहो छुटि गेला । दुहु
कर पहुक खेलाओन भेला ॥ भनहि विद्यापति अपरुष
नेह । जेहन बिरह हो तेहन सिनेह ॥ ८२ ॥

सुन्दरि &c. = 'विधाता ने मेरे कपाल में क्या लिख दिया' इत्यादि कहती हुई
विरहिनी शयनागार में गयी । उठलि &c. = स्वप्न में प्रिय समागम हुआ, उठने पर
जो अवस्था हुई यहाँ उस का वर्णन है । नेहक &c. = प्रेम में सुग्ध हो प्रियतम के
दर्शन होने पर और कुछ नहीं कर सकी केवल उन का हाथ अपने हाथ में ले कर
खेलती रह गयी । जेहन &c. = जैसा विरह हो वैसा ही खिड़ होता है । अर्थात्
वियोग से प्रेम बढ़ता है और प्रीति होता है ।

गगन गरजि घन घोर । कखन आयेत पहु मोर ॥
उगलन्हि पांचोबान । अब न बचत मोर प्रान ॥
करव कओन प्ररकार । जोवन भेल जिव काल ॥
भनहिं विद्यापति भान । पुरुष करहिं परमान ॥ ८३ ॥

उगलन्हि = प्रकट हुआ, प्रकाश हुआ । जोवन &c. = यौवन के कारण मेरा प्राण
जा रहा है । भान = गीत ।

आसालता लगाओलि सजनी, नैनक नीर पटाय ।
से फल अब तरुनत भेला सजनी, आँचर तर न समाय ॥
कांच सांच पहु देखि गेला सजनी, तसु मम भेला कुह भान ।

दिन दिन फल तरुनत भेला सजनी, पहु मन न करु गेआन॥
 सब कर पहु परदेस बसि सजनी, आयल सुभिरि सिनेह ।
 हमर एहन पहु निरदय सजनी, नहिं मन वाढ़य नेह ॥
 कवि विद्यापति गाओल सजनी, उचित आओत गुनसाह ।
 उठि बधाव करु मन भरि सजनी, आज आयव घर नाह ८४

लगाओलि = लगवली, रोपा । तरुनत भेला = पका । तसु मन &c. = जिस भांति
 भांतु कुड़ेसा से छिप जाता है उसी भांति उस का मन भ्रम में पड़ा हुआ है ।
 उचित &c. = गुण को यथार्थ समझने वाला आवेगा ।

कोन गुन पहु परबस भेला सजनी, बुझलि तिनक भल मंद ।
 मनमथ मन मथ तिन बिनु सजनी, देह दहय निसि चंद ॥
 कह ओ पिसुन सत अवगुन सजनी, तिनसन मोहि नहिं आन ।
 कतेक जतन सँ मेटिअ सजनी, मेटय न रेख पखान ॥
 जँ दुरजन कटु भाखय सजनी, मोर मन होअ न बिराम ।
 अनुभव राहु पराभव सजनी, हरिन न तेजे हिमधाम ॥
 जइओ तरानि जल सोखय सजनी, कमल न तेजय पाँक ।
 जे जन रतल जाहि सँ सजनी, कि करत बिह भय बाँक ॥
 विद्यापति कवि गाओल सजनी, रस बूझय रसमंत ।
 राजा सिवासिंह मन दय सजनी, मोदवती देइ कंत ॥ ८५ ॥

तिनक = उन का । मथ = मथारहा है, व्यग्र कर रहा है । जँ = यद्यपि । बिराम
 = निवृत्त । होष न &c. = नहीं छटता है । पराभव = तिरस्कार, बिनाश । तरनि =
 घूर्ण । रतल = प्रीति किया । बाँक = बक्र, प्रतिकूल ।

करतल लीन सोगय मुखचन्द । किसलय मिलु अभि-
 नव अरविन्द ॥ अहानिसि गरय नयन जल धार । खंजन
 गिलि उगिलत मोतिहार ॥ कि करति ससिसुखि कि बोलति

आन । विनु अपराध विमुख भेला कान ॥ विरह विखिन
तनु भेलि हरास । कुसुम सुखाय रहल अछि बास ॥ भख-
इति सँसय पड़ल परान । कबहु न उपसम करु पचवान ॥
भन विद्यापति सुन वर नारि । धैरज धरहु सुमिलत
सुरारि ॥ ८६ ॥

लीन = पड़ा हुआ । क्लिप्तकथ = पक्षप, पक्षा । मिलि = निगल कर । विखिन =
विषम । हरास = शोण, क्षीण । रहल अछि = शेष रह गया है । उपसम = शान्ति,
आराम ।

माधव ! देखलि विओगिनि वाम ।

अधर न हाँस विलास सखी संग, अहनिसि जप तुअ नाम ॥
आनन सरद सुधाकर सम तसु, बोले मधुर धुनि बानी ।
कोमल कमल अरुन कुम्हिलायल, देखि मन ऐलहुं जानी ॥
हृदयक हार भार भेला सुभ धनि, नयन न होय निरोध ।
सखि सभ आय खेलाओलि रंग करि, तसु मन किछुओ न बोध ॥
रगड़ल चानन मृमगद कुमकुम, सभ तेजलि तुअ लागी ।
जनि जलहीन मीन जक फिरइछि, अहनिसि रहइछि जागी ॥
दूति उपदेस सुन गुनि सुमिरल, तइखन चलताह धाई ।
मोदवतीपालि राघवसिंह गति, कवि विद्यापति गाई ॥ ८७ ॥

कमल = सुख । मन जानी = मन में उझे वियोगिनि समझ कर । सुभ = उत्तम,
श्रेष्ठ । निरोध = रोक, नयन से अश्रुधारा बन्द नहीं होती । रंग = तमाशा, खेल । न
बोध = नहीं टीकता । जक = परेशान । गुनि = गुणना, विचारना अर्थात् विचार कर ।
तइखन = उसी क्षण, तुरन्त ।

प्रथमहिं उपजल नव अनुरागे । मन कर प्रान धरिअ
तसु आगे ॥ अब दिन दिन भेला प्रेम पुरान । भुगुतल
कुसुम सुरभि कर आन ॥ हरि सँ कहब सखि हमरी

विनीती । विसरि न हलविष पुरुष पिरीती ॥ रभस समय
पिय जत कहि गेला । अंधरहु आध सेहो दुरि गेला ॥
भनहिं विद्यापति इहो रस जाने । राजा सिवसिंह लखिमा
रमाने ॥ ८८ ॥

मन कर = इच्छा होती थी । भुगतल = सुरभा हुआ । सुरभि कर = सुगन्धि
देती है । भुगतल &c. = अपना कुसुम सुरभा हुआ और अन्यपुष्प सुगन्धमय प्रतीत
होता है । विनीती = विनती । विसरि &c. = विस्मरण न हो । जत = जितना । अंधरहु
आध &c. = जितना नहीं पूरा हुआ उस का आधा भी मैं सुँघ से नहीं कह सकती ।

माधव कि कहव ताही । तुअ गुन लुबुधि मुगुध भेलि
राही ॥ मलिन वसन तनु चीरे । करतल कमल नयन ढरु
नीरे ॥ उर पर सामरि बेनी । कमलकोष जनि कारि
नागिनी ॥ केओ सखि ताकय निसासें । केओ नलनीदल
करय बतासे ॥ केओ बोल आयल हरी । ससरि उठलि
चिर काम सुमिरी ॥ विद्यापति कवि गावे । विरहवेदन
निअ साखि समझाये ॥ ८९ ॥

चौर = टांक रहा है । केओ नलनीदल &c. = कोई सखी कमलपत्र का पंखा डो-
लाती है । ससरि = सरक कर ।

सजल नयन करि, पिय पथ हेरिरे, तिल थक होय युग चारी ।
विधि बड़ दारुन, ताहपुन अइसन, दूरहि कयल मुरारी ॥

सजनी ! किय करव परकार । कि मोर करम फल पिय
गेला दुरदेस, नित नित मदन भँमार ॥ विरहिनि निरास,
जाउक रि उनक पास, जा ढिग पितम निवास । पाखि यदि
होईतु, पिया पासे जइतु, दुख कहितु तसु पास ॥ आनि देइ
मोर पिउ, राखइ हमार जिउ, को यह करुनावान । विद्यापति
कह धैरज धर चित, तुरितहि भीजव कान ॥ ९० ॥

ताड़ = इसी कारण से । परकार = उपाय । भंमार = भाँवर कर रहा है ।
 बिरहिन..... निवास = मैं जो बिरह में निराश हो रहो हूँ, सो मेरा दुःख उस
 के पास जाय जहाँ पीतम निवास करते हैं, अर्थात् सौति के पास जाय । यह
 करुनावान = ऐसी करुणामयी है । तुरितहि = शीघ्र ही ।

चन्दन गरल समान । सीतल पवन हुतासन ज्ञान ॥
 हेरइ सुधानिधि सूर । निसि बैठलि धनि भूर ॥
 हरिहरिदारुन तोहर सिनेह । ता हेरि जीवन पोड़लि सँदेह ॥
 कविविद्यापति लोचन बारि । सजनी बटिया हेरइ तोहार ६१

हुतासन = पाग । भूर = उदास । दारुन = कठिन । लोचन बारि = पाँखों
 बचा कर, वा पाँखों में पाँसू भर कर ।

कह तु कह तु सखि, बोल तु बोल तु रे हमर पिया कोन देस रे ।
 मदन सरानल इह तनु जर जर कुसल सुनते सन्देस रे ।
 हमरो नागर तहवां भोरायर कइसन नागरि मिलल रे ॥
 नागरि पाइया नागर सुखि भेला हमरो हिय दिय सेल रे ॥
 संखा करब चुर, बसन करब दुर, तोड़ब गजमति हार रे ।
 पिय यदि तेजल, सोलह सिंगार सब यमुन सलिल अब डार रे ॥
 सीसक सींदुर सजनी दुर करु पिय बिन सकल निरास रे ॥
 भन विद्यापति सूनह युवती दुख भेला अबसेस रे ॥ ६२ ॥

कुसल = कुशल संवाद सुनने के लिये । भोरायर = भोरायल, सुग्घ हुआ ।
 सेल = सूल, पीड़ा । चुर = चूर्ण । डार = फेंक दो ।

सहकार मुञ्जर भमर गुञ्जर कोकिल पञ्चम गाय ।

दच्छिन पवन बिरह बेदन निठुर नाह न आय ॥

सजनी ! कह मोहि सोइ उपाय ।

मधूमास जब माधव आयब बिरह बेदन जाय ॥

एक बेरि हर भसम कयलहन तिसर नयनक आगि ।

अहिर कुल पुन जनम लयल हमरहीं बध लागि ॥

अंगज आछल अनंग भइ गेला धनू धयला हाथ ।

नाह निरदय भागि गयला तोड़ल हमर साथ ॥

भन विद्यापति सुनहु युवती आकुल ना करु चीत ।

राय सिवसिंह रुपनरायन लछिमा देवि सहीत ॥६३॥

सहकार = जिस की सुगन्धि दूर तक जाती है ऐसा आम । सुच्चर =
मोजर । दच्छिन...वेदन = दक्षिण समीर विरह व्यथा बढ़ा रही है । अहिर ...
लयल = प्रतीत होता है कि कामदेव ने पुनः अहिर कुल में श्रीकृष्ण के रूप में
जन्म ग्रहण किया जिस हे श्रीकृष्ण कंदर्प के ससान शोभायमान दीखते हैं ।
अंगज = कामदेव ; क्योंकि मदन मनोविकार से अङ्ग में उत्पन्न होता है ।

सुन सुन माधव कर अवधान । तो बिनु दिवस रइनि
ना जान ॥ जतहु कलानिधि सँपुरन भेला । ततहुँ कलावति
छिन भइ गेला ॥ नील नलिनि लेइ जब करि बाय । हृदय
बहुत भय उड़ि जनि जाय ॥ चल चल माधव करु अगु-
सार । इन्दु पुरल धनि नहिं जिय आर ॥ भन विद्यापति
सुन ब्रजराय । तुरत चलहु धनि मरि जनि जाय ॥ ६४ ॥

अवधान = गौर । संपूरन = पूरा । कर अनुसार = अगुधान करो ; आगे बढ़
कर श्रीमती से मिलो । आर = अब । मरि &c. = मर न जाय ।

पुरुख रतन हेरि मन भेला भोर । तिल आध सुख नहीं
दुख नहीं ओर ॥ बड़ अभिलाख भजिनु बर नाह । दैव
बिमुख भेला कि कहब काह ॥ दरसन दुलह दुलह नव
नेहा । विरह बिकल मन जिवन सँदेहा ॥ अपरुप रूप मधुर
रस लीला । सकल नागरि गन कखनक सीला ॥ अनुचित

काज सहज मोर भेला । रोअत सजनि नवयौवन गेला ॥
 मरमक दुःख कहत होय लाज । दारुन दैव करल कोन काज ॥
 रसिक सिरोमनि नागर कान । रसइंगित विद्यापति भान ॥६५॥

भेला मोर = मुग्ध हुआ । भजितु = सेवा किया । दुलह = दुर्लभ । रस झोला
 = रसिक ; श्रीलक्ष्मण । कखमक झोला = कर्षण की शिला ; आकर्षणी शिला ;
 सुखक । अर्थात् सब नागरि के लिये सुखक पत्थर है जिस से सभी का चित्त उन
 की ओर आकर्षित हो जाता है ।

प्रेमक अंकुर आत जात भेला ना भेला युगल पलास ।
 प्रतिपद चाँद उदय जस जामिनि सुख नव भेला निरास ॥
 सखि हे अब मोर निठुर मधाई । अबधि रहल बिठुराई ॥
 को जन चाँद चकोरिन बंचव माधव मधुप सुजान ।
 अनुखन कान प्रीति अनुमानय विघटित विहि परमान ॥
 पाप परान आन नहिं जानत कान कान करि भूरे ।
 विद्यापति कह निकरुन माधव लखिमापति रस पूरे ॥६६॥

प्रेमक...पलास = बीज पहले अंकुरित होती है और तब उस में दो पत्तें
 निकलते हैं; यहां प्रेम बीज उर अन्तर में अंकुरित हुई किन्तु उस में युगल पलास
 (पत्र) नहीं लगे अर्थात् प्रेम का संचार मात्र हुआ उस की छवि नहीं हुई।
 प्रतिपद ... निरास = शुद्ध प्रतिपदा का चन्द्रोदय होने से रत्नों का सुख जिस
 प्रकार नैराश्य हो का कारण होता है अर्थात् अल्प क्षण स्थायी रहता है मेरा
 सुख भी उसी भांति का हुआ । बिठुराय = भूल कर । विघटित &c. = अदृष्ट
 दोष से ऐसा नहीं घटा ॥

प्राण पिया सखि मोर पिया । अबहूं न मीलल
 कुलिसहिया ॥ नख खोजलि हम दिन लेखि लेखी । नयन
 अंधायलु पिय पथ देखी ॥ जब हम बाला परिहरि गेला ।

किय दोख किय गुन बूझि न भेला ॥ अब हम तरुनि
बुझलु रस भासै । अस कोउ नाहि कहे पिय पास ॥
विद्यापति कह कैसन प्रीत । राधापति कर ऐसन रीत ॥६७॥

लिखि लेखि = लिख कर, लेखा करते हुए । अंधायलु = अंधा किया ।
परिहरि = छोड़ कर । भास = आभास, चमक, योति ।

उधव ! कब हम सो ब्रज जाइव ।

कब पितु नन्द यसोमति कोरे बसि खिरसर माखन खाइव ॥

कब प्रिय धवलि सुरभि स्यामलि लेइ सखन सँ दूध दुहाइव ।

कब श्रीदाम सुवल प्रिय मित मिलि कानन धेनु चराइव ॥

कब जमुना तिर नीप तरु तर मोहन वेनु बजाइव ।

कब वृषभानुकिसोरि गोरि सों कुंजहि रास रचाइव ॥

कब ललितादि सखी सुन्दरि कह सादर अंक लगाइव ।

विद्यापति कह अइसन सुभ दिन राइक मान मनाइव ॥६८॥

सुरभि = गाय । नीप = कदम्ब । राइ = श्रीराधिका जी ।

सुन सुन्दरि ! विदग्ध सुपुरुष सोई ।

कानुक हृदय सबहुँ हम बूझलुँ कबहुँ न विछुरइ
तोई ॥ एक दिवस हम मथुरा समागम कान्हहि दरसन
भेला । तुअ कहिनि यत पुन पुन पूछल लोर लोचन ढरि
गेला ॥ पीत निचोल नयन युग मोछइ पुन पुन अचेतन
होई । उर पर पानि हानि थिति लोटइ फुकरि फुकरि कत
रोई ॥ तुअ विन राति दिवस नहिं जानय अतय बूझलुँ
अनुमाने । तोहि विछुरत बलि कबहुँ न बोलावि कवि
विद्यापति भाने ॥६९॥

विछुरइ = विसरता है, भूलता है । तोई = तुम्हें । निचोल = वस्त्र ।

पानि = हाथ । थिति = छिति, पृथिवी । अतय = इतना ।

कतना बेदन मोहि दे, हे मदना ! हर नहिं बोलु मोहि
युवती जना ॥ नहिं मोहि जटाजूट, चिकुरक बेनी । सिर
सुरसरि नहिं, कुसुमक सेनी ॥ चानि तिलक मोहि, नहिं
इंदु गोटा । पावक ललाट न, सिंदुरक फोंटा ॥ कंठ गरल
नहिं, मृगमद चारु । फनिपति गर नहिं, मुकुता हार ॥ भन
विद्यापति सुन देव काम । यक दोस अछे ओहि नामक वाम ॥१००॥

दे = देता है । चिकुर = केश । बेनी = चोटी । सेनी = ओणी । चानि =
ललाट । इंदु = इन्दु, चन्द्रमा । फोंटा = टीका । गर = गले में । ओहि...
वाम = उन्नी के नाम ऐसा मेरा भी नाम वाम अर्थात् वामा (रमणी) है; शिव
को वामदेव कहते हैं ।

मनमंथ तोहि की कहब अनेक ।

दिठि अपराध परान पय पीड़लि, इ तुअ कवन विवेक ॥
दाहिन नयन पिसुनगन बारन, परिजन बामहि आध ।
आध नयन कोन जब हरि पेखलु, ता भेला यत परमाद ॥
पुर बाहिर पथ करत गतागत, नहिं हेरत कान ।
तोहर कुसुमसर कतहुँ न संचर, हमर हृदय पंचवान ॥१०१॥

अनेक = अधिक । दाहिन &c. = दक्षिण नेत्र से हरि को निन्दको के भय से
नहीं देख सकी । कोन = कोना । गतागत करत = आते जाते ।

आध नयन कय तहु कर आध । कतब सहब मनसिज अपराध ।
का लागि सुन्दरि ! दरसन भेला । जेउ छल जीवन सेउ दुर गेला ॥
हरि हरि कवन कयलि हम पाप । जे सब सूखद ताहि तह ताप ।
सब दिस कामिनि ! दरसन जाय । तइओ बेआधि विरह अधिकाय
कौनक कहब मिदिनि से थोर । सिब सिब यही जनम भेला ओर ॥

त कर = तिस का । आध &c. = आधे नयन को भी आधे से अर्थात् किञ्चिन्

[११५]

माच इस ने श्रीकृष्ण को देखा था । का लानि = क्यों । छल = था । ताहि तब =
उसी से । दरसन जाय = देखने में आता है । तइओ = तथापि । कौनक =
किस को । मिदिनि से = पृथिवी में । ओर = अन्त ।

यहि बाट माधव गेल रे । मोहि किछु पुछिओ न भेल रे ॥
जाइत सुजमुना तीर रे । आंतर भेंटल अहीर रे ॥
नयनहुं नयन जुझाय रे । हृदय न भेल बुझाय रे ॥
मोहि छल होत रतिरंग रे । मधुर मधुरपति संग रे ॥
चिकर न भेल संभारि रे । बूझल कान्ह गँमारि रे ॥१०३॥

जुझाय = लड़ गया । हृदय &c. = हृदय को कसक न गयी । मोहि छल =
मेरी इच्छा थी । बूझल &c. = श्रीकृष्ण ने मुझे गँवारि (सामान्य गोपी) समझा ।

प्रथमहि हृदय बूझौलह मोहि । बड़ पुन बड़ तप पैलिस तोहि ॥
कामकला रस दैव अधीन । मैं बिकाब तै बचनहिं कीन ॥
दूति दयावति कहबि बिसेखि । यक बेरि पुन कस होयत देखि ॥
दुरे दुर देखलि जाइत आज । मन छल मदन साहि देव काज ॥
ताहि लय गेल विधाता बाम । पलटल डीठ सून भेल ठाम ॥
साहि देव = साध देंगे, कामना पूर्ण करेंगे । पलटल डीठ = फिरकर देखा तो ।

मानान्तर मिलन और प्रेम वैचित ।

दुर गेला मानिनि मान । अमिय सरोवर डूबल कान ॥
मागत तब परिरम्भ । प्रेम भरि सुन्दरि जनु स्थम्भ ॥
नागर मधुरिम भाष । सुन्दरि गदमद दिग्ध निसास ॥
कोर अगोरल नाह । करइ सँकीरन रस निरवाह ॥
लहु लहु चुम्बइ नयन । सरस विरद हृदि सजल नयन ॥

[१६६]

साहस उर कर देला । मनहिं मनोभव तब नहिं भेला ॥
तोड़ल जब निवि बन्ध । हरि सुख तबहिं मनोभव मन्द ॥
तब कलु नाहक सूख । भन विद्यापति सूख कि दूख ॥१॥

परिरम्भ = आलिङ्गन । स्थम्भ = स्थम्भितं हुई । सुन्दरि &c. = सुन्दरी प्रेम में
गदगद हो दीर्घ निःश्वास ले रही है । अगोरल = यत्न से रखा । संकीरन = संकु-
चित भाव से, क्योंकि मानान्त होने पर भी कामिनी का मन कुछ देर तक संकु-
चित वा अप्रसन्न रहता है । सरस &c = सुन्दरी ने प्रगाढ़ मान किया था अत-
एव मानान्त होने पर भी मन सम्पूर्ण रूप से प्रसन्न नहीं हुआ इसी से उन का
हृदय सरस होने पर भी विरस और नयन सजल है । साहस = साहस कर के ।
सर = उरोज । तब = तब भी । मन्द = अल्प अल्प उद्वेक हुआ ।

अपरुप राधा माधव संग । दुर्जय मानिनि मान भेल भंग ॥
चुम्बइ माधव राइ बयन । हेरइ मुखससि सजल नयन ॥
सखिगन आनँद निमगन भेला । दुहु जन मन महुँ मनसिज गेला ॥
दुहु जन आकुल दुहु कर कोर । दुहु दरसन विद्यापति भोरा ॥२॥

निमगन = निमग्न । गेला = प्रवेश किया । कोर = गोद । दुहु दरसन &c. =
युगल सरकार के दर्शनहित कवि विह्वल है ।

कह कह सुन्दरि रजनि विलास । कइसे नाह पुरल
तुअ आस ॥ कितना यतन विहि करि अनुमान । नागर
नागरि कयल निर्मान ॥ अखिल भुवन महुँ तुहु वर नारि ।
सुपुरुष नाह इ मिलल मुरारि ॥ पियक पिरित हम कहइ न
पार । लाख बदन विहि ना दिला हमार ॥ आपन गजमोति
हार उतार । यतन पेन्हवलन्ह कंठ हमार ॥ कर धरि पिय
बैसावल कोर । गँध चनन अँग लेपल मोर ॥ फूजल कवरि
बाँधय अनुपाम । ताहे बोड़ि देला चम्पक दाम ॥ मधुर

[१६७]

मधुर दिठ हेरइ कान । आनँद जल परिपूरल न्यान ॥ भन
विद्यापति भाव तरंग । अब कहि सुन सखि सो परसंग ॥३॥

इ = यह । कहइ न पार = कह नहीं सकती । अनुपाम = अनूपम । ताहि =
उस में । बेड़ि देला = गूथ दिया । मधुर &c. = सहर्ष कनखोसे । न्याय = नयन ।

सखि हे ! कि लय बुझायब कन्त ।

जनि कर जनम होइत हम गेलहुँ येलहुँ तनि कर अन्त ॥
जाहि लागि गेलहुँ से चल आयल तें तरु रहलि छिपाइ ।
से पुनि गेल ताहि हम आनलि तें हम परम अन्याइ ॥
जैतहिं नाल कमल हम तोरलि करय चाह अवतंस ।
काहे कोहायल मधुकर धायल तेंहि अधर करु दँस ॥
लेलि भरल कुँभ तें उर गासलि ससरि खसल केसपास ।
सखि दस आगु पाछु भय चललिहि तें चल उधर सवाँस ॥
भन विद्यापति सुनु वर जयमिति ई सभ राखु मन गोइ ।
दिन दिन ननदि सँ प्रीति यढ़ायब बोलि बेकत जनु होइ ॥४॥

कि लय = क्यों कर । जनि कर &c. = सूर्य उदय होते में गयी और सूर्यास्त होने
पर आयी । जाहि...आयल = जल भरने गयी थी और राह में पानी बरसने लगा ।
से पुनि...आनलि = छुटि बन्द हुई तब मैं जल भर कर लाई । अन्याइ = अन्याय ।
जैतहिं = जैस ही । अवतंस = कर्णभूषण । कोह कोहायल = रंज हो कर । उर
गासलि = ज़ार से साँस लिया ।

ननदी ! सरुप निरुपह दोस ।

बिनु बिचार व्यभिचार बुझैबह सासु करय बहु रोस ॥
कयतुक कमल नाल हम तोरलि करय चहलि अवतंस ।
रोख कोख सँ मधुकर धावल तहि अधर करु दँस ॥
सरोवर घाट बाट कंटक तरु हेरि नहिं सकलहु आगु ।

[१६]

साँकर बाट उवाटि हम चललहुँ त कुच कंटक लागु ॥
 गरुअ कुंभ सिर थिर नहिं थाकय तें ओ धसल केसपास ।
 सखि जन सँ हम पाछु पड़लहुँ तें भेला दिरध निसास ॥
 पथ अपराध पिसुन परचारल तथिहु उतर हम देला ।
 अमरख ताहि धिरज नहिं रहल तें गदगद सुर भेला ॥
 भन विद्यापति सुनु वर युवति ई सभ राखहु गोई ।
 ननदी सँ रस रीति बचाओव, गुपुत वेकत नहिं होई ॥५॥

सरूप = मेरारूप देख तू मुझे दोषी अनुमान करती है । बुझैबझ = बुझा देने से, कह देने से । अवतंस = कर्णभूषण, कर्णफूल । रोख कोख = भीतर से रंज होकर, हृदय से क्रोध कर अथवा क्रुध होकर कमलकोटर से अमर दौड़ा । उवाटि = कुवाट, कुराह । धसल &c = जूड़ा धस गया, जूड़ा उरझा गया । सखि जन सँ &c = सखियों से पीछे पड़ने के कारण दौड़ कर उन्हें छूने की मैंने चेष्टा की, अतएव दम फूल गया और दीर्घ निःश्वास चल रहा है । परचारल = निन्दा किया । तथिहु = उस का । अमरख अमर्ष = क्रोध । सुर = स्वर, आवाज़ ।

रभसहि तह बोलन्हि मुख कांती । पुलकित तनु मोर
 कत धर भांती ॥ आनँद नोर नयन भरि गेला । प्रेमक
 आँकुर अंकुर भेला ॥ भेटल मधुर पति सपन मों आज ।
 तखनुक कहनी कहइत लाज ॥ जखन हरल सखि आंचर
 मोर । रसभरे समरु कसनी भोरं ॥ कर कुच मंडल रह-
 लिह गोय । कमल कनकगिरि भांपल होय ॥ कवि विद्या-
 पति इ रस गावे । पुन फल सुपुरुष की नहीं पावे ॥६॥

रभसहि = बड़ी चाह से । मुख &c. = मुख की कांति बढ़ी । कत &c. = कितना रङ्ग परिवर्तन हुआ । हरल = हटाया । समरु = समर । रसभरे &c. = रति जड़ की सह नहीं सकी और झानझौन हो गयी ।

दुहु रसमय, तनु गुन नहिं ओर । लागल दुहुक न
 टूटय जोर ॥ के नहि कयल कतहु परकार । दुहु जन भेद
 करइ नहिं पार ॥ जे खल सकल महीतल गेह । छीर नीर
 सम नहिं कहूँ नेह ॥ जब कबहुँ आनल मुख आनी । छीर
 दंड दइ निसरित पानी ॥ तब ही छीर उमड़ि पड़ि तापे ।
 विरह बियोग आग देइ भाँपे ॥ जब कोई पानि आनि ता
 देला । विरह बियोग तबहि दुर गेला ॥ भन विद्यापति
 अतहि सु रेह । राधा साधव ऐसन नेह ॥७॥

गुन &c. = गुण की सोमा नहीं है । जोर = जोड़ी, प्रीति । के नहिं &c. = किस ने
 कितनी चेष्टा नहीं की । दुहु जन &c. = दोनों के प्रणय की भेद अर्थात् भग्न वा
 विच्छेद कोई नहीं कर सका । जे खल...नेह = पृथिवी के सकल गृह वा सकल
 गृह के लोग जैसे खल हैं चौर और नीर के समान प्रणय अब कहीं देखने में नहीं
 आता । आनल = अनल, अग्नि । निसरित = निकालते हैं । उमड़ि पड़ि तापे =
 दुःख से उच्छलित हो जाता है, खलबलाने लगता है । देइ भाँपे = क्रोध पड़ता है ।
 सुरेह = सुरेखा, मुचिन्ह, उत्तम निदर्शन अथवा स्त्री इ ।

बड़हि चतुर मोर कान । साधन बिनहि टुटल मोर
 मान ॥ योगि भेष धरि आयल आज । को यह समभव
 अपरुप काज ॥ सास बचन हम भिख लेइ गेला । मोर
 मुख हेरइत गदगद भेला ॥ कह तब मानरतन देह मोह ।
 समुझलि तब हम सुकपट सोह ॥ जे कछु कहल सो
 कहइत लाज । कोई न जानल नागरराज ॥ विद्यापति
 कह सुन्दरि राइ । किय तुहु समुभव तसु चतुराइ ॥८॥

साधन बिनही = बिना परिश्रम वा कष्ट के । कह तब &c. = भिखाने ले कर
 साधन ने कहा मैं इस का भूखा नहीं हूँ यदि तुम को कुछ देना है तो मुझे मान
 रूपी रख दो । सोइ = उस का ।

जठिल सास फूकरि तहि बोलत बहुरि बेरि कह ठाढ़ी ।
 ललिता कहत अमङ्गल सुगलूं सतिपति भय अवगाढ़ी ॥
 सुनि कहे जठिल घटिल की अकुसल घर सों बाहिर होय
 बहुरिक पानी धरि कर हेरह किय अकुसल कह मोय ॥
 योगेसर फिरि बहुरिक कर धरि कुसल करव बनदेव ।
 यह एक अंक बंक विसंकहु बनहू पसुपति सेव ॥
 पुजनक मंत्र तंत्र बहु आछय सो यह कछु नहि जान ।
 जठिल कहे अस गुरु कहँ पायब तुहु बिज यही करु दान ॥
 यह कहि दुहु जन मँदिर समायल दुहु जन भेल एक ठाम ।
 मनमथ मंत्र पढ़ावल दुहु जन पूरल दुहु मनकाम ॥
 पुन दुहु जन मँदिर सों निकसल जठिल सने कह भाखि ।
 जब यह गौरि अराधन याउब विधवा जन धर राखि ।
 यह कहि सबहु चलल निज मन्दिर योगि चरन परनाम ।
 विद्यापति कह नट वर सेखर साधि चलल मनकाम ॥६॥

जठिल = जठर, वृद्धा । फूकरि = चिन्ता कर । बहुरि = बह । बेरि = बाहर ।
 अवगाढ़ी = अवगाढ़, अभिभूत । पानी = हाथ । योगेसर = योगी भेष धारी श्री
 कृष्ण । कर धरि &c. = हाथ धर कर कहा कि &c. । अंक = रेखा । बंक = बन्क;
 अशुभ सूचक । विसंकहु = आशंका करता हूँ । बिज = बीजमंत्र । भाखि = विचार
 कर । नटवर सेखर = श्री कृष्ण ।

सखि हे ! कि कहव नाहिक उर ।

सपन कि परतख कहइ न पारय कि अति निकट कि दूर ॥
 तड़ित लतातर तिमिर सँमायल आंतर सुरधुनि धारा ।
 तरल तिमिर ससी सूर गरासल चौदिक खसि पडु तारा ॥
 अम्बर खसल धराधर उलटल धरनी डगमग डोले ।

खरतर वेग समीरन संचरु चंचरिगन करु रोले ॥
 प्रलय पयोधी जल जनुं छापल यह नह जुग अवसान ।
 के विपरीत कथा पतिआयव कवि विद्यापति भान ॥१०॥

ऊर=ओर; सीमा। कि कहव&c.=मैं कह नहीं सकती कि कितना मैंने
 दुःखकार की। परतख=प्रत्यक्ष। तड़ित्ततंत=श्री मती। तिमिर=श्रीकृष्ण।
 संमायल=प्रवेश किया, विरोजमान हुआ। आंतर=अन्तर, बीच। सुरधुनि-
 धारा=सुक्ताधार। समीरन=कपोलद्वय। तारा=कवरी का पुष्प तथा सुक्ता।
 धराधर=स्नान। धरनीं=नितम्ब। समीरन=निःश्वासे वायु। चंचरिगन=नूपुर
 कंकणादि। रोले=रोर वा कोलाहल करते हैं। प्रलय पयोधि-जल=पसीना। यह
 नह=यह युगावसान काल नहीं है। यहां पर कवि ने भयानक में शृंगार वर्णन
 किया है अर्थात् प्रलयकाल का चित्र खींचकर विपरीत रति दर्साया है।

राधा माधव रतनहि मन्दिर निवसइ सयनक सूख ।

रस रस दारुन द्वंद उपजायल कन्त चलल तहि रोख ॥

नागर अंचल कर धरि नागरि हंसि मिनती करु आध ।

नागर हृदय पाँचसर हानल उरज दरसि मन बाध ॥

देख सखि भूठक मान ।

कारन कहुय बुझय न पारिय तब कह रोखल कान ॥

रोख समापि पुन रहसि पसारल ताही मध पँचवान ।

अवसर जानि मानवति राधा विद्यापति यह भान ॥११॥

निवसइ=निवास करते हैं। निवसइ&c.=सुखपूर्वक शय्या पर बैठे हुए हैं।
 रसरस&c.=रसालाप करते करते विकट भगड़ा आरम्भ हो गया और नायक कुछ
 भी वहाँ से चलेने लगा। अंचल=पटुका का अंचल। आध=ईषत्; किञ्चित्।
 भूठ=मिथ्या, अकारण वा विफल। कह=कहा, क्यों? समापि=समाप्त कर।
 रहसि &c.=रहस्य। अवसर &c.=प्रौढ के मन ने काम उद्दीप्त जान सुषुप्ति
 समझ कर प्रिया जी बदला चुकाने के लिये स्वयम् मानवतो हो गई।

कि कहव रे सखि आजुक रङ्ग । सपनाहि सुतलुं कुपुरुख

सज्ज ॥ बड़ सुपुरुष देखि अइलीं धाड़ । सूति रहलिं मुख
आँचर भँपाइ ॥ काँचलि खोलि अलिंगन देला । मोहि
जगायल तँहि निदगेला ॥ हे विहि, हे विहि, बड़ दुख देला ।
से दुख रे सखि अबहु न गेला ॥ भन विद्यापति यह
रसधन्ध । भेक कि जाने कुसुम सुगन्ध ॥१२॥

भँपाई = ठाक कर । मोहि जगायल &c. = मुझे जगा कर वह आप सो रहा
इस से, अथवा जगाने से जो मेरी नींद टुट गयी और मैं स्वप्नस्थितन सुख से
वञ्चित हो गयी इस से, हृदय को बड़ा लेश हुआ ।

कि कहव रे सखि आजुक बात । मानिक पड़ल
कुबानिक हात ॥ काँच कनक नहिं जानय मूल । गुंजा
रतन करइ समतूल ॥ जे कभु नहिं कलारस जान । नीर
खीर दुहु करइ समान ॥ ताह संग का प्रिति रसाल । वानर
कंठ कि मोतिम माल ॥ कवि विद्यापति इ रस जान ।
वानर मुख का सोभय पान ॥१३॥

कुबानिक = खराब (मूर्ख) वणिक । समतूल = बराबर । कलारस = रसकला ।
ताह संग = उस के साथ । का = क्या ।

ये सखि रँगिनी कि कहव तोय । आजुक कयतुक कहन
न होय ॥ येकलि घर छिनु हिनपरिधान । अलखित
आयल कमलनयान ॥ इदिस भँपलि तनु उदिस उदास ।
धरनि पसिय यवि पाउ परकास ॥ कर कुच भांपत भांपि
न जाय । मलय-सिखर जनु हिम न लुकाय ॥ धिक धिक
जीवन यौवन लाज, । आजु मोर अङ्ग देखल ब्रजराज ॥
भन विद्यापति रसवति राइ । चतुरक आगे किय चतुराइ ॥१४॥

कहव न होय = कहा नहीं जाता । अलखित = छिप कर । कमल नयान =

श्री कृष्ण । इदिसँ = इधर जो बदन टाँकती हूँ तो उधर उधर जाता है ।
पसिय = पैसेतौ, प्रवेश करती । पाउ परकास = विदीर्ण हो । लज्जा से यही मन
करता था कि यदि धरती फट जाती तो मैं उसी में समा जाती । मलय = मलयाचल
पर्वत ।

ये धनि रंगिनि कि कहव तोय । आजुक कयतुक कहन
न होय ॥ थकलि सुतलछिनु कुसुमसयान । दोसर मन-
मथ कर फुलवान ॥ नूपुर झुनु झुनु आयल कान । कयतुक
हम मुदि रहलि नयान ॥ आयल कान बैठल मोहि पास ।
पास मोड़ि हम लुकायनु हांस ॥ कुन्तल कुसुमदाम हरि
लेल । बरिहा माल पुनहि मोहि देल ॥ नासा मोतिम गीमक
हार । यतन उतारल कत परकार ॥ कंचुकि फुजइत पहु
भेला भोर । जागल मनमथ बान्धलु चोर ॥ भन विद्यापति
रसिकसुजान । तहु रसवति पहु सब रस जान ॥१५॥

पास मोड़ि = करवट फेर कर । हरि लेल = निकाल लिया । बरिहा माल = बह,
मयूरपुच्छ युक्त शिरोमाल ॥ फुजइत = उतारते हुए । बान्धलु चोर = चोर अर्थात्
श्री कृष्ण को आलिंगन किया ।

से सब कहत लाज । जे कर रसिक राज ॥
आंगन आयल सेह । हम तव चललि मेह ॥
अधर आंचर ओर । फुजल कवरी मोर ॥
ढीठ नागर चोर । पावल हेमकटोर ॥
धरिते धायल ताय । तोड़ल नखक घाय ॥
चकोर चपल चाँद । पड़ल प्रेमक फाँद ॥
कवि विद्यापति भान । पुरल दूहुक काम ॥१६॥

हेम कटोर = स्तन । नखकघाय = नख के आघात से । चकोर = श्रीमति राधिका
का नयन । चपल चाँद = श्री कृष्ण का मुख ।

अछिनु हम अति मानिनि होइ । भांगल नागर
नागरि होइ ॥ कि कहव रे सखि आजुक रंग । कान आयल
ताहि दूतिक संग ॥ बेनि बनायल चाँचर केस । नागर-
सेखर नागरि बेस ॥ पहिरल हार उरज करि उर । चरनहि
लेयल रतन नूपुर ॥ पहिलहि चलत बामपद घात । नाचत
रतिपति फुलधनु हात ॥ हेरि हम सचकित आदर
केलीं । अवनत हेरि कोर पर लेलीं ॥ सो तनु सरस परस
जब भेला । मानक गरब रसातल गेला ॥ नासा परसि
रहलि हम धन्द । विद्यापति कह टूटल दन्द ॥१७॥

भांगल = भङ्ग किया ; तोड़ा । नागरि होइ = रमणी का भेष धारण कर ।
नागर सेखर = नायक चूड़ामणि । उर = वक्षःस्थल पर । लेयल = लगाया । नूपुर =
नूपुर । पहिलहि &c. = चलते समय रमणी हूब पड़ले बाम पद विक्षेप करते थे ।
अवनत &c. = प्रणाम करते हुए देख कर गोद में उठा लिया । नासा परसि &c. =
विस्मय के समय नाक पर हाथ देना स्त्रियों का स्वभाविक चाल है ।

यकलि अछिनु हम गँथइत हार । घँगरि खसल कुच-
चीर हमार ॥ तखन हँसत चलि आयल कन्त । कुच किय
आपव किय निबिबन्ध ॥ हँसि बल्लभ आलिंगन देला ।
धैरज लाज रसातल गेला ॥ कइसे बुझायब दूरहि दीप ।
लाज गयल ना इ कठिन जीव ॥ विद्यापति कह भरम कि
काज । जब सौँपल जिव तब किय लाज ॥१८॥

गँथइत = गूँथती हुई । घँगरि = घाँघरा । कुच-चीर = अक्षल । बुझायब =
बुझाऊँगी । लाज &c. = लज्जा के मारे यह प्राण निकल भी नहीं गया ।

आजुक लाज तोहि कि कहव माई । जल देइ धोइ
तबहु नहि जाई ॥ न्हाइ उठलि हम जमुनक तीर । अंगहि

लागल पातर चीर ॥ ताहि वेकत भेल सकल सरीर । तँहि
उपनीत समुख जदुवीर ॥ विपुल नितँव अति वेकत भेला ।
पलटिय ता पर कुंतल देला ॥ उरज उपर जब देअल दीठ ।
उर मोरि बैठनु हरि करि पीठ ॥ हँसि मुख निरखय ढीठ
मधाइ । तनु तनु भांपत भांपि न जाइ ॥ विद्यापति कह
तुहु अज्ञानि । पुन किन पलटि न पैठलु पानि ॥ १६ ॥

नहाइ = नेहा कर, स्नान कर । उपनीत = उपस्थित हुए । विपुल = भारी, स्थूल ।
मधाइ = श्री कृष्ण । पैठलु = समा गयी ।

मन्दिर अछिनु सहचरि मेलि । परसँग रजनि अधिक
चलिं गेलि ॥ जब सखि चललहुँ आपन गेह । तब मोर नाँद
भरल सब देह ॥ सूति रहलु हम करि यक चीत । दैव
विपाक भेल विपरीत ॥ सुनु सुनु सजनी सपन सँवाद ।
हँसइत केहू जनि कर परवाद ॥ पड़ल विषाद मो हृदयक
मांझ । तुरत घुचायनु नीविक कांच ॥ एक पुरुख पुन
आयल आग । कोप अरुन आँखि अधरक राग ॥ डर सँ
चिकुर चिर आनहिं गेला । सीस कजर मुख सेंदुर भेला ॥
अतय करब केहू अपयस गाथ । विद्यापति कह के पतिआव ॥ २० ॥

मेलि = साथ । परसंग = बातचीत करते । चललहुँ = चली गयी । कांच = बन्धन ।
आनहिं गेला = दूर गया, खुल गया । आग = आगे । कोप &c. = रोष से प्रांख और
मुख लाल । कजर = काजर । अतय &c. = अतएव कौन मन में क्या समझेगा ।

आजु मोर सरम भरम रहु दूर । आपन मनोरथ सो
परिपूर ॥ कि कहब रे सखि कहइत हांस । सब विपरित
भेल आजुक विलास ॥ जलधर उलटि पड़ल माहि मांझ ।

ऊगल चारु धराधर राज ॥ मरकत हेरइत हेरइत हाम ।
 उच निच ना बुझि पड़लु से ठाम ॥ वास निवास पुन
 देयल सोइ । लाज रहनु हिय आनल गोइ ॥ सोइ रस
 करब कोर अगोर । आँचल समजल मोछल मोर ॥ मृदु
 बीजइत घूमनु हम । भन विद्यापति रस अनुपम ॥ २१ ॥

सो = श्री कृष्ण । हांस = हंसी जाती है । जलधर = श्री कृष्ण । ऊगल = ऊगा,
 ऊपर हुआ । चारु = सुन्दर । धराधर राज = गिरिराज, श्री मती का नितम्ब वा
 पयोधर । मरकत & c. = श्री कृष्ण का मरकत दर्पण द्वाब मुख देख २ सुझि उस
 स्थान में ऊँच नीच का विचार नहीं रहा कि क्या कर रही हूँ । निवास ... सोइ =
 रत्यांतर खुले हुए अङ्ग को उन्हीं ने ढाँक लिया । आनल = अनल । लाज & c. =
 लाजजनित रोषानल को हृदय में गोय रही । बीजइत = व्यजन वा वतास
 करते हुए ।

सास सुतसि मोर कोर अगोर । तहिं रतिठीठ पीठ
 रहु चोर ॥ कत हम आखर कहलु बुझाइ । आजुक चातुरि
 रहब कि जाइ ॥ ना करु आरत ए अबुध नाह । अब नहिं
 होत बचन निरवाह ॥ पीठ अलिंगन कत सुख पाव । पानिक
 पियास दूध किय जाव ॥ कत मुख मोरि अधर रस लेला ।
 कत निसवद करि कुच कर देला ॥ समुख न जाय सधन
 निसवास । हांस किरन भेला दसन विकास ॥ जागल सास
 चलल तब कान । ना पुरल आस विद्यापति भान ॥ २२ ॥

कोर = गोद में । अगोर = संरक्षा कर । रति-ठीठ = रति रङ्ग में चतुर । पीठ =
 पीठ की घोर । चोर = गुप्त भाव से । आखर = संकेत से ; इङ्कित वा इशारे से । ना
 करु आरत = आग्रह प्रकाश न करो । अर्थात् रति चेष्टा न करो । अबुध = अबोध,
 अज्ञान । अब नहिं & c. = इस समय तो बातचीत होना कठिन है दूसरा कोई काम
 तो दूर की बात है । निसवद करि = निःशब्द होकर अर्थात् चुपचाप ; आखे

वांसी । हांस &c. = दस्त का विकार हांसकिरण हुआ अर्थात् जोर से किसी ने न हंसा बरन मुसका कर रह गए ।

कूच युग चारु धराधर जानि । हृदि बैठे जनि पहु
दिलुँ पानि ॥ घाम विन्दु मुख हेरय नाह । चुम्बय हरख
सरस अवगाह ॥ बुझइ न पारिय पिय मुख भाख वदन
निहारत उपजल हांस ॥ आपन भाव मोहि अनुभाव । ना
बुझिय ऐसन किय सुख पाव ॥ ता कर बचन कयलु सब काज ।
कि कहव सो अब कहइत लाज ॥ इ विपरीत विद्यापति
भान । नागरि रमइत भय नहिं मान ॥ २३ ॥

हृदि &c. = नाह के हृदय पर बोझा न हो जाय इसी विचार से हाथ में दिया ।
सरस = सरोवर में । हरख &c. = आनन्द सरोवर में निमग्न हो कर । आपन भाव
&c. = अपने भाव प्रभु ने मेरे हृदय में सञ्चारित किया ।

विगलित चिकुर मिलित मुखमंडल चांद बेदल घनमाला ।
मनिमयकुंडल खवन दुलित भेल घाम तिलक बहि गेला ॥

सुंदरि तुअ मुख मंगल दाता ।

रति विपरीत समर यदि राखवि कि करव हरि हर धाता ॥
किंकनि किनि किनि कंकन कन कन घन घन नूपुर बाजे ।
निज मद मदन पराभव मानल जय जय डिम डिम बाजे ॥
तल यक जघन सघन रव करइत होयल सैनक भंग ।
विद्यापतिपति ऊ रस गाहक यमुना गंग तरंग ॥ २४ ॥

विगलित ... मंडल = बिखरे हुए केश मुखमंडल पर आ पड़े हैं । बेदल = घरे
हुए हैं । दुलित भेल = डोलने लगा । घाम = पसीना । राखवि = रक्षा वा पालन
करूँगी । धाता = विधाता । विद्यापतिपति = श्रीकृष्ण । गाहक = ग्राहक । यमुना
&c. = यमुना गङ्गा का मिलन अर्थात् नायक नायिका का संयोग ।

तुहु यदि माधव चाहसि नेह । मदन साखि करि खत
लिखि देह ॥ छोड़वि केली कदम बिलास । दूर करवि निज
गुरु जन आस ॥ सो तजि सपन न हेरवि आन । हमरे
बचन करवि जल पान ॥ रजनि दिवस गुन गायवि मोर ।
आन युवति कहँ न करवि कोर ॥ अइसन कवच धरव जब
हात । तब ही तुअ सन मरमक बात ॥ मन विद्यापति सुन
वर कान । मान रहुक बलु जाउक ग्रान ॥ २५ ॥

खत = तमसुक, काकज । साखि = साखी । हमरे &c. = मेरी आँखाँ बिना जल
ग्रहण नहीं करोगे । कवच = पत्र, खत । मरमक = प्रेम की । मान = मर्यादा ।

मदनमदालस स्थाम बिमोर । ससिमुखि हांसि
हांसि कर कोर ॥ नयन दुलादुलि लहु लहु हांस । अंग
हेलाहेलि गदगद भास ॥ रसवति नारि रसिकवर कान ।
हिय हिय दोहर बयन बयान ॥ पहु पुनि मातल दुहु सर
हान । विद्यापति करु सो रसगान ॥ २६ ॥

कर कोर = गोद में ले रही है । दुलादुलि = नाच रहा है । हेलाहेलि = हिल
रहा है । हिय &c. = हृदय पर हृदय और मुख पर मुख पड़ रहा है ।

हे सखि, हे सखि ! कि कहब हाम । पिया मोर विदगध
बिहि मोर वाम ॥ कत दुख पावल पिय मोर लागि । दारुन
सास रहल तहिं जागि ॥ घर आँधियार कहब किय हाय ।
पास लगल पिय कलु न दिखाय ॥ चित मोर व्याकुल
कहल न जाय । मन सन यह दुख दुर नहिं जाय ॥ विद्या-
पति कह तुहु अगेयानि । पिय हिय कर कस फेरु न बयानि ॥ २७ ॥

हाम = हम । विदगध = विदग्ध, सुरसिक । बयानि = बयन, मुख ।

वेजन हेतु जब वसन उतारलु लाज लजायलि गोरी ।

कर कुच भांपति। विहंसि वदन धनि अंग कयलि कत मोरी ॥
 निविबंध खसइत करे कर धरु धनि तब बेकत कुच जोरी ।
 दुहु समधान विफल भेला ससिमुखि तब हरिकोर अगोरी ॥
 इतना करव साध, भावि रहु माधव राइ प्रेम भेला भोर ।
 भन विद्यापति लखिमादेइपति, पूरल यह रस ओर ॥२८॥

वेजन हेतु = समीर सेवन के लिये । लाज &c. = सुन्दरि अतिग्रय लज्जिता इति ।
 दुहु...अगोरी = जब निविबन्ध और स्नान दोनों का आचरण विफल अर्थात् अकृत-
 कार्य हुआ तब ससिमुखि की शीक्षण ने अङ्ग में लगा दिया । इतना.....भोर =
 माधव यह करेगे वइ करेगे इस प्रकार की कितनी साध मन में थी किन्तु रमणी प्रेम
 में शीक्षण भी विफल हो गये और यह रम समाप्त हुआ ।

उदसल कुंतल भार । युगती सकल सिंगार उतार ॥
 अतिसय प्रेम विकार । कामिनि करत सुपुरुख विहार ॥
 डोलत मोतिम हार । यमुना जल जस दूधक धार ॥
 कुच कुँभ पलट वयन । अमिय सुरस जनु ढारत नयन ॥
 प्रियतम करतल देव । सरसिज भँह जनु रहल चकेव ॥
 कंकन किंकिनि वाज । जय जय डिमडिम मदन समाज ॥
 रसिकसिरोमनि कान । कवि विद्यापति यह रस भान ॥२९॥

उदसल = उगसल, खुल गया । देव = स्नान दिया । चकेव = चकवा ।

कि कहव हे सखि आजुक विचार । सोइ पुरुख मोहि
 कयल विहार ॥ धरि पहु हांसि अलिंमन देला । मनसथ
 अंकुर कुसमित भेला ॥ आंचर परसि पयोधर हेरु । जनम
 पंगु जनु उठल सुमेरु ॥ जब निविबन्ध खसावल कान ।
 आपन दिव तब यदुकुल जान ॥ रति चिन्ह जानल कंठिन
 सुरारि । तोहर पुन आयलु हम नारि ॥ कह विद्यापति तहु
 मधुराइ । ना कह सुधामुखि गेउ चतुराइ ॥३०॥

मोहि=मेरे साथ । खसावख=खोला । आपन दिव=अपनी कसम । यदु-
कुल=श्रीकृष्ण । तोहर पुन=तुम्हारे पुन्य के प्रभाव से । मधुराह=माधुर्य युक्त ।
सबही आपन भवन गेला । चित्त सुबदनी चमकित भेला ॥
नासा परसि रहल जव धन्द । ईषत हासय बयनकचन्द ॥
सखि हे अपरुव इ रसिक कान । कह गेला मोरा सेहन मान ॥
जो कलु कहल रसिक वर राज । कहत अजहु मोहि आवत लाज ॥
विद्यापाति कह अइसन कान । राजा सिव सिंह इ रस जान ॥२१॥

चमकित=चञ्चल । बयनकचन्द=मुखचन्द्र । सेहन=वेसा ।

सजनि कह नीकुंजमन्दिर, आजु कि भेल धन्द ।
चपल भांपल जनू जलधर, नीलउतपल चन्द ॥
फनीमनिवर उगर नीरखि, सिखिनि आनत गेल ।
मेरु ऊपर सुरतरंगिनि, केवल तरल भेल ॥
किंकिनी कंकन सुकलरव, अधिक नूपुर तोह ।
मदन नटन तुरियतिक हो, एहन सकल सोह ॥
करु ना गोपन नीज परिजन, यह बुझिलु अनुमान ।
विद्यापातिकृत हरिकृपा यह को न जाने गान ॥ ३२ ॥

चपल=चपला । नीलउतपल=नीलोत्पल ; नीला कमल । उगर=उग्र । फनी
मनिवर=मणियुत वेणी । सिखिनि=मयूरी अर्थात् श्री कृष्ण के सिर का मोरपक्ष ।
आनत=अन्यत्र । फनि &c.=मणियुत वेणी व्यालिनि को देख स्वयम् मयूर ही कहीं
बिसक गया था अर्थात् श्रीकृष्ण के फेँट से मयूरपक्ष गिर गया था । सुर तरंगिनि=
मंगा ; डार । तरल=चञ्चल । तुरियतिक=तैर्यत्रिक नाच, गान और वाद्य । मदन
&c.=सब सामान ऐसा सोहता था मानो मदन गान वाद्य के साथ नृत्य करता हो ।

मासे पख उगये सखी, लेइ सकल निज साज ।
तसु मुख सम नहि देखियत, तें खिन मन गुन लाज ॥
कउन पुरुख एहन सुधन, जाहि करह अनुराग ।
के अछ यही महीतले, जे अरजल हेन भाग ॥

सामर चामर निन्दया, कोमल केश कलाप ।

भोंह मनोहर किय कहव, काम तजल सर चाँप ॥

धक धावल पावल नहीं, आसा लुवधल जोभ ।

एहन नरमि नृप सिंह कह, हरिह निकट पै सोभ ॥३३॥

ते = इसी से । अरजस = अर्जन किया । हेन = ऐसा । धक धावल = तेज दोड़ा ।

नृप सिंह = सिंह भूपति, शिवसिंह ।

आकुल अलक बढ़ल मुख सोभा । राहु कयल ससि-
मंडल लोभा ॥ कुंतल कुसुममाल करु सङ्ग । जनु जमुना
मिलु गंग तरङ्ग ॥ बड़ अपरुप दोउ अचेतन भेलि । विपि-
रित रति कामिनि करु केलि ॥ प्रियतम मुख तिय चुम्बय
ओज । चाँद अधोमुख पिय सरोज ॥ बदन सोहायल
स्वमजल बुन्दु । मदन मोति लेइ पूजल इन्दु ॥ कुच युग
उपर विलम्बित हार । कनक कलस पर दूधक धार ॥ किंकिनि
रवय नितम्बहि साज । मदन विजय रन वाजन बाज ॥
भन विद्यापति रसवति नारि । काम कला जिनि बचन
हमारि ॥ ३४ ॥

आकुल अलक = व्यस्त (विषड़ा हुआ) कुंचित केश । कुंतल & c. = केश तथा पुष्प
की माला आपस में मिल कर । अचेतन भेलि = आनन्द में चेतनारहित हुए ।
ओज = मौज वा मजे से । रवय = बजती है ।

आजु पेखलि हम नन्दकिसोर । केलि विलास सबहु
अव तेजल अहनिस्ति रहत विभोर ॥ जब धरि चकित
विलोक विपिनतट पलाटि आयलि मुख मोरि । तबधरि
मदनमोहन तरु कानन लोटइ धिरज पुन छोड़ि ॥ पुन
फिरि सोई नयन यदि हेरवि पाववि चेतन नाह । नागिनि

दंसि पुनहि यदि दंसय तबहि सभय विख जाह ॥ अब
सुभ छन धनि मनिमय भूखन भूखित तनु अनुपाम ।
सादर वल्लभ हृदय विराजय जनि मनि कांचन दाम ॥३५॥

जब धरि = जब से । मोरि = फेर कर । चेतन = सचेत होंगे । सभय = सब ।

पुनर्मिलन तथा रसोद्धार ।

आजु रजनि हम भागे पोहायनु पेखनु पिय मुखचन्दा ।
जीवन योवन सफल क माननु दसदिस भो निरद्वन्दा ॥
आजु हम गेह गेह करि माननु आजु मोर देह भेला देहा ।
आजु विही मोर अनुकुल होयल टूटल सबहु सँदेहा ॥
सोइ कोकिल अब लाखहि डाकउ लाख उदय करु चन्दा ।
पांचवान अब लाख वान हनु मलयपवन बहु मन्दा ॥
अब सो न जबहु मोह परिहोयत तबहु मानव निज देहा ।
वियापति कह अलप भागि नह धनि धनि तुअ नवनेहा ॥१॥

क = कर, करि । निरद्वन्दा = इन्द्रद्वित, सुप्रसन्न । सोइ = वही कोकिल जिस का
शब्द पहले दुःख देता था । डाकउ = बोले । उदय = प्रकाश । हनु = मारे । सो न =
वह नहीं । जबहु = जब तक । परिहोयत = परिहार करे, परित्याग करे । धनि २
= धन्य २ । अब... देहा = अब जब तक वह (मेरे स्वामी) मुझे परित्याग नहीं
करेंगे तब तक मैं अपनी देह को अपनी देह मानूँगी ।

जब हरि आयब गोकुलपूर । घर घर नगर बजय जयतूर ॥
औपन देयव मोतिमहार । मंगलकलस करब कुचभार ॥
सहकर पल्लव चूचुक देव । माधव सेवि मनोरथ लेव ॥
धूप दीप नैवेद अनेक । लोचन नीर करब अभिसेक ॥
देव अलिंगन पिय कर आगे । मन वियापति यह रस भागे ॥२॥

जयतूर = विजय तुरही । सहकर = सहकार, आस । चूचुक = कुचका अग्रभाग,

क्योंकि जैसे कलश में पल्लव लगाया हुआ और कुछ उपर की निकला हुआ रहता है वैसेही कुचकलश में कुचाग्र भाग है। भागे = भाग्य से।

मोर मंदिल जब आयव कान । दिठि भरी हेरवि चांद
बयान ॥ नहिं नहिं बोलव जब हम नारि । अधिक पिरिति
तव करव मुरारि ॥ करधरि मोहि बैठाइव कोर । चिर दिन
हृदय जुड़ाव मोर ॥ करव अलिंगन दुरकरि मान । ऊ रस
पुरव सुंदव हम नयान ॥ भन विद्यापति सुन बरनारि ।
तोहर प्रीति क जाउं बलिहार ॥ ३ ॥

आगन आयव जब रसिया । पल्लटि चलव हम ईपित
हंसिया ॥ जब आँचर पिय धरवे । हम जायव पिय आदर
करवे ॥ रभस माँगव पिय जब हीं । मुख हंसि नहिं २ बोलव
तवहीं ॥ काँचुय धरव जब हठिया । कर वारव कूटिल अब
दिठिया ॥ सो पहु सुपुरुष भमरा । अधर कपोल मधु पाअव
हमरा ॥ तखन हरव मोर चेतन । विद्यापति कह धनि तुअ
जीवन ॥ ४ ॥

हठिया = बल पूर्वक । कर & c = कूटिल कनखियों से आघात कर साथ हटाऊँ
गो । हमारा = हमारा ।

पिय जब आयव मोरा गेह । मंगल जतहुँ करव निज
देह ॥ कनयकुम्भ भरि कुच युग राखि । दरपन धरव कजर
देइ आँखि ॥ बेदि बनायव आपन अंगम । चमर करव निज
चिकुर भुजंगम ॥ कदलि रोपव हम गुरुअ नितम्ब । आम
पल्लव सन किंकिनि झम्प ॥ निसि दिसि आयव कामिनि
ठाट । चौदिक पसारव चाँदक हाट ॥ विद्यापति कह पूरव
आस । द्वै एक पलक मिलव तुअ पास ॥ ५ ॥

संगल & c. = अपने देह में सब प्रकार का मङ्गलाचार करूँगी। संगम = संग में।
भक्ष्य = भज्वा पत्तव।

आयल गोकुल नन्दकुमार। आनँद कोई कहइ नहि
पार ॥ कि कहव रे सखि रजनिक आज। सपनहि हेरलि
नागरराज। आजु सुभनिसि कस पोहयानु हाम। प्रानप्रिया
मोहि करनु प्रनाम ॥ विद्यापति कह सुन बरनारि। धैरज
धर तोहि मिलव मुरारि ॥६॥

पोहयानु हम = मैं ने बिताई।

माधव जाय केवाड़ छोड़ावल जाहि मन्दिर बसु राधा।
चीर उघारि अधर मुख हेरल चान उगल छथि आधा ॥
चिर करपूर पान हम बासलि अरु साँठलि पकमान।
सगर रहनि हम बैठि गमाओलि खंडित भेला मोर मान ॥
मथुरानगर अटनि हम रहलहुँ किअ न पठाओल दूती।
मानिक एक मानिक दस पथरल ओतहि रहल पहु सूती ॥
कमलनयन कमलापति चुंबित कुंभकरन सम दाप।
हरिक चरन धै गावथि विदापति राधाकृष्ण मिलाप ॥७॥

छोड़ावल = खालाया। छथि = है। चिर करपूर = कपूर तोड़ कर। साँठल =
साजा। पथरल = फैला हुआ है। दाप = दर्प।

पिय मोरें बालक हम तरुनी। कोन तप चुकलिह भेलि
जननी ॥ पहिर लेलि सखि दछिनक चीर। पिय के देखइत
दगध सरीर ॥ पिअ लेलि गोद कँ चललि बजार। हटिअक
लोग पुछे के लागे तोहार ॥ नहिं मोर देवर नहिं छोट
भाइ। पुरष लिखज छिला सामी हमार ॥ बाट बटोहिआ
तोहिं मोर भाइ। हमरो समाद नइहर ले न जाह ॥ कहि-

हुन बाप किनय धेनु गाइ । दूधव पिलाय क पोसत जमाइ ॥
 नहिं मोर टका अछि नहिं धेनु गाइ । कोन विधि पोसब
 बालक जमाइ ॥ भन विद्यापति सुन बृजनारि । धैरज धर
 तोहि मिलब मुरारि ॥ ८ ॥

जननी = बयस में जननीवत । देखइति = देखते हैं । जमाइ = जमाता, दामाद ।
 टका = रुपया । यद्वा हांसरस कौ कविता है ।

माधव ! देखलहुं तुअ धनि आज ।

भुतलनृपति सुत तसु तनयापति तातक तातक बाम ॥
 तसु तातक सुत तनि कर उपमेय सेहो ठिक ओहि ठाम ।
 दीस निगम दुइ आनि मिलाविय ताहि दिय विधि मुख आधो ॥
 से लै आदि आधि रस मँगअछि एहन रमनि तुअ माधो ।
 पंडित काँ पठ जढ़ काँ पाहन ई गति गोरख धंधारी ।
 भन विद्यापति सेह चतुर जन जेह बुझत अवधारी ॥ १० ॥

भुतलनृपति = बालि । सुत = वाणासुर । तसु तनया = ऊषा । पति = अनिरुद्ध ।
 तात = प्रद्युम्न । तात = श्रीकृष्ण । बाम = स्त्री, लक्ष्मी । तसु तात = समुद्र । सुत =
 चन्द्र । उपमेय = नायिका, जिस का चन्द्रमा से उपमा है । दीस = दिशा अर्थात् दस ।
 निगम = वेद अर्थात् चार । दुइ &c. = दोनों को जोड़ दिया अर्थात् १४ हुआ ।
 ताहि दिअ = उस में जोड़ा । विधि &c. = ब्रह्मा के मुख का आधा अर्थात् दो । से लै
 = उसे लेकर अर्थात् सोलह शृङ्गार कर । आदि रस = प्रेम । आधि = किञ्चिन् मात्र ।
 मँगअछि = मांगती है । पठ = पठयोग । पाहन = कठिन ॥ गोरखधंधारी = पेंचोला ।
 सेह = वही है । अवधारी = ठीक तरह से ।

सुंदरि हे तौ सुबुधि सेआनी । मरिण पिआस पिआवहु
 पानी ॥ के तौ थिकह ककर कुलजानि । बिनु परिचय नहिं
 देब पिढ़ि पानि ॥ थिकहुं पथुक जन राजकुमार । धनिक
 वियोग भरमि संसार ॥ आवह बैसह पिवलह पानी । जे

तौ खोजबह से देव आनी ॥ ससुर भसुर मारे होलह विदेस ।
स्वामि मोर गेलाछथि तनिक उदेस ॥ सासु घर आंधरि
नयन नहिं सूझ । ननदी मोर बचन नहिं बूझ ॥ भन
विद्यापति अपरुव नेह । जेहन विरह हो तेहन सिनेह ॥११॥

सरिए=सर रहा हूँ । थिकह=हो । पिढि=पीढ़ा, आसन । पयुक्तजन=
पथिक । गेलाछथि=गये हैं । ननदी &c.=ननद अगारी अन्नान है ।

बड़ी जुड़ि यहु तरुह छांहरि ठाम ठाम बस गाम ।
हम एकसरी पिया देसांतर नाहीं दुरजन नाम ॥

पथिक ये छन एक लेहु बिसराम ।

जत बेसाहब किछु न सहँग सब मिले यहि ठाम ॥

सासु नहीं घर अपर परिजन ननद सहजे भोरी ।

यतहु अधिक जे विमुख जायव अब अनाइत मोरी ॥

भन विद्यापति सुन तँ जुवती जे पुर परक आस ।

से पुर छाड़हु वेग चलहु अब आनंद लहु मोहि पास ॥ ११ ॥

जुड़ि=ठठत । नहीं &c.=यहां दुर्गजन का नाम तक नहीं है । अपर परिजन=
दूसरो सम्बन्धि । यतहु=यहां भी । अधिक=आकर । अनाइत=अन्यत्र । यतहु...
मोरी=यदि तुम्हारे निकट से व्यमुक्त जाऊंगो तो दूसरो जगह मेरो आस न पूजगौ ।
परक आस=दूसरे की आसरा है ।

✽ सुबुधि सेआनि सुंदरि घर गेलि । क्रिय रे विधाता
लिखि मोहि देलि ॥ वर अनुमानि घर पैसल धाय । सूति
रहल पहु दीप बराय ॥ नींद परत सखि कयतुक भेला ।
दुहु कर पहु के खेलौना भेला ॥ अनहि विद्यापति तखनक
रीति । जेहन विरह रहे तेहन पिरिति ॥१२॥

खेलौना=पयोधर रूपी खेलौना ।

✽ से दिन सुदिन सम पावल रे, प्रसन भेलह ब्रजराज ।

सगुन नैन मोहि फरकै रे, आयल पहु के समाद ॥
 आनँद हृदय पुलित भेला रे, दिनदोष दूरहि गेल ।
 अनेक दिवस हरि पाहुन रे, जन्म कृतारथ भेल ॥
 सेज भरि फूल समारलि रे, बासलि कपुर तमोल ।
 भाव भरम नहिं राखथि रे, बाजथि वचन अमोल ॥
 प्रेमहार प्रभु बान्हथि रे, कोसल करथि विचार ।
 पल भरि पास न छाड़थि रे, राखथि हृदय मँभार ॥
 कवि विद्यापति गावल रे, सुनु समुखि सयानि ।
 जाहि धनि एत गुन सजनी रे, ताहि भँखथि भगवान ॥१३॥

पुलित = पुलकित । दिन दोष = दोषित दिन, बुरा दिन । पाहुन = विदेशी,
 विदेश में रहता था । अनेक...भेल = बहुत दिनों से माधव विदेश में रहते थे आज
 मेरा जन्म सुफल हुआ कि वह घर फिर आये । तमोल = ताम्रफल, पान । प्रेम&c. =
 प्रेमवन्धन में बन्धनी बांधते हैं । भँखथि = सिचाते हैं ।

कि कहव रे सखि आनँद ओर । चिर दिन माधव
 मन्दिर मोर ॥ पाप सुधाकर जत दुख देला । पिय मुख
 दरसन तत सुख भेला ॥ आँचर भरि यदि महानिधि पाव ।
 तब हम पिय दुरदेस न पठाव ॥ सीतक ओढ़नि ग्रीष्मक
 वायु । वरषक छल पिय दुर जनि जाउ ॥ भन विद्यापति
 सुन बरनारि । मुजनक दुःख दिवस दुइ चार ॥ १४ ॥

चिर दिन = बहुत दिन बाद मेरे घर आये । पाप = पापी । छत्र = छाता ।

दारुन रितुपति जत दुख देला । हरिमुख हेरइत सब दुर
 गेला ॥ जतहुँ अछिल मम हृदयक साध । सो सब पूरल
 पिय परसाद ॥ रभस अलिंगन पुलकित भेला । अधरक पान
 विरह दुर गेला ॥ चिर दिन विहि आज पूरल आस । हेर-

इत नयन नहीं अवकास ॥ भन विद्यापति अब नहीं आधि ।
समुचित औखध नहीं रह व्याधि ॥ १५ ॥

दूर गेला = दूर हुआ । अकिल = था । अवकास = फुराएत । आधि = मनः पीड़ा ।

चिर दिन सो बिधि भेल अनुकूल । पुन पुन हेरइत
दुहुँ आकूल ॥ बाहु पसारिय दुहुँ दुहुँ धरे । दुहुँ अधरामृत
दुहुँ मुख भरे ॥ दुहुँ तनु कांपय मदन बचन । किङ्किनि रोल
जुड़ावत मन ॥ विद्यापति कवि कि कहव आर । जेहन प्रेम
दुहुँ तेहन विहार ॥ १६ ॥

मदन बचन = काम विषयक बातें से । रोल = शब्द ।

दुहुन दुलह दुहुँ दरसन भेला । विरह जनित दुख सब दुर
गेला ॥ कर धरि बैठल चित्रित आसन । रमय रतन साम
तरुनिरतन ॥ बहु विधि बिलसय बहु बिधि रंग । कमल
मधुप जिमि पाबल संग ॥ नयन नयन दुहुँ नयन बयान ।
दुहुँ गुन दुहुँ गुन दुहुँ जन गान ॥ भन विद्यापति नागरि
गोर । त्रिभुवन बिजई नागर चोर ॥ १७ ॥

दुहुन = दोनों को । दुलह = दुर्लभ । गान = गान करते हैं ।

मुँदित नयन हिय भुज युग चांप । सूत रहत हरि कलु
न अलाप ॥ परसंग कहलहिं नामहिं तोर । खालेय
आंखि लखे मुख मोर ॥ सुन्दरि इथ नहीं करु अब छन्द ।
तोहे अनुरत भेला स्यामलचन्द ॥ जोइ नयन भँग सहे न
अनंग । सोइ नयन बहे लोर तरंग ॥ जोइ अधर सदा मधु
रिम हांस । सोइ निरस भेला दिरघ निसास ॥ विद्यापति कवि
सत यह भाखि । राजा सिवसिंह यहि कर साखि ॥ १८ ॥

इथ = इतना । अनुरत = अनुरक्त । स्यामलचन्द = शोक्लण । जोड़ नयन &c. = जिस को भ्रूमङ्गो को मदन भी सख्य नहीं कर सकता या अर्थात् जो भ्रूमङ्गो मदन का भी सब चूर्ण करती थी ।

बृक्षलु हम हरि बहुत अकार । हिय मोर धस धस तुहु
से गोआर ॥ धिरे धिरे रमह टुटय जनि हार । चोरि रभस
नहिं कर परचार ॥ नहिं देहु कुच पर नखरेख घात । कइसे
नुकायव कालि प्रभात ॥ न करु विघातन अधर दसन ।
लाज भय दुहु नहिं तुअ मत्त थान ॥ नहिं धरु केस न करु
ढिठपन । अलपे अलप करह निधुवन ॥ तोहे सोंपलि तनु
जनमक मत । अलर समाधन आजु अभिमत्त ॥ नागरि
सुन कह कवि कंठहार । विंधल कुसुमसर नहिं से विचार ॥१६॥

बृक्षलु = ब्रह्मभक्त्या । अकार = प्रकार । कालि &c. = कलह प्रभात समय । न कर विघातन = कोटो मत । कवि कंठहार = विद्यापति जो कवि-कुल-भूषण हैं । विंधल &c. = जिसे कामसर लगता है उस को विचार नहीं रहता ।

हरि धरु हार चेहुकि पर राधा । आध माधव कर गिम
रहु आधा ॥ कपट कोप धनि दिठि धरु फेरि । हरि हँसि
रहल वदनाविधु हेरी ॥ मधुरिम हांस गुपुत नहिं भेला ।
तखने सुमुखि मुख चुम्बन देला ॥ कर धरु कुच आकुलि
भेलि नारी । निरखि अधर मधु पिवय मुरारी ॥ चिकुर चमर
भर कुसुमक धारा । पिवि कहूँ तम जनु वम नवतारा ॥
विद्यापति कह सुन्दर बानी । हरि हाँसे मिललि राधिका
रानी ॥२०॥

धरु = पकड़ा । चेहुकि पर = चिहुक उठी । धरु फेरो = फेर धर लिया । वदन विधु = चन्द्रानन । गुपुत नहिं भेला = छिपा न रहा । कर धरु कुच = कुच पर हाथ धरते । वम = वमन करता है । पिवि &c. = चात हुआ मानो अम्यकार कहीं तारों को निगल कर फिर उन्हें वमन कर रहा है ।

महेश सम्बन्धी कविता ।

घर घर भरमि जनम नित तिनिका केहन विवाह ।
 से अब करव गौरी वर ई होय कतय निवाह ॥
 कतय भवन कत आंगन बाप कतय कत माय ।
 कतहुँ ठौर नहिं ठहर केकर एहन जमाय ॥
 कोन कयल यह असुजन केओ न हिनक परिवार ।
 कयल जो हिनक निबंधन धुक धिक से पजिआर ॥
 कुल परिवार एको नहिं परिजन भूत बताल ।
 देखि देखि भुर होये तन सहे के हृदयक साल ॥
 विद्यापति कह सुन्दरि धरहु मन अवगाह ।
 जे अछि जनिक विवाही तिनिका सेह पै नाह ॥ १ ॥

पर...विवाह = जो आजन्म दूसरे के घर भ्रमण करता है उसे कौन बरेगा ।
 ठौर &c. = ठहरने की जगह नहीं है । असुजन = असुजन । असुजन पत्र = मिथिला
 में विवाह स्थिर होते समय जो पत्र पंजिआर लिख कर देते हैं कि उभय पार्श्वों
 में कोई सम्बन्ध नहीं है विवाह हो सकता है उसे "असुजनपत्र" कहते हैं । पंजि-
 आर = जिस के पास पांजी अर्थात् वंशवृक्ष रहता है ।

आगे माई एहन उमत घर लै ल, हिमगिरि देखि देखि
 लगइछ रंग । एहन उमत घर घोड़वो न चढ़इक, जो
 घोड़ रँग रँग जंग ॥ बाघक छाल जे बसह पत्तानल, साँपक
 भीरल तंग । डिमिक डिमिक जे डमरू बजाइन, खटर खटर
 करु अँग ॥ भकर भकर जे भाँग भकोस थि, छटर पटर करु
 गाल । जानन सौं अनुराग न थकइन, भसम चढ़ावधि भाल ॥
 भूत पिसाच अनेक दल साजल, सिर सौं बाहि गेलि गंग ।

भनहि विद्यापति सुन ए मनाइनि, थिकाह दिगंबर अंग ॥२॥

उमत = उन्मत्त, बौड़ाहा। लेल = लेआयल, ले आया। हिमगिरि = हिमालय।
रंग &c. = नाना प्रकार का। जंग = साज। पलानल = बिकाया, चारजामा बनाया।
भोरल = बांधा। तंग = रखी वा चमड़ा जिस से जौन कसा जाता है। अनुराग न =
प्रीत नहीं है। मनाइनि = मयना, पार्वती की माता। थिकाह = हैं।

घेरि घेरि अरे सिव सों तोंय बोलों, फिरसि करिअ मन
माय। विन संक रहह भिखिय मांगिय पै, गुन गौरव दुर
जाय ॥ निरधन जन बोलि सब उपहासय, नहीं आदर
अनुकम्पा। तो हैं सिव आक धतुर फुल पावल, हरि पावल
फुल चम्पा ॥ खटंग काटि हर हर जे बनाविअ, त्रिसुल
तोड़िअ करु फार। बसहा धुरन्धर हर लय जोतिअ, पायट
सुरसरिधार ॥ भन विद्यापति सुनह महेसर, इ लागि करालि
तुअ सेवा। एतये जे वर से वर होअल, उतये जायव
जनि देवा ॥ ३ ॥

माय = मैं। फिरसि &c. = मन में रख कर फिरते हो अर्थात् सुनते हो किन्तु
तदनुसार कार्य नहीं करते हो। पै = निश्चय। आक = अर्क, एकवन। खटंग =
खट्वाङ्ग। खटिया की पाटी, जो कि श्री महादेव जी का एक शस्त्र है। “मङ्गोचः
खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्मफणिनः” इति महिम्नः। हर = हल। फार = जो लोहा हल
में लगा रहता है। पायट = पटावो। एतये = इधर ही। उतये = उधर, भिन्ना करने।

⊗ कै लाख कै लाख जुग बिति गेला। जानि न बएस
कतेक दिन भेला ॥ बिधि लागि बिधी कयल यक मन्दा।
कै ठाम बान्हि धरव यक चन्दा ॥ धन में धन एक बसहा
सार। से बेचने नहीं गमन हमार ॥ भनहि विद्यापति सुनु
हे भवानी। यह उमती थिक त्रिभुवन दानी ॥ ४ ॥

बान्हि = बंधिन्। सार = अच्छा। गमन = गुगारा, वा = आना जाना।

❁ हम नहिं आजु रहव यहि आंगन, जो बुढ़ होयत जमाइ गे माई । एक त बइरि भेला वीधि बिधाता, दोसरे धिआ कर बाप । तीसरे बइरि भेला नारद बाभन, जे बुढ़ आनल जमाइ गे माई ॥ पहिलुक बाजन डामरु तोरव, दोसरे तोरव रुँडमाला । बरद हांकि बरिआत बेलाइव, धिआ ले जाइव पराइ गे माई ॥ धोती लोटा पतरा पोथी, एहो सभ लेवन्हि छिनाय । जौं किलु बजता नारद बाभन, दाढ़ी धै धिसिआइव गे माई ॥ भन विद्यापति सुनु हे मनाइनि, दृढ़ करु अपन गेआन । सुभ सुभ कैश्री गौरि विआहू, गौरी हर इक सम गे माई ॥ ५ ॥

पहिलुक = पहले । बेलाइव = छदेड़ दूंगो । लेवन्हि छिनाय = छीन लूंगो । बजता = तकरार करेंगे ।

❁ नाहिं करब बर हर निरमोहिया । बिता भरि बसन न तन पर तिनिका, बधछल कांख तर रहिया ॥ बन बन फिराधि मसान जगावधि, घर आंगन ऊ बनौलन्हि कहिया । सासु ससुर नहिं ननद जेठौनी जाय बैठति धिआ केकरा ठहियां ॥ बूढ़ बरद ढकढोल गोल एक संपति भांगक भोरिया । भनहिं विद्यापति सुन हे मनाइनि, सिव सन दानि जगत के कहिया ॥ ६ ॥

तिनिका = उज के । बनौलन्हि = बनाया । कहिया = कब । के = कौन ।

❁ कतए गेला मोर बुढ़वा जती । पीसल भांग रहल सेइ गती ॥ आन दिन निकही रहथ मोर पती । आज लगाइ देल कौन उदमती ॥ एकसर जोहय जायब कौन गती ।

ठेसि खसवि मोरि होत दुरंगती ॥ नन्दन बन बिच मिलल
महेस । गौरि हर्षित भेलि छुटल कलेस ॥ भनहिं विद्यापति
सुनु हे सती । इहो जोगिया थिक त्रिभुवनपती ॥ ७ ॥

सेइ गती = उसी प्रकार । उदमतौ = खड़ी, उच्चाद । ठेसि &c. = गड में पेर में
ठेस (टोकर) लगने से गिर जाऊंगी ।

काहे उमतला हे तैलोकनाथ । नित उधारि नित
भसमक साथ ॥ पाट पटम्बर धरु उतारि । बाधछला नित
पहिरु सारि ॥ तुरअ त्यागि चहु बसहा पीठ । लाज मरिअ
जो हेरिअ दीठ ॥ भन विद्यापति सुन हे गौरी । हर नहिं
उमता तुहही भोरी ॥ ८ ॥

उधारि = लंगे । सारि = बसन । तुरअ = तुरङ्ग, घोड़ा । भोरी = अन्नानी ।

* जोगिया एक हम देखलेंगे माई । अनहद रूप
कहतो नहिं जाई ॥ पंचवदन तिन नयन बिसाला । बसन
बिहुन ओढ़न बघछाला ॥ सिर बहे गंग तिलक सोभै
चन्दा । देखि सरूप मेटल दुखदंदा ॥ जाहि जोगिया लै
रहलि भवानी । मन आनलि बर कौन गुन जानी ॥ कुल
नहिं सिज नहिं तात महतारी । बएस दिनक थिक लखु जुग
चारी ॥ भन विद्यापति सुनु ए मनाइनी । एहो जोगिया
थिक त्रिभुवनदानी ॥ ९ ॥

वदन = मुख । बिहुन = बिछीन । लखु = लख ।

* हम सन हे सखि रुसल महेस । गौरि बिकल मन
करथि उदेस ॥ तन आभरन बसन भेला भार । नयन बहे
जल सुरसरिधार ॥ पुछइछि पंथुक जन हम तोहि । यहि पथ

देखल दिगंबर जोगि ॥ कवि विद्यापति यह पद भान । सिव
जु प्रगट भेला गौरिक ध्यान ॥ १० ॥

पंथुक = पंथिक । दिगंबर &c = दिगम्बर, नंगा जोगी ।

* जिव परल अदिन कि ; सिव सिव !! घर सौं बहर
भेल सिव के समाज । पथ सँ फिरत होयत बड़ लाज ;
सिव सिव !! पथ बड़ पिच्छर पाथर पानी । धयल सरन
सिव संकर जानी ; सिव सिव !! चहुँ दिस घन रव बोलय
सिआर । एक दिस जोगिनि करय सँचार ; सिव सिव !!
भन विद्यापति सुनु ए महेस । अपन सेवक के मिटिय
कलेस ; सिव सिव !! ११ ॥

अदिन = कुदिन । जिव &c. = जीव कष्ट में पड़ा है । पिच्छर = विकली ।

* सिव हो उत्तरब पार कवने विधि ।

लोढ़व कुसुम लोढ़व बैलपात । पुजब सदासिव गौरि के
सात ॥ बसहा चढ़ल सिव फिरायि मसान । भंगिया जठर
दरदो नहिं जान ॥ जप तप नहिं कैलहु नित दान । बित
गेला तिन पन करइत आन ॥ भन विद्यापति सुनु हे महेस ।
निरधन जानि के हरहु कलेस ॥ १२ ॥

सात = साथ । भंगिया &c. = भांग पी कर उन्मत्त । आन = अपर कर्म, संसारी
काम ।

* जखन देखल हर हो गुन निधी । पुरल सकल मनो-
रथ सब विधी ॥ बसहा चढ़ल हर हो बुढ़ जती । काने
कुँडल सोभे गज मोती ॥ बैसल महादेव चौका चढ़ी । जटा
छिरिआओल माउल भरी ॥ विधि करु विधि करु विधि करु

विधि करू । विधि न करै से हर होइ ठ बरू ॥ विधिए करते
हर हो घुमि खँसु । संसरि खसल फनि श्रीगौरी हँसु ॥ केओ
जनि किलु कहइन्हि दिन कहूँ । पुरविल लिखल छिला हम
कहूँ ॥ कवि विद्यापति गावल । गौरि उचित वर पावल ॥१३॥

किरिआवोल = किराया, फेलाया । माउल = मौलि, सिर । भरी = भरपूर ।
विधि &c. = हे विधाता ऐसा कर । विधि न &c. = विधाता न करै कि शिव जी ठ
करें । अथवा लोग बराबर कह रहे हैं कि विवाह विधि कीजिय, परन्तु श्री महादेव
जी विधि नहीं करते ठ क्रिये बैठे हैं । विधिए &c. = विधाता की कृपा से वा विधि
हो करतै महादेव तंद्रा के वशीभूत हुए । केओ = कोई । दिन कहूँ = इन को ।

* देखल दिगम्बर पुरल मनोरथ, दुरि गेला हर हे
पापकलेस । जटा दुहु दिसि विभुति भुजंगम ससि सोभय
हे तिलक विसेस ॥ आक धतुर फुल श्रीफल लुवधल हर
पूजा हे कर मन लाय । झारिखंड बसथि निकुँज बन
बसथि परिजन संग हैं भुत बयताल ॥ आछत चानन अवर
गंगाजल बेलपात तोरि चढ़ाव भोलनाथ । भन विद्यापति
मोहि भोलानाथ गति दिअ वर हर हे अपनहि हाथ ॥१४॥

* हर जनि विसरब मोर ममिता । हम नर अधम
परम पतिता ॥ तुअ सन अधम उधारन दोसर, हम सन
जगत नहीं पतिता ॥ जम का द्वार जवाब कवन देव, जखन
बुझत निज गुन कर बतिया । जब जम किंकर कोपि उठा-
इब, तखन के होत धरहेरिया ॥ भन विद्यापति सुकवि
पुनित मति, संकर विपरित बानी । असरनसरन चरन सिर
नावत, दया करु दिअ सुलपानी ॥ १५ ॥

मोर ममिता = जिस पर मेरी ममता है, जिस पर मैं भरोसा करता हूँ । गुन
&c. = मैंने संसार में क्या सुकर्म किया । किंकर = दूत । कोपि = दंड । धरहेरिया =
बचाने वाला । सुलपानी = शूलपाणि, श्री महादेव ।

* एत जप तप हम किअ लागि कैलहुँ, कथिला कएलि
नित दान । हमरि धिया के एहो वर होएता, अब नहि रहत

परान ॥ हर के माथ बाप नहिं थिकइन, नहिं छैन सोदर
 भाय । मोर धिया जों सासुर जैती, बैठति ककर लग
 जाय ॥ घास काट लैती बसहा चरैती, कुटती भांग धतूर ।
 एको पल गौरा बैसहु न पैती, रहती ठाढ़ि हजूर ॥ भन
 विद्यापति सुनु ए मनाइनि, दृढ करु अपन गेआन । तीनि
 लोक के एहो छथि ठाकुर, गौरा देवी जान ॥ १६ ॥

एत = इतना । कथिला किस लिये । धिया = बेटी । सोदर = सहोदर ।

❖ कखन हरब दुख मोर, हे भोलानाथ ।

दुख ही जनम भेला दुख ही गमाइब ,

सुख सपनहु नहिं भेला, हे भोलानाथ ॥

आछत चानन अवर गंगाजल ,

बेलपात तोहि देव, हे भोलानाथ ॥

यहि भवसागर थाह कतहुँ नहिं ,

भैरव धरु कर आए, हे भोलानाथ ॥

भन विद्यापति मोर भोलानाथ गति ,

देहु अभय बर मोहि, हे भोलानाथ ॥ १७ ॥

❖ कतेक दिन हेरब सिव रउरि बाट ?

बेलपत्र तोरि हम धैलुं चुन चुन ।

भाग विरिछि सिव लागि गेला घुन ॥

कासि मों खोजलु अरु आस पास ।

उहउँ सुनलुं सिव गेला कइलास ॥

भन विद्यापति सुन ए महेस ।

संकट काटिए मेटिए कलेस ॥ १८ ॥

चुन चुन = चुन चुन कर, साज कर । उहउँ = वहाँ भी ।

❖ यहि विधि व्याहन आयो. ऐहन बाउर जोगी ।

टपर टपर के बसहा आयल खटर खटर रुंडमाल ॥

भकर २ सिव भांग भकोसथि डमरु लेले करलाय ।
 ऐपन मेंटल पुरंहर फोरल वर किमि चौमुख दीप ॥
 पिया लै मनाइनि मंडप बैसलि गावो जनि सखि गीत ।
 भन विद्यापति सुनु ए मनाइनि एहो थिक त्रिभुवन ईस ॥१६॥

पुरंहर = कलस । वर किमि = कैसे जले । थिक = हैं । यह गीत तुलसी विद्वांन
 वा भमित्रक कन्द (Blank verse) का अच्छा नमूना है ।

⊗ आजु नाथ यक वर्त्त माहिं सुख लागत हे ।
 तोहे सिव धरि नट बेष कि डमरु बजायव हे ॥
 भल न कहल गउरा रउरा आजु सुनाचव हे ।
 सदा सोच मोहि होत कवन विधि वांचव हे ॥
 जे जे सोच मोहि होत कहा समुझाएव हे ।
 रउरा जगत के नाथ कवन सोच लागव हे ॥
 नाग ससरि भुमि खसत पुहमि लोटायत हे ।
 गनपत पोसल मजूर सेहो धरि खायत हे ॥
 अमिय चुई भुमि खसत बघम्बर जागत हे ।
 होत बघम्बर बाघ बसह धरि खायत हे ॥
 टूटि खसत रुदराछ मसान जगावत हे ।
 गौरी कह दुख होत विदापति गावत हे ॥ २० ॥

भल न कहल &c. = गौरी ने श्री शिव जी को नाचने के लिये कह कर आज
 अच्छा नहीं किया । पुहमि = पृथ्वी में । बघम्बर जागत = बघम्बर सजीव हो कर
 बाघ हो जायगा । बसह = बसहा देल ।

⊗ अगे माई ! जोगिया मोर जगत सुखदायक, दुख
 ककरो नहिं देल ; दुख ककरो नहिं देल महादेव, दुख
 ककरो नहिं देल । यहि जोगिया के भाँग भुलैलक धतुर
 खोआइ धन लेल ॥ अगे माई ! कार्तिक गनपति दुइजन
 बालक जग भरि के नहिं जान । तिन कहँ अभरन किलुओ
 न थिकइन रति यक सोन नहिं कान ॥ अगे माई ! सोन

रूप अनका सुत अभरन आपन रुद्रक माल ॥ अपना सुत
ला किछिओ न जुरइनि अनका ला जंजाल । अगे माई !
छन मैं हेरथि कोटि धन बकसिथि ताहि देवा नहिं थोर । भन
विद्यापति सुनु ए मनाइनि, थिका दिगम्बर भोर ॥ २१ ॥

ककरो = किसी को । खोआइ = खिन्ना कर । थिकइन = है । ला = के लिये ।
जुरइनि = जुरता है, मिलता है ।

ॐ जों हम जनितहुँ भोला भेला ठकना, होइतहुँ रामगु-
लाम, गे माई । भाई विभीखन बड़ तप कैलन्हि जपलन्ह
रामक नाम, गे माई । पूरव पच्छिम एको नहिं गेला अचल
भेला यहि ठाम, गे माई ॥ बीस भुजा दस माथ चढ़ौलीं
भांग देलीं भर गाल, गे माई । ऊंच नीच सिव किछु नहिं
गुनलन्हि, हरषि देलन्ह रुँडमाल, गे माई ॥ एक लाख पूत
सवा लाख नाती कोटि सोवरनक दान, गे माई । गुन अव-
गुन सिव एको न बुझलन्हि रखलन्हि रावनक नाम, गे
माई ॥ भन विद्यापति सुकवि पुनित मति करजोरि विनश्रों
महेस, गे माई । गुन अवगुन हर मन नहिं आनथि अपन
सेवक के हरथि कलेस, गे माई ॥ २२ ॥

ठकना = ठगना, ठगने वाला । पूरव = पूर्व । रुँड = रुद्राक्ष । आनथि = लाते हैं ।

ॐ भला हरि भला हर भला तोहि काला । खगपति
बसन ओढ़न बघछाला ॥ खन पंचानन खन भुजवारी ।
खन सिवसंकर देव मुरारी ॥ खन विंदावन चरावथि गाय ।
खन भिखि मांगथि डमरु वजाय ॥ खन जमुनातट लेथि
महदान । खन भरिखंडम धरथि धेआन ॥ भनहि विद्या-
पति सुनहु महेस । निर्धन जानि के हरहु कलेस ॥ २३ ॥

काला = कला, खेल । खन & c. = कभी तुम श्रीकृष्ण का रूप धारण कर नाना
प्रकार की लीला करते हो और कभी भोकर रूप से भुवन में बिचरते हो ।

❁ जोगि भँगवा खाइत भेला रँगिआ, भोला बौड़लवा ।
सब के ओढ़ावे भोला साल दोसलवा आप ओढ़ेला मृग
छलवा ॥ सब के खिलावे भोला पर पकवनवा आपे खाले
भांग अवर धतुरवा । कोई चढ़ावे भोला अच्छत चानन,
कोई चढ़ावे बेलपतवा ॥ योगिन भूतिम सिव के संघतिया,
भैरो बजावै मृदांगिया । भन विद्यापति जै जै संकर, पारवती
रौरि सँगिया ॥ २४ ॥

बौड़लवा = उन्मत्त । अवर = और ।

कतहु समसधर कतहु पयोधर भल वर मिलल सुसोभे ।
अधंग धड़लि धाड़ न गुनलि गिरा गुरु, गौरि कवन गुन लोभे
गंगा लागि हम गिरिजा मनौलिह काहे देवि बोलह मन्दा
चरन नमित फनि मनिमय भूषन घर खिसिआयल चन्दा ॥
भन विद्यापति सुनह तिलोचन पदपंकज मोरि सेवा ।
चन्दल-देइ-पति वैद्यनाथ गति नलिकंठ हर दवो ॥ २५ ॥

समस = समस्त, अर्थात् संसार मात्र । समसधर = त्रिशूल, क्योंकि कहा जाता
है कि श्री शिव जी ने अपने त्रिशूल पर संसार को धारण किया है । कतहु &c =
कहां तो त्रिशूलधारी महावलवान श्री शंकर जी और कहां अबला नव योवना श्री
पार्वती जी । मिलल = मेल; जोड़ी । भल &c. = भली जोड़ी शोभा दे रही है ।
अधंग = आधा अङ्ग, अधाङ्गि । अधंग &c. = दौड़ कर अधाङ्गिनी होने पर राजी
हुई । न गुनलि = नहीं पर्याप्त किया । गुरु = गुरु जनों की । लोभे = लालच से ।
गंगा &c. = गंगा के लिये मैं ने गिरिजा को मनाया अर्थात् मान भंग कराया तात्पर्य
यह है कि श्री गंगा जी को देख कर गौरी क्रुध हो गयी थी, सो मुझे उन्हें मनाना
पड़ा । नमित = गिर गया । चन्दल = चंडिका ।

शान्त रस ।

❁ रे नरनाह सतत भजु ताही । ताहि, नहिं जननि
जनक नहिं जाहि ॥ बसु नइहरा ससुरा के नांव । जननिक
सिर चढ़ि गेलि वहि गांव ॥ सासुरा कोर में सुतल जमाय ।

समधि बिलह तौ बिलहल जाय ॥ जाहि ओदर से बाहर
भेलि । से पुनि पलटि ततय चलि गेलि । भन विद्यापति सुकवी
भान । कवि के कवि कहि कवि पहचान ॥ १ ॥

नरनाह = राजा । सतत = सर्वदा । ताहि...जाहि = श्रीसीता । जननि = पृथ्वी ।
सासुका &c. = पृथ्वी पर श्री रामचन्द्र जी सोये । जाहि...गेलि = जिस भूगर्भ से
श्री सीता जी का जन्म हुआ अन्त में वह उसी में समा गयी । कवि के &c. = कवि की
कविता को कवि ही समझता है ।

यतन जतेक धन पाप बँटायनु मेली पीरजन खाय ।
मरनक बेरि हेरि कोइ नहिं पूछइ करम संग चलि जाय ॥

ए हरि बन्धु तुये पद नाय ।

तुअ पद परिहरि पापपयोनिधि पारक कवन उपाय ॥
यावत जनम नहिं तुअ पद सेविनु युवती मति मय मेलि ।
अमृत तेजिय किय हलाहल पियनु सम्पद विपदहि भेलि ॥
भन विद्यापति नेहू मन गुनि कहिल कि जानि होय काज ।
सांभक बेरि सेवकाई मांगई हेरइत तुअ पद लाज ॥ २ ॥

यतन = यत्नपूर्वक । पाप &c. = पाप से भाग्य लिया अर्थात् पाप कर के संग्रह
किया । मेलि = मिलजुल कर । हेरि = फिरकर । तुये = तुम्हारा । नाय = नाव । मति
= मोती । मय = में । युवती &c. = रमणी और अर्थ की चिन्ता में लीन होकर । नेह
&c. = मन में समझ लो । कहिल &c. = कहने से कदाचित् काज होजाय । सांभक
बेरि = संध्या समय, अन्तकाल । सांभक &c. = अन्तकाल में सेवा क्यों कर मांगि
चरण कमल को देखते तो लज्जा आती है ।

छेदलुँ चम्पक पनस रसाल । रोपलुँ सेमर रेंड मँदार ॥
गुनवाति परिहरि कुयुवाति संग । हार हिरन छाड़ि रांगहि रंग ॥
कि कहव रे सखि पामर बोल । पाथर भासल तज गेलि सोल ॥
पंडित गुनिजन दुःख अपार । आछ मरम सुख परम गँवार ॥
विद्यापति कह बिहि अनुबंध । गनहु गुनीजन मन रह धंध ॥ ३ ॥

रांगहि &c. = रांगा ही के रंग पर मोहित हैं । पामर = नीच, बुरा । पाथर &c.

= पत्थर उतरा गया और सँटी नीचे गयी, डूब गयी। आछ= है। मरम सुख =
आन्तरिक सुख। अनुबंध=प्रबन्ध। गनइ &c. = गुणी लोग मन में विचारकर सम्यक्
में पड़े रहते हैं।

तातल सैकत बारि बुन्द सम सुत मित रमानि समाज ।
तोहे विसारि मन ताहि समर्पिनु अब मोहि हव कोन काज ॥

माधव ! हम परिनाम निरास ।

तुहु जगतारन दीन-दया-मय अंतय तोहरि विसयास ॥
आध जनम हम नींद गवायनु जरा सिसुकत दिन गेला ।
निधुवन रमनी रस रँग मातनु तोहे भजव कोन वेला ॥
कत चतुरानन मरि मरि जायत न तुअ आदि अवसाना ।
तोहे जनमि पुन तोहे समायत सागर लहरि समाना ॥
भन विद्यापति सेख समन भय तुअ विनु गति नहिं आर ।
आदि अनादिक नाथ कहायथि तारन भार तोहार ॥ ४ ॥

तातल &c. = पुत्र, मित्र और नारीगन उत्तम बालुकामय भूमि पर बारिबुन्द
वत् अर्थात् क्षणस्थायी हैं। विसारि = विसारकर, भूलकर। समर्पिनु = समर्पण किया।
अंतय = अन्त में; अथवा अन्तरात्मा में। विसयास = विश्वास, भरोसा। जरा = बुढ़ापा।
निधुवन = कामविलास; भोग। अवसान = अन्त। तोहे समायत = तुम्हीं में विलीन
होंगे। समन = शमन; जीवों को पुण्यापुण्य (भले बुरे) का फल देने से दण्ड
देने द्वारा यमराज। कहायथि = कहछाते हो।

माधव ! बहुत मिनति करि तोय ।

देइ तुलसि तिल देह समर्पिनु दया जनि छाड़ि मोय ॥
गनइत दोख गुन लेस न पायबि जब तुहुँ करबि विचार ।
तुहुँ जगत जगनाथ कहायसि जग बाहिर न इ छार ॥
किय मानुष पसु पाखी जे जनमिय अथवा कीट पतङ्ग ।
करम विपाक गतागत पुन पुन मति रहु तुअ परसङ्ग ॥
भन विद्यापति अतिही कातर तरइत इह भवसिन्धु ।
तुअ पदपल्लव करि अवलम्बन तिलयक देहु दिनबन्धु ॥ ५ ॥

देह ... समर्पितु = तिल और तुलसी ले कर अपने देह को समर्पण करता हूँ।
 दया &c. = सुभक्त पर दया न छाड़िये ; दया बनी रहे । गनइत ... विचार = यदि
 विचार के समय आप मेरे दोषों की गणना करने लगेंगे तो गुण का सुभक्त में लेग-
 मात्र भी न पावेंगे। छार = रोख, अपदार्थ । इ छार = यह दीन कवि । तुहं ... छार =
 तुम्हें संसारमात्र जगन्नाथ कहता है तो मैं जगत के बाहर नहीं हूँ अतएव तुम मेरे भी
 नाथ हो। करमविपाक = कर्म के फल का परिणाम (पकना) जाति । गतागत =
 आवागमन । मति &c. = तुम्हारे प्रसंग में जिस में मति रहे । तरइत = प्रार होने के
 किये । तुष ... बन्धु = दीनबन्धु तुम्हारे पदपङ्क्तव का अवलम्बन करता हूँ, सुभक्त तिल-
 मात्र त्याग दो ।

श्री गंगास्तुति ।

कत सुखसार पाओल तुअ तीरे ।
 छाड़इत निकट नयन बह नीरे ॥
 कर जोड़ि विनमओ विमलतरंगे ।
 पुनु दरसन होअ पुनमति गंगे ॥
 एक अपराध छमब मोर जानी ।
 पाये परसल मातु तुअ पानी ॥
 कि करव जप तप जोग धेआन ।
 जनम कृतारथ एकहिं सनान ॥
 भन विद्यापति समदओ तोही ।
 अन्तकाल जनु विसरह मोही ॥ १ ॥

तीरे = तीर पर । निकट = तुम्हारे तट को । पुनमति = पुण्यवति । जानी = समझ
 कार । एकहिं सनान = एक ही बार स्नान करने से । समदओ = सम्बोधन करता हूँ,
 विनती करता हूँ । अन्तकाल = मरते समय । जनु = जनि, नहीं ।

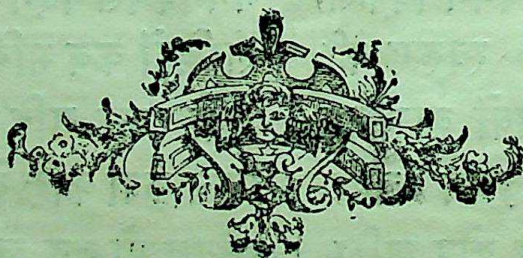
अन्तिम वन्दना ।

राधामाधव चरन युग, सुखद कृपावल पाय ।
 विद्यापतिकृत पदन को, अर्थ भयो सुखदाय ॥ १ ॥
 केलि-कलारस पद सबै, प्रकट भये या माहि ।
 गुप्तप्रेम को मंत्र ये, या मों संसय नाहि ॥ २ ॥
 रसिकन हित संग्रह भयो, “मैथिलकोकिल” आज ।
 श्ररसिक हूँदो दोष नहिं, कृपा करें ब्रजराज ॥ ३ ॥
 राधास्याम सरोजपद, विनवों बारम्बार ।
 ब्रजवल्लभ की लाज अब, राखहु हे सरकार ॥ ४ ॥
 बंदों पितुपद जुग जलज, हरन सकल भव सोग ।
 प्रकट देव सांचो हरत, घोर अविद्यारोग ॥ ५ ॥
 प्रियतम प्रेमाधार तुम, प्रेमदेव हे मीत ।
 मन मेरो सांचो पगे, खरी पावनी प्रीत ॥ ६ ॥
 स्वामिनि मङ्गलमूल तुम, सुन्दरता की खान ।
 बसो हमारो उर सदा, दास आपनो जान ॥ ७ ॥
 लोचन दरसन विन विकल, मन चंचल दिन रैन ।
 भांकी युगल स्वरूप की, लाखिहों कब भरि नैन ॥ ८ ॥
 स्वामिनि विनवों बार बहु, मेरो कर गहि लेहु ।
 है अनाथ डूबन चहों, सरन कृपा करि देहु ॥ ९ ॥
 आपन औगुन दोष लखि, आवत मो मन लाज ।
 निज दिस निरखि अनाथ पै, रीझहु हे ब्रजराज ॥ १० ॥

प्यारे दीजै कृपा करि, पदपंकज मों. प्रेम ।
 विकट प्रेमरस को सहज, निबहे जा सों नेम ॥ ११ ॥
 व्याकुल जल विनु मीन जिमि, दरसन प्यासे नयन ।
 बिरहिन सम रोवें सदा, तुहि लागि करुनाअयन ॥ १२ ॥
 प्राननाथ ! प्रानेश्वर ! प्रानाधिक ! प्रानेस !
 स्वामिनि सहित सरोजपद, विनवों बार असेस ॥ १३ ॥

ग्रंथसम्पादक परिचय ।

आरा जिला सुहावनो, अखतियारपुर धाम ।
 ब्रजनन्दन मम नाम है, ब्रजबल्लभ उपनाम ॥ १४ ॥
 सुत शिवनन्दन सुकवि को, करों वकालत काम ।
 मैथिलपद संग्रह कियो, "मैथिलकोकिल" नाम ॥ १५ ॥
 तत्व शास्त्र ग्रह चन्द्र वर, सम्बत विक्रम राय ।
 अगहन सुदी सुपंचमी, माधव भये सहाय ॥ १६ ॥
 "मैथिलकोकिल" ग्रंथ की, रचना भई अनूप ।
 पढ़िहैं भूल सुधार कै, जे रसिकन के भूप ॥ १७ ॥
 परम मनौहर रस भरे, विद्यापतिकृत गीत ।
 पढ़े सुने गावे गुने, बढै स्यामपद प्रीत ॥ १८ ॥



EDITED BY

BRAJA NANDAN SAHAY.

PUBLISHED BY

M. P. SABHA ARRAH, UNDER THE KIND PATRONAGE OF
THE DIRECTOR OF PUBLIC INSTRUCTION, BENGAL.

मैथिलकोकिल,

विद्यापति ।

महामहोपाध्याय श्री विद्यापति ठाकुर
की

जीवनी तथा टिप्पणी सहित कविता ।

अखतियारपुर (ज़िला आरा) निवासी, नागरी हितैषिणी
पत्रिका सम्पादक

बाबू ब्रजनन्दन सहाय (ब्रजवल्लभ),
वकील, द्वारा संकलित और सम्पादित

श्री युत डाइरेक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन् बंगाल
के आज्ञानुसार
नागरी प्रचारिणी सभा, आरा
द्वारा प्रकाशित ।



पटना—खड़गविलास प्रेस—वांकीपुर ।

बाबू चण्डीप्रसाद सिंह द्वारा मुद्रित ।

विक्रमाब्द १८६५ ।

प्रथमवार १००१ ।

हरिविन्द २५ ।

[मूल्य १०]

१. निपादसि

निपादसि नाम धर्मस्य प्रथमः प्रमाणम् ।
निपादसि नाम धर्मस्य प्रथमः प्रमाणम् ।
निपादसि नाम धर्मस्य प्रथमः प्रमाणम् ।
निपादसि नाम धर्मस्य प्रथमः प्रमाणम् ।
निपादसि नाम धर्मस्य प्रथमः प्रमाणम् ।
निपादसि नाम धर्मस्य प्रथमः प्रमाणम् ।
निपादसि नाम धर्मस्य प्रथमः प्रमाणम् ।
निपादसि नाम धर्मस्य प्रथमः प्रमाणम् ।
निपादसि नाम धर्मस्य प्रथमः प्रमाणम् ।
निपादसि नाम धर्मस्य प्रथमः प्रमाणम् ।

समर्पण ।

प्यारे कृष्ण ! मेरे कृष्ण ! मेरे नयनों के तारे !

आज इस “मैथिलकोकिल” अर्थात् “विद्यापति” को तुम्हें समर्पण करता हूँ । वैष्णव-कवि-चूड़ामणि श्री विद्यापति ठाकुर को तो तुम अपना ही चुके हो, आज उन्हीं के नाते इसे भी अंगीकार करना । इस में श्रीमती के रूप, गुण, प्रेम तथा लीला का वर्णन है । इस हेतु यह तुम्हें अवश्य ही रुचिकर होगा, क्योंकि जिस का सम्बन्ध श्रीमती प्रिया जी से है वह तुम्हें निस्सन्देह विशेष प्रिय है । तुम्हारी स्वीकृति से मैं अपने को धन्य मानूंगा । प्यारे ! इस पुस्तक के साथ आज अपने को भी तुम्हारे कमनीय चरणकमलों में समर्पित करता हूँ । यदि मेरी ओर और मेरे अपराधों की ओर देखो तो निस्तार ही कहाँ ? अपनी उदारता से इसे और इसी के द्वारा मुझे भी अपना कर इस दीन को कृतार्थ करो । प्यारे ! इस पतित की सुधि ले कर इस तुच्छ जीवन को सार्थक करो । प्रेमप्रदीप प्रज्वलित कर मेरे मोहतमाच्छादित हृदय को देदीप्यमान करो । मेरे ऊसर हृदयस्थल को विरहजात-अश्रु-वारि से सींच कर उस में प्रेमबीज अंकुरित करो । मुझे सौभाग्य दो कि तुम्हारा पवित्र गुण सदा गाया करूँ और गा गा कर तुम्हें सर्वदा रिभाया करूँ । यदि तुम्हें सौभाग्यवश कहीं देख पाऊँ तो अपना सब वृत्तान्त स्पष्ट कह सुनाऊँ । कभी युगल स्वरूप के दर्शन का भी सुख दोगे ? क्या यह कोई बड़ी बात है ? मेरे लिये हो, किन्तु तुम्हारी दया के आगे क्या है ? क्षमासिन्धु ! ढिठाई क्षमा करना । अधिक क्या कहूँ ? आज मकरसंक्रान्ति है । आज के दिन लोग तुम्हें तिल का लड्डू भोग धरते हैं और तिल ही दान करते हैं । बस मैं भी “दौ तुलसी तिल देह समपौ, दया न छाड़व मोय ।”

तुम्हारा

ब्रजवल्लभ ।

INTRODUCTION

Vidyapati, the earliest and the greatest Maithil poet, needs no introduction; he is like the sun, which shines of itself and needs no illumination from other planets. Vidyapati is a poet of sterling merit. In sweetness and melody his songs are unsurpassed, and he can be rightly called the Hindi nightingale.

Vidyapati lived and sang some three hundred years ago. His lyrics are marked by high literary excellence and extraordinary religious fervour at the same time, which have given them a permanent value and won for them a lasting admiration. The literary merit of his songs is alone sufficient to secure him a place in the front rank of poets. But their peculiar charm consists in their religious tone. They educate and elevate the mind, and purify and ennoble the soul at once. They have evoked the highest religious enthusiasm and kindled the greatest spiritual fervour among successive generations of Hindus. No less a personage than Sri Chaitanya was enraptured by them.

Vidyapati's poetry is one long dissertation on the sublime Philosophy of Divine Love as taught by Lord Krishna: God is love, and Love is God; Love rules the world; Love is the true religion of the world. The one Universal Lord in His infinite pity and love for his creatures appeared in the flesh and took two Forms, the one loving intensely, nay, burning in love for the other, in order to teach the world how we, who are but emanations from Him and a part of Him, ought to love Him, to be anxious for Him, to long to return to Him, and be re-united to Him. Though two in form, Radha

and Krishna are one and the same being. It is a self-evident truth. It needs no argument, no demonstration. The teaching of the ancient sages that remembering the one is remembering the other makes it sufficiently clear. How grand ! How sublime ! How charming ! To put the whole Vaishnava philosophy in a nutshell :—

“ जेहि उरसर राधाकमल, फूलि रह्यो बहु भाय ।

मोहनभँवरा रैन दिन, रहै तहां मइराय ॥

“ *In the pool of the heart, where the lotus, Radha, blossoms in full splendour and beauty, there the bee Krishna, keeps hovering about, day and night.* ” Such a beatitude can only be realised, description must ever fall short of it.

Vidyapati's songs abundantly prove him a great and glorious devotee, whose soul is in constant communion with the Universal Soul, the *Upasya Deva* as we call Him. They unfold the *Bhakta*, who has completely lost himself in the love of the Lord and has attained to the height of Super-consciousness, when one realises God, establishes a close relation between his own soul and the Lord, and communes face to face with Him. His songs are only the expressions of his deep love (*Prema*), and they transport the readers on the wings of poesy to the region of spiritual blessedness, the abode of supreme felicity, the natural home which men, tempted by the world, the flesh and the devil, so often forget.

Vidyapati thus furnishes us with an example of how we can love the Lord, lose our very selves in love for Him and ultimately merge our individual consciousness in the Universal consciousness. What Fox said of Burke's Speech on conciliation may be well said of these songs : we ought to read Vidyapati by day, meditate upon them by night, peruse them again and again, study, imprint them on our minds, and impress them upon our hearts. And if we do this we shall, by Lord's grace, be rewarded amply with the vision of God and the attainment of self-realisation and Love of the Lord.

Vidyapati's fame as a writer rests on yet another basis. He lived at a period when all eminent writers wrote poems in Sanskrit. He himself was a great Sanskrit scholar, and could compose poems in that language with great ease and facility. But he chose to use as the vehicle of his thought his own dear language (Maithil)—a language which had not yet attained to any high development or excellence. His genius raised the dialect, once and for ever, to the highest rank among literary tongues. His immortal poems conferred immortality on the language in which they were enshrined. No charge of indelicacy can be brought against these sublime lyrics, which are to us, as Dr. Grierson justly says, what the Song of Solomon is to the Christians, and which are sung on the most sacred occasions by devout Hindus with the deepest religious fervour. Those who approach the study of Vidyapati must bear in mind that he was a true lover of the Lord and that his songs were only the expressions of that love, a passion which assumes the same form and speech, whether its object is a mortal or a deity. An earthly lover's feelings are always intense, and his expressions glowing. How fervid and glowing the expressions of Divine Love must be is a matter only of realisation and not of description.

Vidyapati's songs, though written in a popular dialect, are sometimes rather obscure, partly because their themes are sublime and beyond the range of the average intellect, and also because their ideas are the ideas of a learned Sanskrit scholar.

To bring Vidyapati's poetry within the easy reach of the public an annotated edition of it is indispensably necessary. Fortunately for us, the Arrah Nagri Pracharini Sabha which takes a keen lively interest in the advancement of the Hindi Bhasha, secured a grant of Rs. 200/- from the Director of Public Instruction, Bengal, for bringing out an annotated edition of Vidyapati's Songs, for which many thanks are due to him, independent of which aid this edition would not have at all appeared.

The pleasant task of editing Vidyapati's songs was entrusted by the Sabha to the well-known Hindi writer Babu Braj Nandan Sahai, Pleader, Arrah, the worthy son of a worthy father, Munshi Shivanandan Sahai Saheb, a prolific and distinguished Hindi writer. He has already made a mark in diverse fields of Hindi Literature—drama, novel and poetry; and his popularity may be judged from some of his works having gone into a third edition within a few years.

This is the first time that Vidyapati is introduced to the public with a pure scholarly and annotated text and to Babu Braj Nandan Sahai is due the credit of supplying a long-felt want.

His notes are sufficiently lucid and are all that can be desired. They may not satisfy every body; but as a matter of course, when a writer edits a work, he always has in view the educated section of the community. Those that venture to approach Vidyapati must possess at least some knowledge of Hindi. It is earnestly hoped that the public will appreciate and benefit by this edition. It is a book fit to be prescribed for the higher courses of study in Hindi, such as, for the B. A. examinations and the higher examinations in Hindi Training schools. The editor has also added a short life of Vidyapati, which is sure to interest the reader deeply.

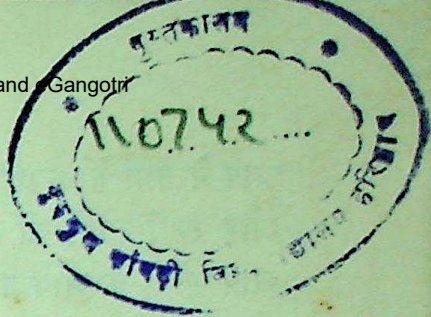
With due deference to previous workers in the same field, I must say that this edition is perfectly free from the distortions to which the songs have been subjected in the course of ages in Bengal.

The purpose of this edition will be more than fully served, if it kindles the least spark of devotion, or draws the tiniest tear-drop of *Bhakti* from the reader.

Babubazar
Arrah
25-1-09.

}

Brajendra Prasad, M. A., B. L.,
Pleader.



भूमिका ।

प्रिय पाठकवृन्द !

आज अत्यन्त हर्ष का विषय है कि मुझे कवि-कुल-भूषण श्री विद्यापति ठाकुर की सरल, सरस, मधुर तथा मनोहर कविता आप लोगों के सम्मुख उपस्थित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । यद्यपि डाक्टर ग्रियर्सन महोदय ने ६५ भजनों को अंग्रेजी अनुवाद के साथ एशियाटिक सोसाइटी जर्नल में प्रकाशित कराया था पर वह सर्वसाधारण को मिल न सका । इसलिये यह कहना अनुचित न होगा कि ऐसे उत्तम भाषा कवि की कविता से हिन्दीभण्डार अभी तक शून्य ही था । आज इस का प्रथम हिन्दीसंस्करण निकाल कर “आरा नागरी प्रचारिणी सभा” हिन्दीप्रेमियों के एक ऋण से ऊर्ध्व हुई । यों अब इस की देखादेखी कोई विद्यानुरागी नूतन संस्करण भले ही प्रकाशित करें परन्तु हिन्दी-रासिकों से विद्यापति का प्रथम परिचय कराने का गौरव हिन्दीसाहित्य के इतिहास में इसी सभा को और सभा के द्वारा मुझे को प्राप्त होगा । इस के हेतु मैं ईश्वर को असंख्य धन्यवाद देता हूँ ।

स० १९०३ और १९०४ ई० में जब मैं कार्यवश प्रायः निज रवशुरालय सूरी (जिला वीरभूमि) तथा कलकत्ता में जाकर रहा करता था तो वहाँ सर्वसाधारण के मुंह से विद्यापति की कविता सदा सुना करता था । बंगालियों के मुंह से भी सुनने पर उन गीतों में मुझे हिन्दी की गन्ध अधिक मिलती थी । अतएव मेरा ध्यान इस ओर झुका । अन्वेषण से ज्ञात हुआ कि श्री विद्यापति ठाकुर हिन्दी कविता के गौरव बढ़ानेवाले मैथिलकवि हैं और बंगालियों ने अपने यहां ले जा कर इन की कायापलट कर दी है । तब मैंने ना० प्र० सभा आरा के सुयोग्य कर्मचारी और सिक्रेटरी पं० सकलनारायण पाण्डेय काव्यतीर्थ तथा व्याकरणतीर्थ और अपने मुहूर्द मित्र जिला आरा हरीपुरनिवासी बाबू कृष्णजी सहाय से इस विषय की चर्चा की । उपर्युक्त पाण्डित महाशय हिन्दी के कैसे प्रेमी हैं यह बात मेरे पाठकों से छिपी नहीं है ।

आप ने तथा मेरे प्यारे कृष्ण ने मेरे उत्साह को बढ़ाना आरम्भ किया और उन्हीं लोगों की उत्तेजना का यह फल है कि आज मैं यह पुस्तक आप लोगों के आगे उपस्थित करता हूँ। एवम् उन्हीं लोगों के अनुरोध से मैं ने इस का पूर्ण स्वत्व उपर्युक्त सभा को दे दिया और आशा करता हूँ कि यदि हिन्दीरसिकों की सहायता हुई तो इस के द्वारा सभा को लाभ भी पहुँचेगा।

विद्यापति के गीतों को संग्रह करने में मुझे जिन जिन महाशयों से सहायता मिली है उन का मैं विशेष बाधित हूँ। बहुत से गीतें मुझे श्री विद्यापति ठाकुर के वंशज श्री विन्ध्यनाथ ठाकुर से बाबू गोकर्णसिंह के उद्योग से जिला मुजफ्फरपुर गँगायनिवासी बाबू कुलदीप सिंह और लखनपुरनिवासी बाबू डोमन ठाकुर के द्वारा प्राप्त हुये हैं। अतएव इस संग्रह में बहुतेरे पद्य ऐसे हैं जो अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुये हैं। उन गीतों के आदि में ऐसा (*) चिन्ह कर दिया गया है। उपर्युक्त महाशय से प्राप्त कवि की वंशावली भी इस पुस्तक में हमलोग प्रकाशित करते हैं।

इस पुस्तक के मुद्रित और प्रकाशित करने में हम लोगों को श्री मान् विद्यारसिक सुयोग्य डाइरेक्टर आफ् पब्लिक इन्स्ट्रक्शन बंगाल (Director of Public Instruction, Bengal) से आर्थिक सहायता मिली है जिस के लिये हमलोग डाइरेक्टर साहिब बहादुर के बड़े अनुगृहीत हैं। पुस्तक वृहत् होने के कारण खण्ड २ करके प्रकाशित करना उत्तम समझा गया। अतएव यह खण्ड आज कविताप्रेमियों के सामने उपस्थित किया जाता है। इस खण्ड में चार सौ से कुछ अधिक गीतें हैं। हमलोगों के पास और जो गीतें हैं उन का जाँच हमलोग मैथिल हस्तलिपि तथा वहाँ के विज्ञ लोगों से कर रहे हैं। जाँच में ठीक ठहरने पर हमलोग बहुत शीघ्र इस का दूसरा खण्ड भी प्रकाशित करेंगे। विद्यापतिकृत जो गीत मिथिला की स्त्रियों में प्रचलित हैं उन का भी संग्रह करने का उद्योग हमलोग कर रहे हैं। और इस खण्ड में भी कईएक वैसे गीत दिये गये हैं।

विद्यापति के अनेक संस्करण बंगभाषा में हैं, किन्तु हयलोगों के पाठ एवम् अर्थ में अनेक स्थानों में उन से तथा श्रीमान् प्रियर्सन साहिब के संस्करण से बहुत कुछ प्रभेद है। अन्यस्थानीय होने के कारण बहुत से हिन्दी पद्यों तथा शब्दों के उच्चारण एवम् अर्थ समझने में उन महाशयों को कठिनता हो गयी है। अतएव उन लोगों ने उन्हें अपने ढंग से लिख डाला है। हिन्दीछन्दों से पूर्ण परिचय नहीं रहने के कारण उन संस्करणों के गीतों में कहीं कहीं छन्ददोष भी रह गया है। उन संस्करणों में जो विद्यापति की कविता छपी हैं उन में कितनी उपर्युक्त कवि की नहीं प्रतीत होती हैं। उन्हें ध्यान दे कर पाठ करने से पाठक आप ही समझ सकते हैं। मैंने यथासाध्य इन छुट्टियों के सुधारने तथा इन दोषों से बचने की चेष्टा की है। सफलता कहाँ तक हुई है इसे तो विज्ञवाचक स्वयम् ही समझ लेंगे।

सभा की राय है कि वह मैथिलभाषा का एक व्याकरण और कोष तैयार करे। यदि यथेष्ट सामग्री हस्तगत हुई तो यह काम भी यथासमय किया जायगा जिस से आगे लोगों को विद्यापति के समझने में निस्सन्देह सुविधा होगी।

जिन महोदयों की पुस्तकों, लेखों तथा पत्रों से मुझे कवि की जीवनी लिखने में सहायता मिली है और जिन महानुभावों ने इस कार्य में मुझे सहायता दी है उन के निकट मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। जीवनी की सामग्री तथा पद्यों के संग्रह करने के लिये मेरे कितने हित मित्रों को कई बार मिथिलाप्रदेश के भिन्न भिन्न स्थानों में भ्रमण करना पड़ा है। जो जीवनी इस पुस्तक में दी गयी है वह किस परिश्रम तथा सावधानी से लिखी गयी है इस का परिचय जीवनी आपही देगी।

जीवनी में कहीं “पद्य” और कहीं ‘पद’ का व्यवहार हुआ है। इस का कारण यह है कि संस्कृतभाषा में ‘पद्य’ को छन्द के अर्थ में व्यवहार करते हैं, चाहे यह वर्णमात्रा पर बना हो चाहे तालसुर पर नियत हो, और हिन्दी में ‘पद’ गीत के अर्थ में बोला जाता है। किन्तु

इस 'पद' शब्द का मूल 'पद्य' ही है। इसी बात के दिखलाने के लिये लिखते समय उपर्युक्त दोनों शब्दों का व्यवहार हुआ है !

गीतों की टिप्पणी कहीं शब्दार्थ और कहीं भावार्थ के अनुसार की गई है, जिस में गीतों का अर्थ स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाय और स्थान भी कम लगे। इस में सन्देह नहीं कि इतनी टिप्पणी देने पर भी गूढ़ और कठिन होने के कारण, बहुत से गीतों के समझने के लिये पाठकों को कुछ विशेष ध्यान देना पड़ेगा। इस का कारण यह है कि यदि मैं इस से अधिक अर्थ देता तो पुस्तक का आकार बहुत बढ़ जाता। जिन शब्दों का अर्थ पहले के गीतों की टिप्पणी में दिया जा चुका है उन का अर्थ मैंने पीछे के गीतों में फिर नहीं दिया है। किन्तु यथासाध्य मैंने ऐसी चेष्टा की है कि जिस में सब गीतों का अर्थ पाठकों को सुगमता से हृदयंगम हो जाय। बंगाली भाइयों ने अपने संस्करण में सरल से सरल हिन्दी शब्दों का भी अर्थ दिया है। किन्तु नित्य के व्यवहार के कारण हमलोग उन्हें सहज में समझ लेते हैं अतएव उन पर टिप्पणी नहीं दी गयी है।

विद्यापति के गीतों की प्रशंसा में मैं अधिक क्या लिखूँ। गीतों को देख कर एवम् जीवनी को पढ़ कर पाठक आप ही प्रत्यक्ष समझ लेंगे कि वे कैसे हैं। आज कल प्राचीन कविता से लोगों की अरुचि निस्सन्देह बढ़ती जाती है। किन्तु पाठकों को इस बात पर अवश्य ध्यान देना चाहिये कि यदि हम लोग अपने को जानना चाहें, यदि हमलोग अपना गौरव बढ़ाना चाहें, यदि हमलोग अपने पूर्वजों की भर्यादा तथा कीर्ति की रक्षा चाहें और यदि दूसरों को यह जताना चाहें कि हमलोग कैसे बिज्ञों के वंशज हैं तो हमलोगों को उन लोगों की रची हुई पुस्तकों और कविताओं का आदर करना नितान्त आवश्यक है। उन लोगों ने अपना अमूल्य समय हाथ में लेखनी लिये इसी आशा से व्यतीत किया और अपने परिश्रम को परिश्रम न समझा कि उन के वंशज उन की रचना से लाभ उठावेंगे। यदि हमलोग उन की कीर्ति की रक्षा न करें तो हम लोग अपिभ्रष्ट से कदापि उद्धार नहीं हो सकते। मुझे पूर्ण आशा है कि

अन्त न तु
के प्रेमियों, रासिकों तथा हारण
गीतों के समझने में मेरी टिप्पणी से कुछ भास
परिश्रम को सफल समझूंगा ।

मिथिलावासी हिन्दीरासिक कविताप्रेमी सज्जनों से यह विनय कर मैं यह
भूमिका समाप्त करता हूं कि यदि वे इस में कुछ त्रुटि पावें तो अनुग्रह कर
मुझे सूचित करेंगे । और इस के अतिरिक्त जो कुछ पद जिस के पास हो
कृपा कर उसे भेज कर मुझे कृतार्थ करेंगे ।

बाबू बाज़ार, आरा
माघ बदी सप्तमी
संवत् १९६५.

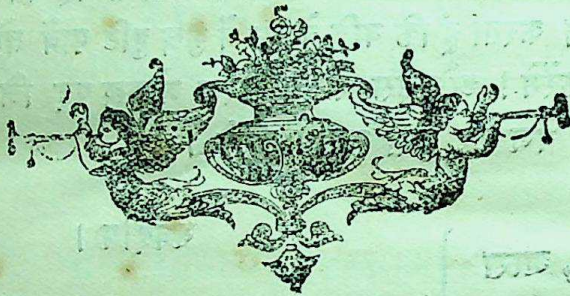
भवदीय ।

ब्रजनन्दन सहाय ।

(ब्रजवल्लभ)

इस 'पद' शब्द का मूल 'पद्य' ही है। इसी बात के दिखलाने के लिये लिखते समय उपर्युक्त दोनों शब्दों का व्यवहार हुआ है !

गीतों की टिप्पणी कहीं शब्दार्थ और कहीं भावार्थ के अनुसार की गई है, जिस में गीतों का अर्थ स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाय और स्थान भी कम लगे। इस में सन्देह नहीं कि इतनी टिप्पणी देने पर भी गूढ़ और कठिन होने के कारण, बहुत से गीतों के समझने के लिये पाठकों को कुछ विशेष ध्यान देना पड़ेगा। इस में है कि यदि मैं इस से अधिक अर्थ देता तो -
जाता। जिन शब्दों का -
चका है



है। अनुदा

इसे पढ़कर गीता के अ

इस का आवरणपत्र टेढ़े मेढ़े शब्दों से भर

स्वरमय शब्दों से शून्य होना चाहिये क्योंकि प्रायः साधारण

पुस्तक के विषय और भाषा का अनुमान करते हैं, वे भटक सकते हैं। आ

है कि गीता प्रेमी इसे पढ़ कर आनन्दित होंगे।

रामदिव्यस्त्रोत्रम् (श्री सीताराम शरण भाषा टीकाकारक-श्रीगुरुराम जी पुस्तकालय—गोंडा, अवध) भाषा टीका सहित यह पुस्तक वालमीकि मुनि का बनाया हुआ है। स्त्रोता ब्रह्मा जी हैं, स्तव्य श्री रामचन्द्र जी हैं। टीका अच्छी हुई है।

अरविन्दमहिमा—(पं० महादेवभट्ट बहियापुर—प्रयाग) मूल्य ६)।

यह पुस्तक प्रसिद्ध राजनैतिक श्रियुत अरविन्द की जीवनी तथा वक्तृता से भूषित है। भाषा अच्छी है। विषय के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। क्योंकि उस का सम्बन्ध राजनैति से है। पत्रिका में राजनैतिक आलोचना नहीं होती।

नाममाला—(श्री गुरुरामजी पुस्तकालय—गोंडा, अवध) यह पुस्तक एक प्रकार का छन्दोवद्ध कोष है। यह छोटे २ लड़कों को कण्ठस्थ करने के योग्य है। मूल्य टाइटल पेज पर लिखा नहीं है।

अङ्गुत्तरहस्य—(मूल्य २॥), मिलने का पता—मैनेजर नागरीभवन पुस्तकालय, जयपुर)। यह उपन्यास जीवनों के ढंग पर लिखा गया है। भाषा इस को बिलकुल उर्दू है; पर नागरी अक्षरों में छपे रहने के कारण हिन्दी

इस 'पद' शब्द का मूल 'पद्य' ही है। इसी बात के दिखलाने के लिये लिखते समय उपर्युक्त दोनों शब्दों का व्यवहार हुआ है !

गीतों की टिप्पणी कहीं शब्दार्थ और कहीं भावार्थ के अनुसार की गई है, जिस में गीतों का अर्थ स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाय और स्थान भी कम लगे। इस में सन्देह नहीं कि इतनी टिप्पणी देने पर भी गूढ़ और कठिन होने के कारण, बहुत से गीतों के समझने के लिये पाठकों को कुछ विशेष ध्यान देना पड़ेगा। इस में

है कि यदि मैं इस से अधिक अर्थ देता तो -
जाता। जिन शब्दों का - ६। लेख बड़े २ विद्वानों के इस में

भारतबन्धु -- (मैनेजर, काटनस्ट्रीट, कलकत्ता। मूल्य १)

इस का मूल्य सब पत्रों को अपेक्षा सस्ता है। समाचार और लेख समयोपयोगी होते हैं। प्रकाशक इसे अधिक उन्नत बनाना चाहते हैं।

भारत -- (मैनेजर, बम्बई, मूल्य, २।) यह पत्र साप्ताहिक है। इस की तस्वीरें बहुत अच्छी होती हैं। यह हिन्दी पत्रों के मंगल के योग्य है।

हिन्दी की वर्तमान दशा।

हिन्दीभाषा की उन्नति दिनों दिन हो रही है। वीरभारत, भारत बन्धु, मारवाड़ीबन्धु, भारत, यादवेन्द्र, तिर्हुत समाचार, मिथिलासिंह तथा मारवाड़ी आदि अनेक पत्र नव प्रकाशित हुए हैं।

भारतवासो, हिन्दीस्थान, प्रयागसमाचार, नरसिंह, हिन्दीकेसरी और हिन्दीप्रदोष आदि बन्द हो गये।

काशी की सभा "कोष" तथा आरा की सभा "व्याकरण" तैयार करवा रही है।

छाहौर में नागरी प्रचारिणी सभा स्थापित हुई है। सिसनी में एक पुस्तक प्रालय खुला है।

इन्डियन प्रेस को पुस्तकमाला समयोपयोगिनो हो रही है। आरा की सभा वैज्ञानिक पुस्तकें लिखवा रही है। भारतमित्र प्रेस से "खसो और खो"।

वह हिन्दी

भारतके प्रसिद्ध नगरों में
बैचते हैं। हिन्दीपत्रों के अध्यापकों को अपना
अवसर हाथ लगा है।

इन दिनों कईएक अंगरेज़ हिन्दी सीख रहे हैं। उन के द्वारा हिन्दी की
भलाई होने की पूरी सम्भावना है।

भारतनिवासी छात्रों ने जापान में भी एक हिन्दी पुस्तकालय स्थापित
किया है। यह बड़े हर्ष की बात है।

पाठकों को यह बात सर्वदा स्मरण रखना चाहिये कि जब तक वे अपनी
मातृभाषा की उन्नति न करेंगे तब तक वे किसी प्रकार अपनी कोई उन्नति
नहीं कर सकते। जैसे जिह्वा के लरखराने पर सारा अंग शिथिल पड़जाता है
उसी भांति निज भाषा की अवनति होने पर सांसारिक और पारलौकिक
सब काम बिगड़ जाते हैं। सब कुछ जान ही कर आपने क्या किया यदि
आप को अपने घर की सुधि न रहो। अतएव आप लोगों से यही प्रार्थना है
कि जैसे बन पड़े आप लोग दीन हिन्दी की ओर ध्यान देकर अपने कर्तव्य
को पालन करें।

इस 'पद' शब्द का मूल 'पद्य' ही है। इसी बात के दिखलाने के लिये लिखते समय उपर्युक्त दोनों शब्दों का व्यवहार हुआ है !

गीतों की टिप्पणी कहीं शब्दार्थ और कहीं भावार्थ के अनुसार की गई है, जिस में गीतों का अर्थ स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाय और स्थान भी कम लगे। इस में सन्देह नहीं कि इतनी टिप्पणी देने पर भी गूढ़ और कठिन होने के कारण, बहुत से गीतों के समझने के लिये पाठकों को कुछ विशेष ध्यान देना पड़ेगा। इस में है कि यदि मैं इस से अधिक अर्थ देता तो -

जाता। जिन शब्दों का -

सह की जीवनी ...

८ बाबू राधाकृष्णदास की जीवनी ...

१० पण्डित बलदेवप्रसाद की जीवनी ...

११ पेडलर साहब की जीवनी ...

१२ श्री तारकेश्वर यशोगान ...

१३ सिद्धनाथ कुसुमाञ्जलि ...

१४ अपराजिता उपन्यास ...

१५ आरा पुरातत्त्व ...

१६ कलवार की उत्पत्ति (समालोचना) ...

१७ राजेन्द्रमालती उपन्यास ...

१८ अद्भुत प्रायश्चित्त उपन्यास ...

१९ विचित्रसंग्रह काव्य ...

मिलने का पता--

मंत्री—नागरी प्रचारिणी सभा

आरा।

